# जलवायू परिवर्तन के दौर में वैज्ञानिक तकनीक से मिलेट्स की खेती किसानों के लिए खोलेगी समृद्धी के द्वार

**पूसा (एसएनबी)।** डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविधालय स्थित पोषक अनाज मूल्य श्रृंखला उत्कृष्टता केंद्र के सभागार में श्री अन्न फसलों के उत्पादन एवं प्रसंस्करण विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ हुआ। जिसकी अध्यक्षता करते हुए शश्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ एसके चौधरी ने कहा कि अप्रत्याशित जलवायु परिवर्तन के दौर में प्रतिकूल पारिस्थितिकी के बावजूद वैज्ञानिकी विधि से मिलेट्स की खेती किसानों के लिए समृद्धि के द्वार खोल सकती है। इसकेलिए मिलेट्स एवं इसके उत्पादों के मूल्य संवर्धन की जरूरत है। इस अवसर पर सर्वप्रथम अतिथियों के स्वागत एवं उद्घाटन की औपचारिकता के बाद विषय प्रवेश कराते हुए परियोजना के मुख्य अन्वेषिका डॉ स्वेता मिश्रा ने कहा कि बिहार सरकार के चतुर्थ कृषि रोडमैप के अंतर्गत मिलेट्स के विभिन्न फसलों पर शोध किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मौसम के बदलते परिवेश में गरमा मौसम के दौरान भी मिलेट्स की खेती संभव है। चीना, कौनी एवं मरुआ की खेती फरवरी अंत से मार्च तक बुआई के लिए बेहतर समय माना गया है। इस समय में बुआई की गई मिलेट्स से बेहतर उत्पादन लेना संभव है। कम पानी एवं नगण्य रासायनिक खाद के प्रयोग से मिलेट्स का बेहतर उत्पादन लेकर किसान अपनी आय में समृद्धि ला सकते है। डॉ चौधरी ने कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल उद्देश्य किसानों को मिल्लेट्स के बीज से विपणन तक की संपूर्ण तकनीकी जानकारी से रू-ब-रू कराना है जिससे, किसानों में मिल्लेट्स के प्रति जागरूकता बढ़े और बिहार में इनका रकबा और उत्पादन में वृद्धि हो एवं किसानों का आर्थिक सुदृढ़ीकरण संभव हो सके। इस कार्यक्रम में सिवान जिला के कुल पैंतीस (35) किसान हिस्सा ले रहे है। डॉ चौधरी ने कहा कि मिलेट्स में यांत्रिकरण, मूल्य संवर्धन, एफ.पी.ओ. के माध्यम से मूल्य श्रृंखला का निर्माण करने की जरूरत है। यह प्रशिक्षण सिर्फ अकादमिक न होकर व्यवहारिक भी होगा। जिसमें किसानों को मिल्लेट्स प्रक्षेत्र, मिल्लेट्स प्रसंस्करण इकाई, इत्यादि का भ्रमण कराया जाएगा साथ ही मिल्लेट्स के उत्पाद बनाने का प्रायोगिक गुर भी सिखाया जाएगा। कार्यक्रम का संचालन पोषक अनाज मूल्य श्रृंखला उत्कृष्टता केंद्र की सह-अन्वेषिका डॉ. ऋतम्भरा सिंह, ने किया। उक्त अवसर पर पोषक अनाज मूल्य श्रृंखला उत्कृष्टता केंद्र से सम्बद्ध सभी वैज्ञानिक, कर्मचारी, जेआरएफ /एसआरएफ यंग प्रोफेशनल्स एवं अन्य गणमान्य मौजूद थे।

वैज्ञानिकों के साथ प्रतिभागी।

Rashtriya sahara 01-03-2025

# एफपीओ मॉड्यूल में मशरूम उत्पादन तकनीक आधारित 5 दिवसीय प्रशिक्षण के समापन

**समस्तीपुर (एसएनबी)।** ऑन लाईन मार्केटिंग से मशरूम और मशरूम के उत्पादों को जोडने से मशरूम उत्पादकों को वैश्विक बाजार मिलने के साथ-साथ उनके उत्पादों को समुचित मुल्य भी मिलेगा। जिससे उनकी समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होगा। एफपीओ मॉड्युल में मशरूम उत्पादन पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण के समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए निदेशक अनुसंधान डॉ अनिल कुमार सिंह ने उक्त बातें कही। उन्होंने कहा कि मशरूम उत्पादन में बिहार पूरे देश में शीर्ष पर है। कभी सिर्फ सर्दियों में या ठंडे प्रदेशों में उगाया जाने वाला मशरूम आज बिहार के सभी जिलों में नियंत्रित परिस्थितिकी में मशरूम के सभी छह प्रभेदों की खेती हो रही है। जिससे खास कर ग्रामीण महिलाओं की स्थिति में व्यापक बदलााव आया है। श्री सिंह ने कहा कि एफपीओ के माध्यम से मशरूम एवं इसके विभिन्न उत्पादों को ऑनलाइन मार्केटिंग से जोड़ने का समय है। जिससे किसानों को कम लागत व कम समय में अपने उत्पादों केलिए विश्व स्तरीय बाजार मिल सके और उन्हें अपने उत्पाद का समुचित मुल्य मिल सके। राज्य स्तर पर मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में दर्जनभर से अधिक पंजी.त एफपीओ का संचालन किया जा रहा है। सभी एफपीओ में हजारों की संख्या में मशरूम उत्पादक जुड़े हुए है। स्वागत भाषण मशरूम केंद्र प्रभारी डॉ आरपी प्रसाद ने की। बताते चलें कि डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित एडवांस सेन्टर ऑफ मशरूम रिसर्च, में भारतीय .षि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्त पोषित अनुसूचित जाति उप परियोजना के अन्तर्गत मशरूम के मूल्यवर्धक उत्पादों द्वारा अनुसूचित जातियों का उद्यमिता विकास केलिए एफपीओ मॉड्यूल में मशरूम उत्पादन तकनीक आधारित 5 दिवसीय प्रशिक्षण प्रमाण पत्र एवं मशरूम किट वितरण के साथ संपन्न हो गया। जिसका संचालन डॉ सुधानंदनी ने तथा धन्यवाद ज्ञापन मशरूम मैन डॉ दयाराम ने किया। मौके पर एडीआर डॉ एसएन ठाकुर, सुभाष कुमार, मुन्नी, निशा आदि मौजूद थे।

प्रमाण पत्र के साथ प्रतिभागी एवं वैज्ञानिक।

***Rashtriya sahara 01-03-2025***

भास्कर 2/3/25 पेज 16

कार्यक्रम • श्री अन्न फसलों से गुणवत्तापूर्ण उत्पादों के निर्माण पर दिया जोर

# मिलेट्स के उत्पादन से बढ़ेगा रोजगार

भास्कर न्यूज़ | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्लाय पूसा स्थित पोषक अनाज मूल्य श्रृंखला उत्कृष्टता केंद्र के सभागार में श्री अन्न फसलों से गुणवत्तापूर्ण उत्पादों के निर्माण एवं समुचित बाजार सुनिश्चित करने के विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. उषा सिंह ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मौजूद प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ. उषा सिंह ने कहा कि मिलेट्स के गुणवत्तापूर्ण उत्पादों के निर्माण में समय प्रबंधन की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। श्री अन्न से जुड़े उत्पाद के निर्माण में एक एक क्षण बेशकीमती होता है।

प्रशिक्षण में मौजूद महिला किसान।

किसान सही समय पर कार्य को संपन्न कर मिलेट्स से गुणवत्तायुक्त उत्पाद बना सकते है। उन्होंने कहा कि मिलेट्स उत्पादन से लेकर बाजार करने तक खासकर ग्रामीण महिलाओं का योगदान सर्वोपरि है। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण में जिले के दलसिंहसराय एवं मुजफ्फरपुर के सकरा खंड से आए हुए कुल 30 ग्रामीण महिला किसान भाग ले रही है। इन महिला किसानों को मिलेट्स उत्पादन एवं उत्पादों के निर्माण से संबंधित सभी तकनीकों पर ज्ञानवर्धन करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि जबतक कार्य पूर्ण न हो तब तक किसानों को क्रियाशील रहने की आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा कि श्री अन्न के मूल्य संवर्धित उत्पादों को बढ़वा देने से ही बेहतर स्वास्थ्य एवं समुचित आय की कल्पना की जा सकती है। उन्होंने कहा कि देश स्तर पर लोग भर पेट तो भोजन कर ही लेते हैं परंतु खासकर बिहार राज्य में महिलाएं एवं छोटे छोटे मासूम बच्चे कुपोषण का शिकार हो रहे है। इससे निबटने के लिए भारत सरकार एवं राज्य सरकार सतत मिलेट्स की खेती को बढ़ावा देने की दिशा में प्रयत्नशील है। उन्होंने कहा कि मिलेट्स के उत्पादों के गुणवत्ता को नियंत्रित कर बेहतर बाजार में ब्रांडिंग किया जा सकता है। ग्रामीण महिलाओं के उत्थान के लिए खुद महिला ही सक्षम है। स्वागत भाषण वैज्ञानिक डा. पुष्पा सिंह ने किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण में प्रैक्टिकल ऑन स्किल डेवलपमेंट का पूर्ण रूप से उपयोग किया गया है। महिला किसानों को कुशल जानकारी के साथ सीखने पर निश्चितरूप से ज्ञानवर्धन होगा। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ऋतम्भरा सिंह ने किया। धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डा. गीतांजलि चौधरी ने की। मौके पर विवि के वैज्ञानिक, कर्मचारी, यंग प्रोफेशनल्स एवं अन्य मौजूद थे।

भास्कर 2/3/25 पेज 16

कृषि • खीरा और ककड़ी लगाने के लिए किसान उचित मात्रा में डालें खेतों में उर्वरक

# खीरा और ककड़ी की खेती के लिए समय उपयुक्त, करें तैयारी

भास्कर न्यूज़ | पूसा

## सलाह : वैज्ञानिक तकनीक से बेहतर होगा उत्पादन

बिहार के किसान मार्च के महीने में खीरा और ककड़ी की वैज्ञानिक खेती कर इससे बेहतर उत्पादन और अच्छा मुनाफा दोनों प्राप्त कर सकते है। गर्मी के सीजन में खासकर खीरा और ककड़ी की मांग मार्केट में काफी अधिक हो जाती है। जिस कारण किसानों को बाजार में इसकी कीमत काफी अच्छी मिल जाती है। ये जानकारी कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के सब्जी विज्ञान से जुड़ी कृषि विशेषज्ञ निशा कुमारी ने दी है। उन्होंने बताया कि प्रायः किसान फरवरी महीने से खीरा और ककड़ी की बुआई शुरू कर देते है जो मार्च तक चलती है। इस समय खीरा और ककड़ी की बुआई करने से ये फसलें अच्छी पैदावार देती हैं। कृषि विशेषज्ञ ने बताया कि किसान खेतों में खीरा व ककड़ी लगाने के लिए लगभग एक समान मात्रा में ही उर्वरक का प्रयोग कर सकते हैं। खीरा लगाने से पूर्व किसान सबसे पहले खेतों की अच्छी तरह से जुताई करवाएं। इसके बाद एक एकड़ खेत में किसान सौ से एक सौ बीस क्विंटल वर्मी कम्पोस्ट या सड़ी हुई गोबर की खाद, दो बोरी यूरिया इसमें से एक तिहाई खेत की अंतिम जुताई के दौरान, दूसरा एक तिहाई खीरे के पौधे में एक महीने बाद जबकि तीसरा तिहाई का हिस्सा 60 दिनों बाद पौधों में डालें। इसके अलावे एसएसपी 125 किलो, एमओपी 40 किलो और 5 किलो फ्यूरडॉन अंतिम जुताई के दौरान खेत में डालें। इसके बाद खेतों में ढाई मीटर चौड़ाई के हिसाब से बेड बनाएं। बेड पर एक से डेढ़ मीटर की दूरी पर पौधे के बीज को लगाएं।खीरा की बुआई के बाद 20 से 25 दिन बाद खेतों में निराई और गुड़ाई का काम करें। तापमान बढ़ने पर हर सप्ताह खीरे के खेत में किसान हल्की हल्की सिंचाई करते रहे।

प्लास्टिक ट्रे में लगाएं गए खीरे के छोटे पौधे।

### खीरा और ककड़ी की किस्में

खीरा की किस्म पंजाब नवीन, फैजाबादी खीरा, पंजाब खीरा, खीरी पूना, पार्किन लौंग ग्रीन, पाइन शेड के अलावे ककड़ियों की वेराइटीयों में अर्का शीतल, लखनऊ अर्ली, पंजाब लौंग मेलन 1, करनाल सलेक्शन आदि प्रमुख किस्में है। खीरा और ककड़ी के इन सभी किस्मों को किसान लगाकर बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। खीरा और ककड़ी में प्रायः एंनथ्रेकनुज बीमारी लगती है। इस बीमारी में खीरा और ककड़ी की पत्तियों पर धब्बा निकल आता है जो झुलसा जैसा प्रतीत होता है। इसके उपचार के लिए किसान मैनकोजेब या साफ नाम की दवाई का 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी के साथ तथा इसमें स्टिकर मिलाकर पौधों पर छिड़काव करें।

### ककड़ी के बीजों को 2 मीटर चौड़ी क्यारियों में नाली के किनारे लगाएं

कृषि विशेषज्ञ ने बताया कि ककड़ी की बुआई के लिए किसानों को एक एकड़ भूमि में एक किलोग्राम बीज की जरूरत होती है। ककड़ी को खासकर हर तरह की जमीन पर उगाया जा सकता है। भूमि की तैयारी के समय गोबर की खाद डालें तथा खेत की तीन से चार बार जुताई करायें। किसान ककड़ी के बीजों को 2 मीटर चौड़ी क्यारियों में नाली के किनारों पर लगाएं। पौधे से पौधे की दूरी करीब 60 सेंटीमीटर रखें।

### कब्ज, ज्वर, पीलिया व पथरी जैसी कई तरह की बीमारियों में लाभकारी है खीरा का सेवन

कृषि विशेषज्ञ ने बताया कि पूरे देश में खीरा का खासकर सलाद में एक विशेष महत्त्व है। खीरे से कई प्रकार की मिठाइयां भी बनाई जाती है। खीरा ठंड होता है इसलिए इसे प्रायः लोग औषधि के रूप में प्रयोग करते है। खीरा में अत्यधिक मात्रा में फाइबर, खनिज पदार्थों के अलावे पर्याप्त मात्रा में विटामिन बी भी मौजूद होता है। इसका सेवन कब्ज, पीलिया, प्यास, ज्वर, शरीर की जलन, गर्मी के सारे दोष, पथरी, चर्म रोग, मधुमेह आदि जैसी बीमारियों को रोकने में काफी सहायक है।

दैनिक जागरण 2/3/25 पेज 4

# श्री अन्न से बदलेगी सेहत, लोग होंगे स्वस्थ, चेहरे पर होगी चमक

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि, प्रशिक्षणार्थी और वैज्ञानिक • जागरण

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के पोशाक अनाज एवं मूल्य श्रृंखला उत्कृष्ट केंद्र के सभागार में श्री अन्न आधारित खाद्य उत्पादों का निर्माण पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का उद्घाटन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय स्थित सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. उषा सिंह ने कहा कि श्री अन्न के सेवन से लोग स्वस्थ रहेंगे एवं उनके चेहरे पर चमक रहेगी। स्वस्थ रहने के लिए पौष्टिक अहारों की जरूरत पड़ती है जो श्री अन्न में प्रचुर मात्रा में पाई जाती है। हमें स्वस्थ रहने के लिए भोजन में बदलाव की जरूरत है पहले की तुलना में अब लोग विभिन्न प्रकार के भजन करते हैं। इसके बावजूद भी स्वस्थ नहीं दिख पाते हैं। पौष्टिक अनाजों का सेवन करने की जिसमें सामा कोदो,चीन इत्यादि मोटे अनाज आते हैं। इसके उत्पादन के साथ-साथ मूल्य संवर्धन के लिए मोटे अनाज के उत्पादन के उपरांत प्रसंस्करण करना एवं इससे विभिन्न उत्पाद बनाने पर भी डॉक्टर उषा सिंह ने प्रशिक्षणार्थी को कहा। प्रशिक्षण से मिले ज्ञान को विभिन्न व्यंजन के माध्यम से मार्केट में उतर कर अपनी पहचान बनाएं। मौके पर डा. पुष्पा सिंह ने भी मोटे अनाज के संबंध में प्रशिक्षणार्थियों को बताया।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 5 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया कि उत्तर बिहार के जिलों में अगले 24 घंटे में बादल के साथ बूंदाबांदी एवं वर्षा की संभावना है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि पूर्वानुमान अवधि में अधिकतम व न्यूनतम तापमान में वृद्धि के साथ 28 से 30 डिग्री एवं न्यूनतम तापमान 18 से 22 डिग्री रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 02 मार्च | 28.0 | 14.5 |
| 03 मार्च | 29.0 | 14.5 |
| | दरभंगा | |
| 02 मार्च | 29.0 | 14.5 |
| 03 मार्च | 29.0 | 15.0 |
| | पटना | |
| 02 मार्च | 30 | 15.0 |
| 03 मार्च | 30 | 15.0 |

डिग्री सेल्सियस में

दै० जागरण 2/3/25 पृ० 5

प्रभात खबर 4.3.25 पेज 5

# मत्स्यपालन आमदनी का अच्छा स्त्रोत : डॉ रत्नेश झा

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ मात्स्यिकी महाविद्यालय के सभागार में कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेन्दु पाण्डेय के निर्देशन मत्स्यपालन एवं उत्पादों का निर्माण सहित रंगीन मछली के विषय पर आधारित तीनों प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ. अध्यक्षता करते हुए मात्स्यिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने मत्स्यपालन के लिए प्रेरित किया. प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रशिक्षणार्थी अपने तकनीकी ज्ञान को अन्य मत्स्यपालकों तक भी पहुंचाने का संकल्प दिलाया. प्रशिक्षणार्थी से आह्वान किया कि मत्स्यपालन कार्य अवश्य करें

प्रमाण-पत्र के साथ प्रतिभागी व वैज्ञानिक.

व समाज में अन्य लोगों को भी मत्स्यपालन के लिए प्रेरित करें. शस्य विज्ञान विभाग के प्राध्यापक सह जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केंद्र के निदेशक बतौर मुख्य अतिथि डॉ. रत्नेश कुमार झा ने कहा कि बिहार में मत्स्यपालन व्यवसाय का क्षेत्र बहुत ही व्यापक व आमदनी का बेहतर स्त्रोत के रूप में उभर कर सामने आया है. जलवायु परिवर्तन के दौर में किसानों को समेकित कृषि प्रणाली अपनाने की जरूरत है. जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम राज्य के सभी जिले के चयनित गांवों में किसान के खेत पर शोध किया जा रहा है. इसमें आधुनिक तकनीक एवं नवीनतम बीजों के प्रभेद की जानकारी उपलब्ध किया जा रहा है. सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की मुख्य वैज्ञानिक डॉ आरती सिन्हा एवं कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. एसके जैन ने भी प्रतिभागियों को संबोधित किया. अलग-अलग तीनों कार्यक्रम के 80 प्रशिक्षणार्थियों प्रमाण-पत्र दिया गया. मौके पर मात्स्यिकी महाविद्यालय के शिक्षक डॉ. शिवेन्द्र कुमार, डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ. सुजीत कुमार नायक, डॉ. अनिरुद्ध कुमार, डॉ. मुकेश कुमार सिंह, प्रशिक्षण संयोजिका डॉ. तनुश्री घोड़ई, प्रशिक्षण संयोजक रोशन कुमार राम, प्रशिक्षण संयोजक डॉ. प्रवेश कुमार, अधिष्ठाता के निजी सहायक डॉ. राजेश कुमार, महाविद्यालय कर्मी संजय कुमार यादव, विनोद कुमार, साजन कुमार भारती आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर 4/3/25 पेज 4

# मिलेट्स उत्पादों के निर्माण में समय प्रबंधन बेहद जरूरी : डॉ उषा सिंह

**कार्यक्रम**

- श्री अन्न फसलों से गुणवत्तापूर्ण उत्पादों का निर्माण एवं समुचित बाजार करने के विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

प्रतिनिधि, पूसा

संबोधित करते अधिष्ठाता डा उषा सिंह.

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित पोषक अनाज मूल्य श्रृंखला उत्कृष्टता केंद्र के सभागार में श्री अन्न फसलों से गुणवत्तापूर्ण उत्पादों का निर्माण एवं समुचित बाजार करने के विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा उषा सिंह ने कहा कि मिलेट्स का गुणवतापूर्ण उत्पादों के निर्माण में समय प्रबंधन का महत्वपूर्ण भूमिका है. उत्पाद के निर्माण में एक एक क्षण बेस कीमती होता है. इसे प्रबंधन कर गुणवत्तायुक्त उत्पाद बनाया जा सकता है. मिलेट्स उत्पादन से लेकर बाजार करने तक ग्रामीण महिलाओं का सर्वोपरि योगदान है. जिले के दलसिंहसराय एवं मुजफ्फरपुर के सकरा प्रखंड से आयी 30 ग्रामीण महिला किसान प्रशिक्षण के इस सत्र में भाग ले रही हैं. जिन्हें मिलेट्स उत्पादन एवं उत्पादों के निर्माण से संबंधित सभी तकनीकी ज्ञानवर्धन करने की जरूरत है. डा सिंह ने कहा कि जब तक कार्य पूर्ण न हो तब तक क्रियाशील रहने की आवश्यकता है. श्री अन्न का मूल्य संवर्धित उत्पादों को बढ़ावा देने से ही बेहतर स्वास्थ्य एवं समुचित आय की कल्पना की जा सकती है. देश स्तर पर लोग भर पेट तो भोजन कर ही लेते पर खासकर बिहार राज्य में महिलाएं एवं छोटे-छोटे मासूम बच्चे कुपोषण का शिकार हो रहे है. इससे निबटने के लिए भारत एवं राज्य सरकार सतत मिलेट्स की खेती को बढ़ावा देने की दिशा में प्रयत्नशील है. विविध प्रकार के भोजन करने की आवश्यकता है. मिलेट्स की उत्पादों के गुणवत्ता को नियंत्रित कर बेहतर बाजार में ब्रांडिंग कर सकते है. ग्रामीण महिलाओं के उत्थान के लिए खुद महिला ही सक्षम है. स्वागत भाषण वैज्ञानिक डा पुष्पा सिंह ने दिया. उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण में प्रैक्टिकल ऑन स्किल डेवलपमेंट का पूर्णरूप से उपयोग किया गया है. कुशल जांनकारी के साथ सीखने पर निश्चित रूप से ज्ञानवर्धन होगा. संचालन डॉ. ऋतम्भरा सिंह ने किया. धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डा गीतांजलि चौधरी ने दिया.

# मत्स्य पालन से समृद्धि की राह आसान : डा रत्नेश कुमार झा, मत्स्य पालन पर तीन प्रशिक्षण सम्पन्न

**समस्तीपुर/पूसा (एसएनबी)।** डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविधालय के अधीनस्थ मात्स्यिकी महाविद्यालय के सभागार में कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेन्दु पाण्डेय के निर्देशन में मत्स्यपालन एवं उत्पादों का निर्माण सहित रंगीन मछली के विषय पर आधारित तीन प्रशिक्षण सम्पन्न हो गया। जिसकी अध्यक्षता करते हुए मात्स्यिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने प्रशिक्षुओं को मत्स्यपालन के लिए प्रेरित किया और कहा कि प्रशिक्षण प्राप्त कर सभी प्रशिक्षणार्थी अपने तकनीकी ज्ञान को अन्य मत्स्य पालक बन्धुओं तक भी पहुंचाने का भी संकल्प लें तथा सभी प्रशिक्षणार्थी से आह्वान किया की मत्स्यपालन कार्य अवश्य करें व समाज में अन्य लोगों को भी मत्स्य पालन हेतु प्रेरित करें। शश्य विज्ञान विभाग के प्राध्यापक सह जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केंद्र के निदेशक बतौर मुख्य अतिथि डॉ. रत्नेश कुमार झा ने कहा कि बिहार में मत्स्यपालन व्यवसाय आय के बेहतर स्त्रोत के रूप में उभर कर सामने आया है। अप्रत्याशित जलवायु परिवर्तन के मौजूदा दौर में किसानों को समेकित कृषि प्रणाली अपनाने की जरूरत है। जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम राज्य के सभी जिले के चयनित गांवों में किसान के खेत पर शोध किया जा रहा है। जिसमें आधुनिक तकनीक एवं नवीनतम बीजों के प्रभेद की जानकारी उपलब्ध किया जा रहा है। सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की मुख्य वैज्ञानिक डॉ आरती सिन्हा एवं कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के मुख्य वैज्ञानिक डॉ.एस.के.जैन ने भी प्रतिभागियों को संबोधित किया। साथ ही विश्वविद्यालय के कुलपति के साथ-साथ राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद, तेलंगाना तथा पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, बिहार सरकार का मत्स्यपालकों के लिए उक्त तीनों प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन मात्स्यिकी महाविद्यालय में कराने के लिए आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर अलग-अलग तीनों प्रशिक्षण कार्यक्रम के कुल 80 प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र दिया गया। मौके पर सभी प्रशिक्षणार्थी के साथ मात्स्यिकी महाविद्यालय के शिक्षक डॉ. शिवेन्द्र कुमार, डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ. सुजीत कुमार नायक, डॉ. अनिरुद्ध कुमार, डॉ. मुकेश कुमार सिंह, प्रशिक्षण संयोजिका डॉ.तनुश्री घोड़ई, प्रशिक्षण संयोजक रोशन कुमार राम एवं प्रशिक्षण संयोजक डॉ. प्रवेश कुमार, अधिष्ठाता के निजी सहायक डॉ.राजेश कुमार, महाविद्यालय कर्मी संजय कुमार यादव,विनोद कुमार, साजन कुमार भारती आदि मौजूद थे।

प्रमाण पत्र के साथ प्रतिभागी एवं वैज्ञानिक।

**Rashtriya Sahara 02-03-2025**

# मिलेट्स उत्पादों के निर्माण में समय प्रबंधन महत्वपूर्ण है : डा. उषा सिंह

## श्री अन्न फसलों से गुणवत्तापूर्ण उत्पादों का निर्माण एवं समुचित बाजारीकरण पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण आरंभ

**समस्तीपुर/पूसा (एसएनबी)।** डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविधालय स्थित पोषक अनाज मूल्य श्रृंखला उत्कृष्टता केंद्र के सभागार में श्री अन्न फसलों से गुणवत्तापूर्ण उत्पादों का निर्माण एवं समुचित बाजारीकरण विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण आरंभ हुआ। जिले के दलसिंहसराय एवं मुजफ्फरपुर के सकरा प्रखंड से आए हुए 30 ग्रामीण महिला किसान प्रशिक्षण के इस सत्र में भाग ले रही है।

प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ उषा सिंह ने कहा कि मिलेट्स का गुणवतापूर्ण उत्पादों के निर्माण में समय प्रबंधन बेहद महत्वपूर्ण है। क्योंकि इस दौरान एक एक क्षण बेशकीमती होता है। समय प्रबंधन कर श्री अन्न से गुणवत्तायुक्त उत्पाद बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि मिलेट्स उत्पादन से लेकर बाजारीकरण तक ग्रामीण महिलाओं का उल्लेखनीय योगदान है। जिन्हें मिलेट्स

संबोधित करते अधिष्ठाता व प्रशिक्षु।

उत्पादन एवं उत्पादों के निर्माण से संबंधित सभी तकनीकी जानकारी से लैस करने की जरूरत है। देश स्तर पर लोग भर पेट तो भोजन कर ही लेते है परन्तु खासकर बिहार जैसे राज्य में महिलाएं एवं छोटे छोटे मासूम बच्चे कुपोषण का शिकार हो रहे है। इससे निबटने के लिए भारत सरकार एवं राज्य सरकार सतत मिलेट्स की खेती को बढ़ावा देने की दिशा में प्रयत्नशील है। डॉ सिंह ने कहा कि श्री अन्न के मूल्य संवर्धित उत्पादों को बढ़वा कर ही बेहतर स्वास्थ्य एवं समुचित आय की कल्पना की जा सकती है।

क्योंकि मिलेट्स उत्पादों के गुणवत्ता को नियंत्रित कर बेहतर बाजार में ब्रांडिंग कर बेहतर आय भी प्राप्त सकते है। इसके पुर्व स्वागत संबोधन में वैज्ञानिक डॉ पुष्पा सिंह ने कहा कि इस प्रशिक्षण में प्रैक्टिकल ऑन स्किल डेवलपमेंट का पूर्णरूप से उपयोग किया गया है।

कार्यक्रम का संचालन सह-वैज्ञानिक, पोषक अनाज मूल्य श्रृंखला उत्कृष्टता केंद्र डॉ. ऋतम्भरा सिंह, ने तथा धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ गीतांजलि चौधरी ने की। उक्त अवसर पर पोषक अनाज मूल्य श्रृंखला उत्कृष्टता केंद्र से सम्बद्ध सभी वैज्ञानिक, कर्मचारी, जेआरएफ/एसआरएफ सहित कई यंग प्रोफेशनल्स एवं अन्य गणमान्य मौजूद थे।

*Rashtriya Sahara 02-03-2025*

बोरिंग हो जाएगा। तब पानी की समस्या नहीं होगी।

राष्ट्रीय सहारा 2/5/25 पे 5

# मत्स्य पालन से समृद्धि की राह आसान : डा रत्नेश कुमार झा, मत्स्य पालन पर तीन प्रशिक्षण सम्पन्न

**समस्तीपुर/पूसा (एसएनबी)**। डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविधालय के अधीनस्थ मात्स्यिकी महाविद्यालय के सभागार में कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेन्दु पाण्डेय के निर्देशन में मत्स्यपालन एवं उत्पादों का निर्माण सहित रंगीन मछली के विषय पर आधारित तीन प्रशिक्षण सम्पन्न हो गया। जिसकी अध्यक्षता करते हुए मात्स्यिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने प्रशिक्षुओं को मत्स्यपालन के लिए प्रेरित किया और कहा कि प्रशिक्षण प्राप्त कर सभी प्रशिक्षणार्थी अपने तकनीकी ज्ञान को अन्य मत्स्य पालक बन्धुओं तक भी पहुंचाने का भी संकल्प लें तथा सभी प्रशिक्षणार्थी से आह्वान किया की मत्स्यपालन कार्य अवश्य करें व समाज में अन्य लोगों को भी मत्स्य पालन हेतु प्रेरित करें। शश्य विज्ञान विभाग के प्राध्यापक सह जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केंद्र के निदेशक बतौर मुख्य अतिथि डॉ. रत्नेश कुमार झा ने कहा कि बिहार में मत्स्यपालन व्यवसाय आय के बेहतर स्रोत के रूप में उभर कर सामने आया है। अप्रत्याशित जलवायु परिवर्तन के मौजूदा दौर में किसानों को समेकित कृषि प्रणाली अपनाने की जरूरत है। जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम राज्य के सभी जिले के चयनित गांवों में किसान के खेत पर शोध किया जा रहा है। जिसमें आधुनिक तकनीक एवं नवीनतम बीजों के प्रभेद की जानकारी उपलब्ध किया जा रहा है। सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की मुख्य वैज्ञानिक डॉ आरती सिन्हा एवं कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय के मुख्य वैज्ञानिक डॉ.एस.के.जैन ने भी प्रतिभागियों को संबोधित किया। साथ ही विश्वविद्यालय के कुलपति के साथ-साथ राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद, तेलंगाना तथा पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, बिहार सरकार का मत्स्यपालकों के लिए उक्त तीनों प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन मात्स्यिकी महाविद्यालय में कराने के लिए आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर अलग-अलग तीनों प्रशिक्षण कार्यक्रम के कुल 80 प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र दिया गया। मौके पर सभी प्रशिक्षणार्थी के साथ मात्स्यिकी महाविद्यालय के शिक्षक डॉ. शिवेन्द्र कुमार, डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ. सुजीत कुमार नायक, डॉ. अनिरुद्ध कुमार, डॉ. मुकेश कुमार सिंह, प्रशिक्षण संयोजिका डॉ.तनुश्री घोड़ई, प्रशिक्षण संयोजक रोशन कुमार राम एवं प्रशिक्षण संयोजक डॉ. प्रवेश कुमार, अधिष्ठाता के निजी सहायक डॉ.राजेश कुमार, महाविद्यालय कर्मी संजय कुमार यादव,विनोद कुमार, साजन कुमार भारती आदि मौजूद थे।

प्रमाण पत्र के साथ प्रतिभागी एवं वैज्ञानिक।

भास्कर 3/3/25 पेज 14

कार्यक्रम • मीठे पानी में सजावटी मछलियों के पालन एवं प्रजनन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन

# प्रमाण पत्र के साथ एक-एक एक्वेरियम भी दिया गया

भास्कर न्यूज़ | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ मात्स्यकी महाविद्यालय ढोली के परिसर में मछली उत्पादन में रुचि रखने वाले किसानों के लिए मीठे पानी में सजावटी मछलियों के पालन एवं प्रजनन के विषय पर चल रहा तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शनिवार देर शाम संपन्न हो गया। इस अवसर पर प्रशिक्षण के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे बीडीआई के निदेशक डॉ.एस.के जैन एवं विशिष्ट अतिथि मात्स्यकी महाविद्यालय ढोली के अधिष्ठाता डॉ. प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने संयुक्त रूप से सभी 25 प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र के साथ-साथ एक एक एक्वेरियम भी दिया। इस दौरान मुख्य अतिथि डॉ.एस.के जैन ने प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले सभी प्रशिक्षणार्थियों से कहा कि आप अपने घरों पर जाकर सजावटी मछलियों का पालन और प्रजनन का स्वरोजगार अवश्य शुरू करें। उन्होंने कहा कि रंगीन मछलियों का का पालन व प्रजनन बहुत ही छोटे से तालाब एवं एक्वेरियम दोनों जगहों पर किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि केंद्र व राज्य सरकारें इस कारोबार को बढ़ावा देने के लिए मत्स्यपालकों को आर्थिक सहायता भी दे रही है। किसानों को प्रशिक्षण से मिलेगा फायदा विशिष्ट अतिथि डॉ. पीपी श्रीवास्तव ने कहा कि पूसा विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडे के मार्गदर्शन में किसानों के लिए विभिन्न विषयों पर निरंतर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। किसानों को इन प्रशिक्षणों से फायदा उठाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण का आयोजन प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत राष्ट्रीय मात्स्यकी विकास बोर्ड हैदराबाद तेलंगाना द्वारा किया गया था। तीन दिनों तक चलने वाले इस प्रशिक्षण के दौरान संयोजक के रूप में रोशन कुमार राम ने काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मौके पर समस्तीपुर जिले के 25 प्रशिक्षणार्थियों के अलावे मत्स्य वैज्ञानिक डॉ. शिवेन्द्र कुमार, डॉ.राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ. मुकेश कुमार सिंह, डॉ.अनिरूद्ध कुमार, डॉ.सुजीत कुमार नायक अधिष्ठाता के निजी सहायक डॉ.राजेश कुमार, महाविद्यालय कर्मी संजय कुमार यादव, विनोद कुमार, साजन कुमार, भारती आदि मौजूद थे।

पूसा में प्रमाण पत्र व एक्यूरियम के साथ प्रशिक्षणार्थी।

भास्कर 3/3/25 पेज 14

**वैज्ञानिक सलाह** • तोरई में पाए जाने वाले महत्वपूर्ण पोषक तत्व का सेवन मनुष्य के लिए लाभकारी

# मौजूदा समय तोरई और पालक की खेती के लिए काफी उपयुक्त है : डॉ. तिवारी

## तोरई और पालक की खेती से किसान कमा सकते हैं ज्यादा मुनाफा

भास्कर न्यूज | पूसा

इस समय तोरई और पालक की खेती के लिए मौसम अनुकूल है। बिहार के किसान वैज्ञानिक तकनीक अपनाकर बेहतर उत्पादन और अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के हेड और कृषि वैज्ञानिक डॉ. आरके तिवारी ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि तोरई एक लत्तर वाली सब्जी है। इसे बड़े खेतों के अलावा गृह वाटिका में भी उगाया जा सकता है। किसान इसकी खेती ग्रीष्म और वर्षा दोनों ऋतुओं में करते हैं। इसे स्पॉन्ज गार्ड, लूफा सिलेन्ड्रिका और लूफा इजिप्टिका भी कहा जाता है। तोरई का उपयोग सब्जी के रूप में किया जाता है। इसके सूखे बीजों से तेल भी निकाला जाता है। इसमें कैल्शियम, फॉस्फोरस, लोहा और विटामिन ए भरपूर मात्रा में पाया जाता है। गर्मी के दिनों में बाजार में इसकी मांग अधिक होती है।

अलान पर लगाई गई तोरई की फसल।

### हल्की दोमट मिट्टी तोरई की खेती के लिए उपयुक्त

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि हल्की दोमट मिट्टी तोरई की खेती के लिए सबसे अच्छी मानी जाती है। बिहार के किसान नदियों के किनारे की भूमि में इसकी अच्छी खेती कर सकते हैं। खेतों की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए। इसके बाद सड़ी हुई गोबर की खाद और अन्य रासायनिक उर्वरक डालें। फिर 2 से 3 बार कल्टीवेटर चलाएं। तोरई की फसल में निराई-गुड़ाई अधिक करनी पड़ती है। इसलिए कतार से कतार की दूरी एक से डेढ़ मीटर और पौधे से पौधे की दूरी एक मीटर रखनी चाहिए। एक स्थान पर दो बीज की बुआई करें। बीज को अधिक गहराई में न लगाएं। किसान पूसा चिकनी, पूसा स्नेहा, पूसा सुप्रिया, काशी दिव्या, कल्याणपुर चिकनी और फुले प्रजतका जैसी उन्नत किस्मों की खेती कर सकते हैं।

### पालक की खेती से कम लागत में ज्यादा मुनाफा, इसकी मांग अधिक

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि पालक की खेती के लिए बलुई दोमट या मटियार मिट्टी उपयुक्त होती है। अम्लीय भूमि में इसकी खेती नहीं की जा सकती। खेत की तैयारी के दौरान उचित मात्रा में रासायनिक उर्वरक और सड़ी हुई गोबर की खाद डालें। फिर 2 से 3 बार कल्टीवेटर चलाकर मिट्टी को भुरभुरा बनाएं। इसके बाद पाटा चलाकर मिट्टी को समतल करें। फिर बेड बनाकर पालक की बुआई करें। पालक की खेती में लागत कम आती है। एक बार बुआई करने के बाद इसे 5 से 6 बार काटा जा सकता है। किसान जोबनेर ग्रीन, पूसा पालक, पूसा ज्योति, पूसा हरित और लांग स्टैंडिंग जैसी प्रजातियों की खेती कर सकते हैं। एक हेक्टेयर खेत में 25 से 30 किलोग्राम बीज की जरूरत होती है। पालक में विटामिन ए, सी, के, फोलिक एसिड, कैल्शियम और आयरन भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इसमें 90 प्रतिशत तक पानी होता है। इसका सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। यह वजन और ब्लड शुगर को नियंत्रित करता है।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 5 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया कि उत्तर बिहार के जिलों में अगले 24 घंटे में बादल के साथ बूंदाबांदी एवं वर्षा की संभावना है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि पूर्वानुमान अवधि में अधिकतम व न्यूनतम तापमान में वृद्धि के साथ 28 से 30 डिग्री एवं न्यूनतम तापमान 18 से 22 डिग्री रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 03 मार्च | 30.8 | 15.5 |
| 04 मार्च | 31.0 | 15.5 |
| | दरभंगा | |
| 03 मार्च | 31.0 | 15.5 |
| 04 मार्च | 31.0 | 16.0 |
| | पटना | |
| 03 मार्च | 32.5 | 16.5 |
| 04 मार्च | 32.5 | 16.5 |

डिग्री सेल्सियस में

दैनिक जागरण 3/3/25 पेज 3

प्रभात खबर 3/3/25 पेज 4

# रंगीन मछलियों के प्रजनन का करें प्रबंधन : डॉ श्रीवास्तव

समापन सत्र में प्रतिभागी के साथ वैज्ञानिक.

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ मात्स्यिकी महाविद्यालय के सभागार में रंगीन मछली के उत्पादन, पालन व प्रजनन विषय पर चल रहे छह दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ. अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि रंगीन मछलियों के पालन एवं प्रजनन का प्रबंधन करने की जरूरत है. इससे मत्स्यपालकों ने कम जगह एवं नगण्य लागत में बेहतर उत्पादन कर अधिकाधिक आय प्राप्त कर सके. मीठे पानी की सजावटी मछलियों के प्रजनन और पालन विषयक रोजगार परक प्रशिक्षण के प्रथम बैच के 25 युवा ब्रिगेड प्रशिक्षणार्थी सफलतापूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वरोजगार के लिए तैयार किया गया है. प्रशिक्षणार्थी इस प्रशिक्षण से स्वरोजगार से सीधे तौर पर जुड़ कर अपने व्यवसाय को अमली रूप दे सकते हैं. कार्यक्रम में वैज्ञानिक डॉ एसके जैन थे. प्रशिक्षण संयोजक रोशन कुमार राम थे. प्रशिक्षण कार्यक्रम में महाविद्यालय के स्नातक के छात्रों ने भी प्रशिक्षणार्थियों को एक्वेरियम निर्माण कार्य में तकनीकी सहायता कर प्रशिक्षुओं को प्रोत्साहित किया. समारोह में प्रमाणपत्र के साथ ही सभी प्रशिक्षणार्थियों के माध्यम से बनाये गये एक एक्वेरियम भी दिया गया. प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद, तेलंगाना द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम को कुलपति डॉ. सुविमलेन्दु पुन्यव्रत पाण्डेय के निर्देश में इस रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है. मौके पर समस्तीपुर जिले के 25 प्रशिक्षणार्थियों के साथ महाविद्यालय के शिक्षक डॉ शिवेन्द्र कुमार, डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ. मुकेश कुमार सिंह, डॉ. अनिरुद्ध कुमार, डॉ. सुजीत कुमार नायक, डॉ. राजेश कुमार, संजय कुमार यादव, विनोद कुमार, साजन भारती आदि मौजूद थे.

क्रिएटर उपस्थित थे।

राष्ट्रीय सहारा 3/3/25 पेज

# रंगीन मछलियों के पालन व प्रजनन का प्रबंधन महत्वपूर्ण : डॉ पीपी श्रीवास्तव

**सामस्तीपुर/पूसा (एसएनबी)**। रंगीन मछलियों के इस प्रशिक्षण से सजावटी मछलियों के रोजगार से सीधे जुड़कर युवा अपने कैरियर को नई उंचाई दे सकते है। यह कम लागत में अधिक मुनाफा देने वाला व्यवसाय है। डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय .षि विश्वविधालय के अधीनस्थ मात्स्यिकी महाविधालय के सभागार में आयोजित रंगीन मछली के उत्पादन, पालन व प्रजनन विषयक छह दिवसीय प्रशिक्षण के समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने उक्त बातें कही। उन्होने कहा कि रंगीन मछलियों के पालन एवं प्रजनन का प्रबंधन करने की जरूरत है। जिससे मत्स्यपालकों ने कम जगह एवं शुन्य लागत में बेहतर उत्पादन कर अधिकाधिक आय प्राप्त कर सके। उन्होंने बताया कि मीठे पानी की सजावटी मछलियों के प्रजनन और पालन विषयक रोजगार परक प्रशिक्षण के प्रथम बैच के 25 यूवा बिग्रेड प्रशिक्षणार्थी सफलता पूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वरोजगार के लिए तैयार किया गया है। कार्यक्रम में निदेशक बीडीआई वैज्ञानिक डॉ एसके जैन, एवं प्रशिक्षण संयोजक रोशन कुमार राम उपस्थित थे। प्रशिक्षण कार्यक्रम में महाविद्यालय के स्नातक के छात्रों ने भी प्रशिक्षणार्थियों को एक्वेरियम निर्माण कार्य में तकनीकी सहायता कर प्रशिक्षुओं को प्रोत्साहित किया। समापन समारोह में प्रमाण पत्र के साथ ही सभी प्रशिक्षणार्थियों को एक एक एक्वेरियम भी दिया गया। डॉ श्रीवास्तव ने बताया कि प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद, तेलंगाना द्वारा प्रायोजित यह रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम कुलपति डॉ. सुविमलेन्दु पुन्यव्रत पाण्डेय के दिशा निर्देश में संचालित किया गया। मौके पर समस्तीपुर जिले के 25 प्रशिक्षुओं के साथ महाविद्यालय के शिक्षक डॉ शिवेन्द्र कुमार, डॉ.राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ. मुकेश कुमार सिंह, डॉ.अनिरूद्ध कुमार, डॉ.सुजीत कुमार नायक अधिष्ठाता के निजी सहायक डॉ.राजेश कुमार, महाविद्यालय कर्मी संजय कुमार यादव, विनोद कुमार, साजन कुमार भारती आदि मौजूद थे।

प्रतिभागियों ने बनाया एक्वेरियम।

# गेहूं के खेतों में सिंचाई कर नमी बनाये रखें किसान : वैज्ञानिक

**समस्तीपुर।** किसान भाई कृषि कार्यो में सर्तकता बरतें। मौसम साफ रहने पर ही फसलों में कीटनाषक दवाओं का छिड़काव करें। सरसों की तैयार फसलों की कटाई सावधानी पूर्वक करें। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञान विभाग द्वारा किसानों केलिए जारी समसामयिक सुझाव में बताया गया है कि तापमान में वृद्धि होने से गेहूं की फसल को नुकसान होने की संभावना है, इसलिए किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि वे अपने खेतों में सिंचाई कर नमी बनाए रखें ताकि गेहूं की फसल को अधिक तापमान से बचाया जा सके और उत्पादन में कमी न आए। अरहर की फसल में फल-छेदक कीट की निगराणी करे। इस कीट के पिल्लू अरहर की फलियों में घुसकर बीजों को खाती है, जिससे उपज में काफी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए करताप हाईड्रोक्लोराइड दवा 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिडकाव करें। गरमा मूंग तथा उरद की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। बुआई से पूर्व खेत की जुताई में 20 किलोग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम सल्फर, 20 किलोग्राम पोटाष तथा 20 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। मूंग के लिए पूसा विशाल, सम्राट, एस0एम0एल0-668, एच0यू0एम0-16 एवं सोना तथा उरद के लिए पंत उरद-19, पंत उरद-31. नवीन एवं उत्तरा किस्में बुआई के लिए अनुशंसित है। बीजदर छोटे दानों के प्रभेदों हेतु 20-25 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर तथा बड़े दानों के प्रभेदों हेतु 30-35 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। कृषक भाई बुआई पूर्व बीज का प्रबंध प्रमाणित स्त्रोत से सुनिश्चित कर लें। सुर्यमुखी की बुआई 10 मार्च तक संपन्न कर लें। खेत की जुताई में 100 क्विंटल कम्पोस्ट, 30-40 किलोग्राम नेत्रजन, 80-90 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 40 किलोग्राम पोटास का व्यवहार करे। उत्तर बिहार के लिए सूर्यमूखी की उन्नत संकुल प्रभेद मोरडेन, सूर्या, सी0ओ0-1 एवं पैराडेविक तथा संकर प्रभेद के लिए बीएसएच-1, केबीएसएच-1, केबीएसएच-44, एमएसएफएच-1, एमएसएफएच-8 एवं एमएसएफएच-17 अनुसंषित है। संकर किस्मों के लिए बीज दर 5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा संकुल किरमों के लिए 8 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई से पहले प्रति किलोग्राम बीज को 2 ग्राम धीरम या कैप्टाफ दवा से उपचारित कर बुआई करे। इस मौसम में प्याज की फसल में थ्रिप्स कीट का आक्रमण हो सकता है। बचाव के लिए मौसम साफ रहने पर प्रोफेनोफॉस 50 ई0सी0 दवा का 1.0 नि0ली0 प्रति लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड दवा का 1.0 मि.ली. प्रति 4 लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें। अच्छे परिणाम्म हेतु चिपकाने वाला पदार्थ जैसे टीपोल 1.0 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल में मिलावें। गरमा मौसम की सब्जियों की बुआई करें। 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पूरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर मिला दें। कजरा ठ्ठकटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव हेतु खेत की जुताई में क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20-30 किलो बालू में मिलाकर व्यवहार करें। सब्जियों में निकाई-गुड़ाई एवं सिंचाई करें। मार्च महीने में गर्मी बढ़ने से दुधारू पशुओं में थनैला बिमारी होने की संभावना रहती है। धनों एवं दूध के रंग में बदलाव या अचानक दूध उत्पादन में कमी होने पर मैमिडियम 50 ग्राम चार दिनों तक प्रतिदिन गुड़ के साथ दें एवं तुरंत उपचार करवाएं। खरीफ के हरा चारा के लिए एम.पी चरी. मल्टीकट मिठा ज्वार एवं मक्का के साथ लोविया या मेथ दलहनी चाए लगाए। खुरहा, गलघोटू एवं लंगड़ी बिमारी से बचाव के लिए टिकाकरण कराएं।

राष्ट्रीय सहारा 3/3/25 पेज 5

भास्कर 4/3/25 पेज 13

**बजट में सौगात** • गुणवत्तापूर्ण गुड़ निर्माण के लिए नई-नई तकनीक से सूबे के किसानों को अवगत कराएंगे

# फ्लेवर्ड गुड़ उत्पादन के लिए पूसा में 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' की स्थापना होगी, गन्ना किसानों व व्यवसायियों को फायदा

भास्कर न्यूज़ | समस्तीपुर

बिहार में सामान्य एवं फ्लेवर्ड गुड़ उत्पादन का दौर अब शुरू होने जा रहा है। गुड़ के लिए एक 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' की स्थापना समस्तीपुर के पूसा में करने की बिहार बजट में घोषणा होने के बाद गन्ना उत्पादक किसानों में खुशी है। इसकी स्थापना के बाद यहां रिसर्च एंड डेवलपमेंट के साथ गुणवत्तापूर्ण गुड़ निर्माण के लिए नई-नई तकनीक से बिहार के किसानों को अवगत कराया जाएगा। अधिकाधिक उपज के साथ अच्छे स्वाद वाले ईख का उत्पादन, क्वालिटी और क्वांटिटी के साथ हो इसके लिए वैज्ञानिकों की टीम किसानों को अत्याधुनिक तकनीक से अवगत कराएगी।बता दें कि पूसा स्थित डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा पहले से ही तरल गुड़ निर्माण की ईकाई स्थापित है जिससे उत्पादित गुड़ की डिमांड काफी है। समस्तीपुर जिले में हसनपुर, उजियारपुर, पूसा, विभूतिपुर आदि प्रखंडों के हजारों किसान गन्ना उत्पादन से जुड़े हुए हैं। बता दें कि सरकार गुड़ प्रोसेसिंग प्लान्ट की स्थापना पर 50 प्रतिशत तक अनुदान दे रही है।

गुड़ प्रसंस्करण इकाई पूसा में गुड़ निर्माण से जुड़े कर्मी।

## 24 इकाइयों में बनाए जाएंगे कई स्वाद वाले गुड़

ईख आयुक्त की अध्यक्षता में गठित परियोजना अनुमोदन समिति ने 24 गुड़ प्लांट लगाने की परियोजनाओं को मंजूरी दी है। सभी जगहों पर सिविल कंस्ट्रक्शन वर्क का काम काफी तेजी से किया जा रहा है। यहां सामान्य एवं फ्लेवर्ड गुड़ उत्पादन किया जाएगा। इन परियोजनाओं में शुरुआती निवेश करीब सात से आठ करोड़ रुपये बताया जा रहा है। इससे पहले राज्य गुड़ उद्योग प्रोत्साहन कार्यक्रम के तहत 84 ऑनलाइन आवेदन आये थे।इनमें विभागीय समिति ने 37 परियोजना आवेदनों का चयन किया था। परंतु अंतिम रूप से 24 प्रोजेक्ट को हरी झंडी दी गयी।यह परियोजनाएं लहेरियासराय, समस्तीपुर, मोतिहारी, गोपालगंज, रामनगर, सीवान,बेतिया और मुजफ्फरपुर में प्रस्तावित हैं। सभी गुड़ प्लांट स्मॉल एंड मीडियम साइज के हैं। इनकी क्षमता पांच से 40 टीसीडी होगी। संबंधित प्लांट अत्याधुनिक ऑटोमेटिक होंगे।

*▶ सेंटर आफ एक्सीलेंस से गन्ना उत्पादक किसानों को काफी लाभ मिलेगा और उन्हें गुणवत्तापूर्ण गुड़ निर्माण की नई तकनीक भी मिलेगी।*
*- कुमार कानन, ईख पदाधिकारी, पटना*

भास्कर 4/3/25 पेज 16

**सुझाव • लौकी लगाने के लिए खेत की तैयारी करें, वर्तमान समय है उपयुक्त**

# किसान कद्दू की वैज्ञानिक तकनीक से करें खेती, बेहतर उपज मिलेगी : कृषि वैज्ञानिक

भास्कर न्यूज़ | पूसा

लौकी यानी कद्दू एक ऐसी फसल है जिसकी खेती किसान साल भर में तीन बार कर सकते हैं। लौकी की सब्जी का सेवन जहां सेहत के लिए काफी अच्छा होता है। वहीं इसकी वैज्ञानिक खेती किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत भी बनाती है। ये जानकारी कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के वरीय कृषि वैज्ञानिक सह हेड डॉ. रविंद्र कुमार तिवारी ने दी । उन्होंने कहा कि मौजूदा समय लौकी लगाने के लिए काफी उपयुक्त है। बिहार के किसान लौकी की खेती को वैज्ञानिक तरीके से करके अच्छी कमाई कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि लौकी की अच्छी पैदावार के लिए गर्म एवं आर्द्रता वाले भौगोलिक क्षेत्र सर्वोत्तम होते हैं। उन्होंने बताया कि किसान अगर कृषि वैज्ञानिकों की सलाह पर लौकी की सफल खेती करें तो वे एक हेक्टेयर खेत में लौकी लगाकर कम से कम एक लाख रुपये आसानी से कमा सकते है। उन्होंने कहा कि इसकी खेती विभिन्न प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है। लेकिन उचित जल धारण क्षमता वाली जीवाश्म युक्त हल्की दोमट मिट्टी इसकी सफल खेती के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि किसान खेत की जुताई कल्टीवेटर और रोटावेटर से अच्छी तरीके से करें। एक हेक्टेयर खेत में किसान 30 से 35 टेलर अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद डालें। लौकी की फसल में बांस का अलान बनाना ज्यादा फायदेमंद होता है। चूंकि अलान पर चढ़कर फलने वाला लौकी काफी अच्छा होता है। साथ ही उसका साइज बड़ा और साफ सुथरा भी होता है। किसान लौकी के खेत से खरपतवार को हमेशा हटाते रहे। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि ऐसे तो लौकी की कई किस्मों को किसान समय समय पर लगाते है। लेकिन कद्दू का किस्म पूसा समर प्रोली फिक लॉग, पूसा समर प्रोलिफिक राउंड आदि किसानों के लिए लाभकारी है। ये सभी किस्में प्रति हेक्टेयर 90 से 100 क्विंटल तक उपज देती हैं।

नर्सरी में तैयार किए जा रहे कद्दू के पौधे।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 5 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया कि उत्तर बिहार के जिलों में अगले 24 घंटे में बादल के साथ बूंदाबांदी एवं वर्षा की संभावना है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि पूर्वानुमान अवधि में अधिकतम व न्यूनतम तापमान में वृद्धि के साथ 28 से 30 डिग्री एवं न्यूनतम तापमान 18 से 22 डिग्री रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 04 मार्च | 30.0 | 15.0 |
| 05 मार्च | 30.5 | 15.0 |
| दरभंगा | | |
| 04 मार्च | 30.5 | 15.0 |
| 05 मार्च | 30.5 | 15.5 |
| पटना | | |
| 04 मार्च | 31 | 16.0 |
| 05 मार्च | 31 | 16.0 |

डिग्री सेल्सियस में

**_Dainik Jagran 04-03-2025_**

हिन्दुस्तान 4/3/25 पेज 3

# गुड़ के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की पूसा को सौगात, बढ़ेगी आमदनी

## बजट में घोषणा से जिले में गन्ना से जुड़े किसानों और वैज्ञानिकों ने जताई खुशी

**कृषि विवि**

- लोग बोले- रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे
- गन्ना किसानों की आय भी होगी दोगुनी

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के ईख अनुसंधान संस्थान में गुड़ के लिए एक सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना की जायेगी। इससे गन्ना व इससे जुड़े उत्पाद व अन्य रोजगार की विकास गति तेज होने की संभावना है। सोमवार को राज्य के बजट में घोषणा के बाद संस्थान के निदेशक डॉ.देवेन्द्र सिंह ने जानकारी देते हुए हर्ष व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि सरकार की यह पहल गन्ना से जुड़े किसानों के लिए संजीवनी का कार्य करेगा। इससे रोजगार व व्यवसाय के अवसर तेजी से बढ़ेंगे।

उन्होंने कहा कि इससे गुड की कमी दूर होने के साथ ही मिल क्षेत्र से दूर वाले किसान भी गन्ना का उत्पादन कर गुड़ निर्माण कार्य को आकार देकर बेहतर लाभ कमा सकेंगे। उन्होंने कहा कि धान-गेहूं की तुलना में गन्ना उत्पादन व इसके उत्पाद निर्माण से किसानों 2-3 गुना अधिक लाभ कमा सकेंगे। कृषि आधारित उद्योग बड़ा आकार ले सकेगा। उन्होंने बताया कि सरकार ने गुड़ उद्योग को बढ़ावा देने के लिए किसानो को प्रशिक्षण व अनुदान की शुरुआत कर दी है। अब इस नई पहल से गन्ना के उत्पादन के अलावा किसान गुड व अन्य उत्पाद का निर्माण कर बेहतर लाभ कमा सकेंगे।

वीमेंस कॉलेज की अर्थशास्त्र की सहायक प्राध्यापक डॉ रिंकी कुमारी ने बजट पर चर्चा करते हुए कहा कि बिहार सरकारी इस बजट में शिक्षा पर विशेष ध्यान देने जा रही है जो की एक सकारात्मक कदम है। 358 प्रखंडों में डिग्री कॉलेज खोलने की घोषणा की है इसका फायदा छात्रों को मिलेगा। स्वास्थ्य हम सब की प्राथमिक आवश्यकताओं में से एक है, सरकार ने इसका ध्यान रखा है। आज के समय में खेलकूद भी आवश्यक चीज बन गई है इसके लिए सरकार प्रत्येक प्रखंड में आउटडोर स्टेडियम बनाएगी। डिजिटल दौर में सरकार ने भी निर्णय लिया है कि निबंधन कार्यालय को पेपरलेस किया जाएगा, यह सबसे सकारात्मक कदम लिया गया।

पूसा का ईख अनुसंधान संस्थान का प्रशासनिक भवन।

### आमलोगों के लिए विकास परक बजट : विजय

वीमेंस कॉलेज के अर्थशास्त्र के सहायक प्रध्यापक डॉ विजय कुमार गुप्ता ने बताया कि चुनावी आहट के बीच पेश वितीय वर्ष 2025-26 में 3 लाख 17 हजार करोड़ का बजट है, जो पिछले वर्ष की बजट से 38 हजार करोड़ से अधिक है। बजट में सरकार की प्राथमिकता शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण सड़क, समाज कल्याण व रोजगार है। सभी पंचायतों में कन्या विवाह मंडप की स्थापना, पटना में महिला हाट की स्थापना, प्रमुख शहरों में पिंक बस सेवा, पिंक टॉयलेट बनाना, हर प्रखंड में डिग्री कॉलेज की स्थापना, प्री मैट्रिक छात्रवृत्ति दोगुनी करना अच्छी पहल है। रोजगार युक्त निवेश पर सरकार का फोकस है। पिछले दस वर्षो में बिहार का बजट लगभग तीन गुना हो गया है, लेकिन पलायन की समस्या यथावत है। इस बार 54 हजार 575 करोड़ रुपये की मदद मिलने का अनुमान है। केंद्र सरकार के साथ मिलकर राज्य का विकास किया जा रहा है।

प्रभात खबर 5.3.25 पेज 5

# बच्चों को तकनीकी रूप से समुन्नत बनाएं : डॉ राय

दीप जलाकर कार्यशाला का उद्घाटन करते कुलपति.

सभागार में मौजूद शिक्षक.

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के तत्वावधान में अनुसंधान प्रविधि विषय पर सोमवार को कार्यशाला हुई. अध्यक्षता प्राचार्या डॉ आकांक्षा कुमारी ने की. कार्यशाला में मुख्य अतिथि लंगट सिंह महाविद्यालय मुजफ्फरपुर के प्राचार्य डॉ ओमप्रकाश राय ने कहा कि स्कूली छात्र-छात्राओं को तकनीक के क्षेत्र में समुन्नत बनाने की दिशा में अनुसंधान करने की जरूरत है. शिक्षा दान करने की संपत्ति है. ज्ञान दान सभी दानों में सर्वोपरि होता है. छात्र-छात्राओं को आईटीसी से जोड़कर आगे बढ़ाने की आवश्यकता है. भावी पीढ़ी की तैयारी में शिक्षकों की महती भूमिका है. इससे पहले आगत अतिथियों ने दीप जलाकर कार्यशाला का उद्घाटन किया. स्वागत गीत डायट प्रशिक्षु साना नवाज, सजल सुमन, सोनी शर्मा, शांभवी कुमारी, श्वेता, संजना, मल्लिका एवं दिव्या ने प्रस्तुत किया. डीपीओ मानवेंद्र कुमार राय ने कहा कि अनुसंधान प्रविधि के परिणाम को समझने के लिए कार्यशाला के 15 दिन बाद सीखे गये फीडबैक का पुनः डायट को प्रतिवेदन जमा करना है. लंगट सिंह महाविद्यालय के इतिहास विभाग के व्याख्याता डॉ राजीव कुमार ने कहा कि बच्चों के रुचि के अनुसार नये नवाचार लाते हुए अनुसंधान करने की जरूरत है. साधनसेवी डा सुबोध कुमार ने कहा कि बच्चों को अनुसंधान की मुख्यधारा से जोड़ कर ही नई शिक्षा नीति के तहत परिणाम प्राप्त कर सकते हैं. संचालन डा अंकिता एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रशांत भास्कर ने किया.

# तकनीकी ज्ञान अर्जित कर कौशल विकास करने की जरूरत : डा राय

प्रतिभागी के साथ वैज्ञानिक .

- मात्स्यिकी महाविद्यालय के सभागार में पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग बिहार सरकार द्वारा प्रायोजित मुजफ्फरपुर जिला के किसानों के लिए छः दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण शुरु हुआ
- दर्जनों किसान शामिल

**पूसा.** डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ मात्स्यिकी महाविद्यालय के सभागार में पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग बिहार सरकार द्वारा प्रायोजित मुजफ्फरपुर जिला के किसानों के लिए छः दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. मुख्य अतिथि अधिष्ठाता कृषि स्नातकोत्तर महाविद्यालय सह निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. मयंक राय ने कहा कि मत्स्यपालन के क्षेत्र में तकनीकी ज्ञान अर्जित कर कौशल विकास करने की जरूरत है. ताकि मत्स्यपालन व्यवसाय को बढ़ावा दिया जा सके. डॉ राय ने बताया कि प्रशिक्षणार्थी मत्स्यपालन के लिए तकनीकी ज्ञान अर्जित कर अपने कौशल को मत्स्यपालन में अपनाकर बेहतर लाभ प्राप्त कर स्वावलंबी बन कर अपनी आर्थिक स्थिति को निश्चित रूप से सुदृढ़ कर सकते हैं.

आवश्यकता है कि तकनीकी ज्ञान को अन्य मत्स्यपालकों तक पहुंचाने की. मात्स्यिकी महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने प्रशिक्षण सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि मत्स्यपालन के लिए प्रेरित किया. मौके पर मुजफ्फरपुर जिले के चयनित 30 प्रशिक्षणार्थियों के साथ मात्स्यिकी महाविद्यालय के शिक्षक डॉ. शिवेन्द्र कुमार, डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ. मुकेश कुमार सिंह, डॉ.अनिरुद्ध कुमार, डॉ. मोगलेकर एचएस, डॉ. प्रवेश कुमार, डॉ. सुजीत कुमार नायक, डॉ. तनुश्री घोड़ई, रोशन कुमार राम, विनोद कुमार व साजन कुमार भारती मौजूद थे.

प्रभात खबर
Wednesday, March 5, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67c752116ca17502d5080204

## मत्स्यपालन पर जिले के किसानों के लिए पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

# मछलीपालन को बड़े उद्योग के रूप में विकसित करें : डॉ निजाउद्दीन

**प्रतिनिधि, पूसा**

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में बेहतर उत्पादन के लिए मत्स्यपालन विषय पर जिले के किसानों के लिए पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए जिला मत्स्य पदाधिकारी डा मो. निजाउद्दीन ने कहा कि मछलीपालन व्यवसाय को उद्योग के रूप में विकसित करने की जरूरत है.

प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को बिहार सरकार के मत्स्यपालन से संबंधित सभी योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी देना जरूरी है. मछलीपालन करने वाले सभी लोग मत्स्य व्यवसायी के रूप में जाने जाते हैं. खासकर उत्तरी बिहार में हजारों

प्रशिक्षण सत्र को संबोधित करते जिला मत्स्य पदाधिकारी.

हजार एकड़ जलीय भूमि उपलब्ध है. मछलीपालन के क्षेत्र में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से फायदा का ही रोजगार है. वैज्ञानिकी विधि से तालाबों का प्रबंधन कर एक एकड़ के तालाब से करीब सवा लाख रुपए तक का शुद्ध मुनाफा मिलना तय है. समस्तीपुर में मछली आंध्रप्रदेश से बिल्कुल ही नहीं आ रही है. जबकि बंगाल से फिलवक्त बड़े पैमाने पर मछली का निर्यात किया जा रहा है. प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए जिला मत्स्य पदाधिकारी ने कहा कि प्रतिभागियों का कौशल विकास करने की दिशा में पाठ्यक्रम में विशेषरूप से फोकस किया गया है. समस्तीपुर जिला के चार प्रखंडों में मत्स्य बाजार खोलने का निर्णय लिया गया है. इसमें शिवाजीनगर, खानपुर, रोसड़ा एवं सिंघिया में मत्स्य बाजार का शुभारंभ किया जा रहा है. सरकार की ओर से 18 हेक्टेयर तालाब में मछलीपालन का लक्ष्य दिया गया था. जिसमें 12 हेक्टेयर में मछलीपालन व्यवसाय की शुरुआत से लक्ष्य के करीब पहुंच चुका है. स्वागत भाषण प्रसार शिक्षा निदेशक डा मयंक राय ने दिया. वैज्ञानिक डा फूलचंद ने कहा कि मत्स्यपालन से किसानों में आर्थिक समृद्धता आती है. डा पवन शर्मा ने कहा कि प्रसार शिक्षा निदेशालय के माध्यम से प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम को बेहतर रूप से शिड्यूल्ड में सजाया गया है. धन्यवाद ज्ञापन प्रसार शिक्षा उप निदेशक डा विनिता सतपथी ने किया. मौके पर टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, सूरज कुमार आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Wednesday, March 5, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67c752116ca17502d5080201

# अधिकतम तापमान 32 डिग्री के पार कर जायेगा

**समस्तीपुर** . डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केंद्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 5 से 9 मार्च तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ व मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है. इस अवधि में अधिकतम तापमान 29 से 31 डिग्री सेल्सियस व न्यूनतम तापमान 15 से 17 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है. अगले दो दिनों के बाद उत्तर पश्चिम बिहार के कुछ जिलों में अधिकतम तापमान 32 डिग्री सेल्सियस से अधिक जा सकता है. पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 5 से 10 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से 9 मार्च को पुरवा व अन्य दिनों में पछुया हवा चलने का अनुमान है. 5 मार्च तक हवा की रफ्तार तेज रह सकती है. सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत व दोपहर में 50 से 55 प्रतिशत रहने की संभावना है. आज का अधिकतम तापमान 30.2 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 2.0 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा. वहीं न्यूनतम तापमान 11.5 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 2.5 डिग्री सेल्सियस कम रहा.

प्रभात खबर
Wednesday, March 5, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67c752116ca17582d50882

भास्कर 5/3/25 पेज 18

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के प्रमुख ने दी सलाह

# स्ट्रॉबेरी की फसल पर बढ़ा रोगों का खतरा वैज्ञानिक तकनीक से करें इसका प्रबंधन

## रखें ध्यान : हल्की सिंचाई करें और रोगग्रस्त पौधों को खेत से बाहर निकालें

भास्कर न्यूज | पूसा

कई जिलों में किसान बड़े पैमाने पर स्ट्रॉबेरी की खेती कर रहे हैं। बेहतर उत्पादन के लिए फसल की देखभाल जरूरी है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के पादप रोग विभाग के प्रमुख डॉ. एसके सिंह ने किसानों को वैज्ञानिक सलाह दी है। उन्होंने बताया कि स्ट्रॉबेरी की फसल में कई तरह की बीमारियां लगती हैं, जो भारी नुकसान पहुंचा सकती हैं। इनमें अल्टरनेरिया स्पॉट, काली जड़ सड़न, एन्थ्रेक्नोज (ब्लैक स्पॉट), क्राउन रोट और फल सड़न रोग प्रमुख हैं। अल्टरनेरिया स्पॉट रोग में पत्तियों पर घाव और धब्बे बनते हैं। यह समस्या गंभीर हो सकती है। इस रोग से बचाव के लिए मैंकोजेब, साफ या हेक्साकोनाजोल की 2 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर 10 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें। काली जड़ सड़न रोग में जड़ें काली पड़ जाती हैं और पौधे की जड़ प्रणाली कमजोर हो जाती है। इस रोग से बचाव के लिए हेक्साकोनाजोल या कार्बेंडाजिम की 2 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर जड़ों और आसपास की मिट्टी में डालें। 10 दिन बाद फिर से यही प्रक्रिया दोहराएं। एन्थ्रेक्नोज (ब्लैक स्पॉट) रोग में पत्तियों पर काले या भूरे धब्बे बनते हैं। तने और रनर पर गहरे धंसे हुए धब्बे दिखते हैं। पौधे बौने और पीले हो जाते हैं। हल्की सिंचाई करें और रोगग्रस्त पौधों को खेत से बाहर निकालें। उग्र अवस्था में मैंकोजेब, साफ या हेक्साकोनाजोल की 2 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर 10 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें। इससे बीमारी का प्रकोप कम होगा।

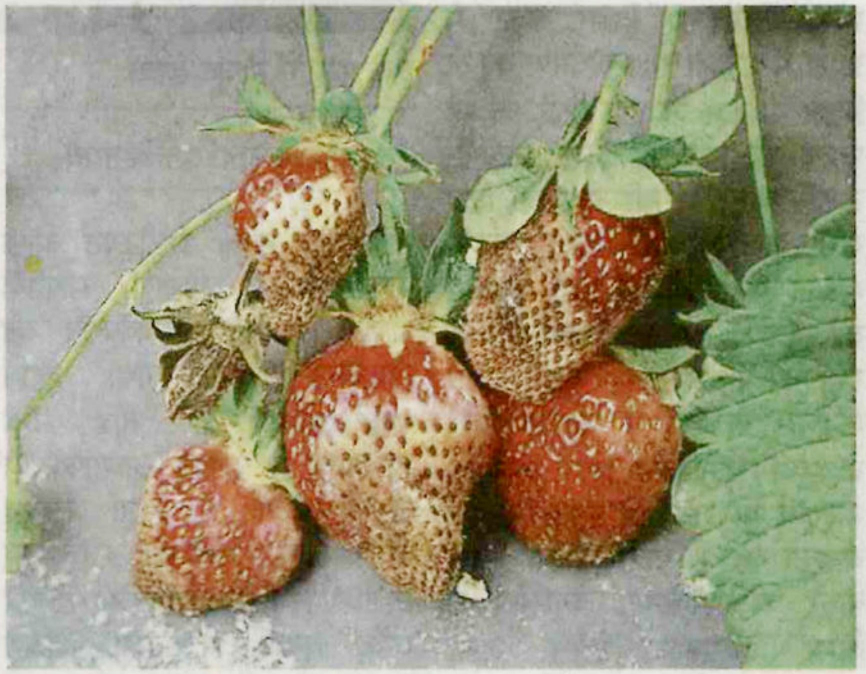

स्ट्रॉबेरी के फल में लगा सड़न रोग।

### दवा का 10 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें

इस रोग में पत्तियों पर गोल काले या हल्के भूरे रंग के घाव बन जाते है। कई धब्बे विकसित हो सकते हैं लेकिन पत्तियां मरती नहीं हैं। तने, रनर और पेटीओल्स पर गहरे भूरे या काले धंसे हुए धब्बे बनते है और पौधे बौने और पीले हो जाते हैं। पौधे मुरझाकर गिर भी सकते हैं तथा आंतरिक उतकों का रंग लाल हो जाता है। इस रोग के प्रबंधन के लिए आवश्यक है की हल्की हल्की सिंचाई की जाय तथा किसान रोगग्रस्त पौधों को खेत से बाहर निकालते रहे। किसान साफ सुथरी खेती पर ज्यादा जोर दे। रोग की उग्र अवस्था में किसी फफुंदनाशी यथा मैंकोजेब, साफ या हेक्साकोनाजोल की 2 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर 10 दिन के अंतराल पर दो छिड़काव करें। इस रोग में सबसे छोटा पौधा दोपहर के समय पानी की कमी के दौरान मुरझा जाता है और शाम को ठीक हो जाता है। विल्टिंग पूरे पौधे की ओर बढ़ती है। इस रोग की वजह से पौधे की मृत्यु हो जाती है। जब क्राउन (ताज) को लंबा काट दिया जाता है तो लाल-भूरे रंग की सड़ांध या लकीर दिखाई देने लगती है।

### रोग का कवक मिट्टी में 9 महीने तक जीवित रहता है

इस रोग में पकने वाले फलों पर हल्के भूरे रंग के पानी से लथपथ धब्बे जो गहरे भूरे या काले गोल घावों में विकसित हो जाते हैं। यह स्ट्रॉबेरी का एक प्रमुख रोग है जो पौधे के अधिकांश भागों को प्रभावित करता है। यह पूरे सीजन में गंभीर नुकसान का कारण बन सकता है। इस रोग का कवक मिट्टी में 9 महीने तक जीवित रहता है। यह रोग गर्म गीले मौसम में ज्यादा फैलता है। इस रोग के प्रबंधन के लिए आवश्यक है की हल्की हल्की सिंचाई की जाय तथा रोगग्रस्त पौधों को खेत से बाहर करते रहना चाहिए। किसान साफ सुथरी खेती पर ज्यादा जोर दे। रोग की उग्र अवस्था में मैंकोजेब या साफ की 2 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

भास्कर 5/3/25 पेज 16

**कार्यक्रम** • बेहतर उत्पादन के लिए समेकित मत्स्यपालन के विषय पर किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

# मछलीपालन के व्यवसाय को उद्योग के रूप में विकसित करने की जरूरत : नियाजुद्दीन

## जिला मत्स्य पदाधिकारी ने प्रतिभागियों को दी योजनाओं की जानकारी

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्लाय पूसा के संचार केंद्र स्थित पंचतंत्र भवन सभागार में बेहतर उत्पादन के लिए समेकित मत्स्यपालन के विषय पर किसानों के लिए 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे जिला मत्स्य पदाधिकारी डा. मो. नियाजुद्दीन ने कहा कि मौजूदा समय में मछलीपालन के व्यवसाय को उद्योग के रूप में विकसित करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को बिहार सरकार के मत्स्यपालन से संबंधित सभी तरह के योजनाओं की जानकारी दी जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि मछली पालन करने वाले सभी लोग मत्स्य व्यवसायी के रूप में जाने जाते है। उन्होंने कहा कि खासकर उत्तर बिहार में हजारों हजार एकड़ जलीय भूमि उपलब्ध है। यहां के किसानों को मत्स्यपालन का कारोबार जरूर से जरूर शुरू करना चाहिए। उन्होंने कहा कि मछली पालन का कारोबार प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दोनों रूप से फायदे का ही कारोबार है।उन्होंने कहा कि किसान वैज्ञानिकी विधि से तालाबों का प्रबंधन कर एक एकड़ के तालाब में मछलीपालन कर करीब करीब सवा लाख रुपए तक का शुद्ध मुनाफा कमा सकते है। उन्होंने कहा कि समस्तीपुर जिले में आंध्रप्रदेश से मछली अब बिल्कुल न के बराबर आ रही है। हालांकि बंगाल से फिलववत बड़े पैमाने पर मछली का निर्यात किया जा रहा है। प्रशिक्षण के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए जिला मत्स्य पदाधिकारी ने कहा कि प्रतिभागियों का कौशल विकास करने के लिए इस प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम पर विशेष रूप से फोकस किया गया है।

कार्यक्रम को संबोधित करते जिला मत्स्य पदाधिकारी व मौजूद प्रशिक्षणार्थी।

### प्रतिभागियों में व्यवसाय के प्रति जिज्ञासा पैदा करनी होगी, स्वयं के साथ दूसरे को भी दें राजगार

उन्होंने कहा कि प्रतिभागियों में व्यवसाय के प्रति जिज्ञासा पैदा करनी होगी। उन्होंने कहा कि समस्तीपुर के किसानों में लर्निंग ज्ञान के साथ-साथ कर्मठता भी कूट कूटकर भरी है। यहां के किसान भी एक कुशल वैज्ञानिक है। उन्होंने गौरवान्वित होते हुए कहा कि राज्य में सभी जिले से ज्यादा बिहार सरकार के विभागीय मंत्री, अधिकारी एवं पदाधिकारी समस्तीपुर जिले का ही भ्रमण कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मत्स्य पालन को लेकर सरकार की ओर से 18 हेक्टेयर तालाब में मछली पालन कराने का लक्ष्य दिया गया था। फिलहाल हम सभी 12 हेक्टेयर में मछली पालन के व्यवसाय की शुरुआत कर लक्ष्य के करीब पहुंच चुके है। स्वागत भाषण प्रसार शिक्षा निदेशक डा. मयंक राय ने किया।

### मत्स्य पालन से किसानों में आर्थिक समृद्धि आएगी

वैज्ञानिक डा. फूलचंद ने कहा कि मत्स्य पालन से किसानों में आर्थिक समृद्धता आती है। डॉ. पवन शर्मा ने कहा कि प्रसार शिक्षा निदेशालय के माध्यम से प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम को बेहतर रूप से शिड्यूल्ड में किया गया है। सरकार की ओर से मत्स्य संपदा योजना के तहत 20 हजार 50 करोड़ की परियोजना संचालित कर किसानों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कृषि रोड मैप के अनुसार कृषि से मिलने वाली आय को दुगुनी करने की दिशा में पहल की जा रही है। उन्होंने कहा कि एक अनुमान के मुताबिक मत्स्य पालन से किसानों को छह गुना तक की शुद्ध आमदनी हो रही है। संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रसार शिक्षा उप निदेशक डॉ. बिनीता सतपथी ने की। मौके पर टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, सूरज कुमार आदि मौजूद थे।

भास्कर 5/3/25 पेज 15

मौसम • 9 मार्च तक पुरवा व इसके बाद के दिनों में पछिया हवा चलने का अनुमान, न्यूनतम पारा भी बढ़ेगा

# उत्तर बिहार के जिलों में आसमान रहेगा साफ, अधिकतम तापमान 32 डिग्री के पार पहुंचने का अनुमान, आज से हवा की रफ्तार भी बढ़ेगी

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ तथा मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 29 से 31 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 15 से 17 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। अगले दो दिनों के बाद उत्तर पश्चिम बिहार के कुछ जिलों में अधिकतम तापमान 32 डिग्री सेल्सियस से अधिक जा सकता है। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा मौसम विभाग के अनुसार पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 5 से 10 कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से 9 मार्च को पुरवा तथा अन्य दिनों में पछिया हवा चलने का अनुमान है। 5 मार्च तक हवा की रफ्तार तेज रह सकती है। वहीं सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 50 से 55 प्रतिशत रहने की संभावना है। मंगलवार का अधिकतम तापमान 30.2 और न्यूनतम तापमान 11.5 डिग्री सेल्सियस रिकॉड किया।

पूर्वानुमानित अवधि में मौसम के शुष्क रहने की संभावना को देखते हुए किसान सरसों की कटनी, दौनी और सुखाने का काम प्राथमिकता से पूरा करें।

## वैज्ञानिक सुझाव : तापमान को देखते हुए खड़ी फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें

खेतों में लहलहाती मक्के की फसल।

*उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ तथा मौसम के शुष्क का अनुमान है। 5 मार्च तक हवा की रफ्तार तेज रह सकती है।*
*-डॉ. ए. सत्तार, नोडल पदाधिकारी, पूसा मौसम विभाग*

### बसंतकालीन मक्का की खेती के लिए समय उपयुक्त, करें बुआई

बसंतकालीन मक्का की बुआई करें। जुताई से पूर्व खेतों में प्रति हेक्टेयर 15-20 टन गोबर की खाद, 40 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटास का व्यवहार करें। बुआई के लिए सुवान, देवकी, गंगा 11. शक्तिमान 1 एवं 2 किस्में अनुशंसित है। बीज दर 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। प्रति किलोग्राम बीज को 2.5 ग्राम चीरम या कैप्टाफ द्वारा उपचारित कर बुआई करें। रबी मक्का की धनबाल व मोचा निकलने से दाना बनने की अवस्था वाली फसल में पर्याप्त नमी बनाए रखें। गरमा मूंग तथा उरद की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। बुआई के पूर्व उचित मात्रा में खाद का प्रयोग करें।

भास्कर 5/3/25 पेज 15

# गन्ना उत्पादन पर किसानों को विवि में आज से मिलेगा प्रशिक्षण

भास्कर न्यूज| पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ गन्ना अनुसंधान संस्थान के परिसर में बुधवार से गन्ना उत्पादन में रुचि रखने वाले किसानों के लिए सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। गन्ना उत्पादन, प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन के विषय पर आयोजित होने वाले इस प्रशिक्षण में बिहार के विभिन्न जिलों से पहुंचने वाले करीब 50 गन्ना उत्पादक किसान भाग लेंगे। गन्ना अनुसंधान संस्थान और गुर प्रसंस्करण इकाई से जुड़े वैज्ञानिक डॉ. अनुपम अमिताभ ने बताया कि बिहार राज्य गुर प्रोत्साहन कार्यक्रम के तहत विवि के गन्ना अनुसंधान संस्थान में 7 दिवसीय कुल 4 प्रशिक्षण होने थे। किसानों को 2 प्रशिक्षण सफलता पूर्वक दी जा चुकी है। जबकि तीसरे की शुरुआत बुधवार से होगी। उन्होंने बताया कि 7 दिनों तक चलने वाले इस आवासीय प्रशिक्षण में किसानों को गन्ना के उत्पादन से लेकर गुर और गुर से बनाएं जाने वाले विभिन्न उत्पादों के बारे में वैज्ञानिकों के द्वारा विस्तार से जानकारी दी जाती हैं। उन्होंने बताया कि किसानों को सैद्धांतिक और प्रायोगिक जानकारी मुहैया कराने के साथ-साथ उन्हें कल्याणपुर सहित अन्य फार्म में लगे गन्ने की फसल को भी दिखाकर उत्पादन से संबंधित तमाम तरह की जानकारी दी जाती हैं। उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण को प्राप्त करने के बाद प्रशिक्षणार्थी गुर प्रोसेसिंग यूनिट लगा सकते हैं।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 9 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ तथा मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 29 से 31 डिग्री व न्यूनतम 15 से 17 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 05 मार्च | 30.2 | 11.5 |
| 06 मार्च | 31.0 | 11.5 |
| दरभंगा | | |
| 05 मार्च | 31.0 | 11.5 |
| 06 मार्च | 31.0 | 12.0 |
| पटना | | |
| 05 मार्च | 32 | 13.0 |
| 06 मार्च | 32 | 14.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 05-03-2025

# आसमान रहेगा साफ, तेज रफ्तार में चलेगी पछिया हवा

पूसा, निज संवाददाता। उत्तर बिहार के जिलों में अगले चार दिनों तक आसमान प्रायः साफ एवं मौसम शुष्क रहेगा। इस दौरान 5 से 10 किमी. प्रति घंटा की गति से 9 मार्च को पुरवा एवं अन्य दिनों में पछुआ हवा चलने का अनुमान है। इस दौरान 5 मार्च तक हवा की रफ्तार तेज रह सकती है।

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम विभाग ने मंगलवार को 10 मार्च तक का मौसम पूर्वानुमान जारी किया है। जिसके अनुसार इस अवधि में सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 एवं दोपहर में 50 से 55 प्रतिशत रहने की संभावना है।

पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान 29 से 31 डिग्री एवं न्यूनतम 15 से 17 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। मौसम विभाग के अनुसार अगले दो दिनों के बाद उत्तर पश्चिम बिहार के कुछ जिलों में अधिकतम तापमान 32 डिग्री सेल्सियस से अधिक रह सकता है।

**Hindustan 05-03-2025**

## अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस होगा बाजार, पहले चरण में सिंधिया, रोसड़ा, शिवाजीनगर एवं खानपुर चिह्नित

# जिले में मत्स्य बाजार की होगी शुरुआत

**पूसा, निज संवाददाता।** जिला मत्स्यकी पदाधिकारी मो.नियाजुद्दीन ने कहा कि समस्तीपुर में जल्द ही हाईटेक मत्स्य बाजार की शुरूआत होगी। प्रथम चरण में जिले के सिंधिया, रोसड़ा, शिवाजीनगर एवं खानपुर प्रखंड को चिन्हित किया गया है। इसके साथ ही मत्स्य से जुड़े कारोबार को बढ़ावा देने की दिशा में लगातार प्रयास जारी है। इसमें फिश प्रोसेसिंग यूनिट, ऑरनामेंटल फिश, फिश ड्रायर, फिश आहार जैसे कार्यों को अपनाकर लोग आर्थिक रूप से सबल हो सकते हैं। जरूरत है विवि से तकनीकी ज्ञान लेकर सरकार की योजनाओं की योजनाओं को शत-प्रतिशत सफल बनाने की।

वे मंगलवार को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के पंचतंत्र सभागार में बोल रहे थे। मौका था बेहतर उत्पादन के लिए समेकित मत्स्य पालन विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का। उन्होंने कहा कि मछली से जुड़े रोजगार की लगातार बढ़ रही मांग से अब यह उद्योग का रूप ले चुका है। उन्होंने इसके उत्पादन के लिए अनुपयोगी भूमि का भी इस्तेमाल करने पर बल दिया। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ.मयंक राय ने कहा कि मछली उत्पादन के क्षेत्र में बिहार आत्मनिर्भर होने की स्थिति है। अब इसे निर्यातक राज्य के रूप में बढ़ावा देने की जरूरत है। इसमें केन्द्र व राज्य सरकार हरसंभव सहयोग में जुटी है। तो दूसरी ओर विवि तकनीकी व व्यवसायिक ज्ञान से सशक्त कर रहा है।

उन्होंन कहा कि मछली उत्पादन के अलावा उसका बीज समेत अन्य उत्पाद का निर्माण कर बाजार से जुड़कर लोग लाभ कमा सकते हैं। मौके पर वैज्ञानिक पवन शर्मा ने भी संबोधित किया। स्वागत डॉ.फूलचंद एवं संचालन प्रशिक्षण संयोजिका डॉ.विनिता छत्रपति ने किया।

मंगलवार को विवि के पंचतंत्र सभागार में संबोधित करते डीन डॉ.मयंक राय व प्रशिक्षण के दौरान मौजूद प्रतिभागी।

**06** दिवसीय प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

- कहा, मछली पालन अब उद्योग का ले रहा रूप
- इससे जुड़कर युवा कर सकते हैं अच्छी आमदनी

# मछली पालन से होंगे आत्मनिर्भर: डीन

**पूसा, निज संवाददाता।** डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मत्स्यकी महाविद्यालय, ढोली में मंगलवार को मत्स्य पालन व्यवसाय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन कृषि स्नातकोत्तर के अधिष्ठाता (डीन) डॉ.मयंक राय ने किया। अध्यक्षता महाविद्यालय के डीन डॉ.पीपी श्रीवास्तव ने किया।

मौके पर डॉ.मयंक राय ने कहा कि मछली पालन व इससे जुड़ा व्यवसाय कर लोग आत्मनिर्भर बन सकते है। इसमें सरकार व विवि हरसंभव सहयोग में जुटा है। उन्होंने कहा कि मछली पालन के अलावा इसका उत्पाद व बीज का निर्माण, ऑरनामेंटल मछली जैसे कई कारोबार को अपनाकर लोग आर्थिक रूप से सबल हो सकते हैं।

**06** दिवसीय प्रशिक्षण का ढोली में हुआ आयोजन

- कृषि विवि के डीन ने किया संबोधित
- 30 प्रशिक्षणार्थी हो रहे ट्रेनिंग में शामिल

महाविद्यालय के डीन डॉ.पीपी श्रीवास्तव ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि सरकार व विवि का यह प्रयास स्वाबलंबी बनाने में अहम भूमिका निभायेगा।

उन्होंने प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान को जमीन पर उतारने व अन्य लोगो को प्रेरित करने, समूह बनाकर कार्य करने की अपील की। प्रशिक्षण में मुजफ्फरपुर जिले के चयनित 30 प्रशिक्षणार्थी हिस्सा ले रहे हैं। मौके पर वैज्ञानिक डॉ.शिवेन्द्र कुमार, डॉ.राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ.मुकेश कुमार सिंह, डॉ.अनिरुद्ध कुमार, डॉ.मोगलेकर एच.एस, डॉ.प्रवेश कुमार, डॉ.सुजीत कुमार नायक, डॉ.तनुश्री घोड़ई, रोशन कुमार राम, विनोद कुमार, साजन कुमार भारती मौजूद थे।

**Hindustan 05-03-2025**

# केवीके के तकनीकी मार्गदर्शन में उन्नत टमाटर उत्पादन

**मझौलिया।**कृशि विज्ञान केंद्र मधोपुर के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रधान डॉ. अभिशेक प्रताप सिंह एवं विशय वस्तु विशेशज्ञ सौरभ दुबे ने किसानों के खेतों का दौरा कर तकनीकी मार्गदर्शन में उगाए गए टमाटर फसल का अवलोकन किया। फसल वर्तमान में बेहतर स्वास्थ्य एवं भारी उत्पादन की अवस्था में है।जिससे किसानों को अच्छे लाभ की संभावना है।टमाटर की खेती में संकर प्रजातियों का चयन, संतुलित उर्वरक प्रबंधन, ड्रिप सिंचाई एवं जैविक कीटनाशकों का उपयोग किया गया, जिससे रोगों एवं कीटों पर प्रभावी नियंत्रण पाया गया।वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रधान डॉ. सिंह ने किसानों को समय-समय पर फसल की निगरानी करने एवं उचित पोशण प्रबंधन अपनाने की सलाह दी, जिससे उत्पादन एवं गुणवत्ता में वृद्धि हो सके। केवीके, मधोपुर किसानों को उन्नत तकनीकों से जोड़कर उनके आय में वृद्धि के लिए निरंतर कार्यरत है।

***Rashtriya Sahara***
***05-03-2025***

अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस होगा बाजार, पहले चरण में सिंघिया, रोसड़ा, शिवाजीनगर एवं खानपुर चिह्नित

# जिले में मत्स्य बाजार की होगी शुरुआत

पूसा, निज संवाददाता। जिला मत्स्यकी पदाधिकारी मो.नियाजुद्दीन ने कहा कि समस्तीपुर में जल्द ही हाईटेक मत्स्य बाजार की शुरूआत होगी। प्रथम चरण में जिले के सिंघिया, रोसड़ा, शिवाजीनगर एवं खानपुर प्रखंड को चिन्हित किया गया है। इसके साथ ही मत्स्य से जुड़े कारोबार को बढ़ावा देने की दिशा में लगातार प्रयास जारी है। इसमें फिश प्रोसेसिंग यूनिट, ऑरनामेंटल फिश, फिश ड्रायर, फिश आहार जैसे कार्यों को अपनाकर लोग आर्थिक रूप से सबल हो सकते हैं। जरूरत है विवि से तकनीकी ज्ञान लेकर सरकार की योजनाओं की योजनाओं को शत-प्रतिशत सफल बनाने की।

वे मंगलवार को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के पंचतंत्र सभागार में बोल रहे थे। मौका था बेहतर उत्पादन के लिए समेकित मत्स्य पालन विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का। उन्होंने कहा कि मछली से जुड़े रोजगार की लगातार बढ़ रही मांग से अब यह उद्योग का रूप ले चुका है। उन्होंने इसके उत्पादन के लिए अनुपयोगी भूमि का भी इस्तेमाल करने पर बल दिया। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ.मयंक राय ने कहा कि मछली उत्पादन के क्षेत्र में बिहार आत्मनिर्भर होने की स्थिति है। अब इसे निर्यातक राज्य के रूप में बढ़ावा देने की जरूरत है। इसमें केन्द्र व राज्य सरकार हरसंभव सहयोग में जुटी है। तो दूसरी ओर विवि तकनीकी व व्यवसायिक ज्ञान से सशक्त कर रहा है।

उन्होंन कहा कि मछली उत्पादन के अलावा उसका बीज समेत अन्य उत्पाद का निर्माण कर बाजार से जुड़कर लोग लाभ कमा सकते हैं। मौके पर वैज्ञानिक पवन शर्मा ने भी संबोधित किया। स्वागत डॉ.फूलचंद एवं संचालन प्रशिक्षण संयोजिका डॉ.विनिता छत्रपति ने किया।

मंगलवार को विवि के पंचतंत्र सभागार में संबोधित करते डीन डॉ.मयंक राय व प्रशिक्षण के दौरान मौजूद प्रतिभागी।

**06** दिवसीय प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

- कहा, मछली पालन अब उद्योग का ले रहा रूप
- इससे जुड़कर युवा कर सकते हैं अच्छी आमदनी

## मछली पालन से होंगे आत्मनिर्भर: डीन

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मत्स्यकी महाविद्यालय, ढोली में मंगलवार को मत्स्य पालन व्यवसाय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन कृषि स्नातकोत्तर के अधिष्ठाता (डीन) डॉ.मयंक राय ने किया। अध्यक्षता महाविद्यालय के डीन डॉ.पीपी श्रीवास्तव ने किया।

मौके पर डॉ.मयंक राय ने कहा कि मछली पालन व इससे जुड़ा व्यवसाय कर लोग आत्मनिर्भर बन सकते है। इसमें सरकार व विवि हरसंभव सहयोग में जुटा है। उन्होंने कहा कि मछली पालन के अलावा इसका उत्पाद व बीज का निर्माण, ऑरनामेंटल मछली जैसे कई कारोबार को अपनाकर लोग आर्थिक रूप से सबल हो सकते हैं।

**06** दिवसीय प्रशिक्षण का ढोली में हुआ आयोजन

- कृषि विवि के डीन ने किया संबोधित
- 30 प्रशिक्षणार्थी हो रहे ट्रेनिंग में शामिल

महाविद्यालय के डीन डॉ.पीपी श्रीवास्तव ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि सरकार व विवि का यह प्रयास स्वाबलंबी बनाने में अहम भूमिका निभायेगा।

उन्होंने प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान को जमीन पर उतारने व अन्य लोगो को प्रेरित करने, समूह बनाकर कार्य करने की अपील की। प्रशिक्षण में मुजफ्फरपुर जिले के चयनित 30 प्रशिक्षणार्थी हिस्सा ले रहे हैं। मौके पर वैज्ञानिक डॉ.शिवेन्द्र कुमार, डॉ.राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ.मुकेश कुमार सिंह, डॉ.अनिरुद्ध कुमार, डॉ.मोगलेकर एच.एस, डॉ.प्रवेश कुमार, डॉ.सुजीत कुमार नायक, डॉ.तनुश्री घोड़ई, रोशन कुमार राम, विनोद कुमार, साजन कुमार भारती मौजूद थे।

**Hindustan 05-03-2025**

# कृषि के व्यापक उत्थान के लिए बजट महत्वपूर्ण : डॉ. राजेश

**पूसा.** डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ मात्स्यिकी महाविद्यालय में कार्यरत सहायक व प्रसिद्ध समाजसेवी डॉ राजेश कुमार ने बिहार सरकार के जारी बजट पर अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि बिहार के चहुंमुखी विकास व कृषि क्षेत्र के व्यापक उत्थान के लिए बिहार का बजट काफी महत्वपूर्ण है. इससे कृषि एवं कृषि से जुडे संबद्ध क्षेत्रों में व्यापक उत्थान एवं विकास की संभावनाएं है.

प्रभात खबर
Thursday, March 6, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67c89e656a86a7eb932b77

# प्रशिक्षु अधिकारियों ने किया केविके बिरौली का भ्रमण

वैज्ञानिकों के साथ प्रशासनिक अधिकारी .

**प्रतिनिधि, पूसा**

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली का कृषि विभाग में नवनियुक्त अनुमंडल कृषि पदाधिकारी एवं सहायक निदेशक व प्रखंड कृषि पदाधिकारी का प्रशिक्षण सह भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इसमें बिहार सरकार द्वारा नवनियुक्त 24 पदाधिकारियों ने भाग लिया. उद्घाटन सत्र के बाद पदाधिकारियों को कृषि विज्ञान केंद्र में अवस्थित विभिन्न इकाइयों का भ्रमण कराया गया. यहां जो भी नई तकनीक कृषि विज्ञान केंद्र परिसर में लगायी गयी है उसके बारे में विस्तृत जानकारी विषय वस्तु विशेषज्ञों ने दी. कार्यक्रम में केंद्र प्रभारी डॉ आरके तिवारी व एसएमएस मौजूद थे.

प्रभात खबर
Thursday, March 6, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67c89e656a86a7eb932b77e5

# गन्ना उत्पादक तकनीक की बारीकियों से अवगत हों : डॉ झा

**प्रतिनिधि, पूसा**

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित ईख अनुसंधान संस्थान के सभागार में गन्ना उत्पादन, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन विषय पर सात दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए नियंत्रक डॉ पीके झा ने कहा कि गन्ना उत्पादकों को उत्पादन की तकनीक के बारीकियों से अवगत होने की जरूरत है. किसान गन्ना के क्षेत्र में पोस्ट हार्वेस्टिंग एवं प्रसंस्करण कर बेहतर लाभ प्राप्त कर सकता है. उद्यमिता की दिशा में कार्य करने की जरूरत है. जिससे सुदूर ग्रामीण परिवेश में बसर करने वाले लोगों को प्रशिक्षित प्रतिभागियों से लाभ दिलाया जा सके. स्वरोजगार को बढ़वा

प्रतिभागियों के साथ वैज्ञानिक.

देते हुए गन्ना के विभिन्न उत्पादों का मूल्य संवर्धन कर उत्पादक अधिकाधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं. गुड़ उद्योग के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं झलक रही है. इससे पहले स्वागत भाषण देते हुए संस्थान के निदेशक डा देवेंद्र सिंह ने कहा कि गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में स्किल डेवलपमेंट का कार्य प्रशिक्षण से होता है. परंपरागत काल में ईख की खेती महज चीनी आधारित ही हुआ करता था. फिलवक्त आधुनिक तकनीक के उपयोग से रोजगारन्मुखी व्यवसाय के रूप में परिलक्षित है. बिहार सरकार गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में मेकेनाइजेशन के लिए आधिकाधिक सब्सिडी दे रही है. गन्ना उत्पादकों को बिहार सरकार का पूर्ण सहयोग मिल रहा है. वैज्ञानिक सह पाठ्यक्रम निदेशक ई. अनुपम अमिताभ ने कहा बिहार सरकार के चौथे कृषि रोड मैप में लागू इस प्रशिक्षण से प्रशिक्षित प्रतिभागियों ने गुड़ प्लांट लगाकर बेहतर आय प्राप्त कर रहे हैं. गुड़ उद्योग के क्षेत्र में बिहार सरकार के इस बार की बजट में ईख अनुसंधान संस्थान पूसा परिसर में सेंटर फॉर एक्सीलेंस स्थापित करना वाकई गन्ना उत्पादकों के लिए बहुत ही खुशी की बात है. इससे रोजगार सृजन में सहूलियत मिलेगी.

संचालन वैज्ञानिक डा सुनीता कुमारी मीणा ने किया. धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डा एसएन सिंह ने किया. मौके पर डा मो. मिनितुल्लाह, डा सीके झा, डा नवनीत कुमार, डा बलवंत कुमार आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Thursday, March 6, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67c89e656a86a7eb932b77d0

# बेहतर व्यक्तित्व का अनुशरण करने की जरूरत

प्रतिनिधि,पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में एक माह तक चलने वाली ओरिएंटेशन प्रोग्राम के तहत मुजफ्फरपुर जिले के प्रशिक्षु पदाधिकारियों के लिए दो दिवसीय नवनियुक्त एवं परीक्ष्यमान पदाधिकारियों के लिए अभिमुखीकरण कार्यक्रम शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए निदेशक अनुसंधान डा अनिल कुमार सिंह ने कहा कि प्रशासनिक महकमे के बेहतर व्यक्तित्व का अनुशरण करने की जरूरत होती है. जिससे अधिकारी अपने कार्य क्षेत्र में ईमानदारी के साथ समयानुसार समुचित निर्णय ले सकते हैं. सामाजिक कार्यों में उपयोग होने वाले तकनीकी ज्ञान से अवगत होने की आवश्यकता होती है. प्रशासनिक दायित्वों के निर्वहन में कर्तव्य परायणता की महती भूमिका होती है. अधिकारियों को अपने सोच में परिवर्तन लाने पर कार्यालय के दैनिक कार्यों में अक्षरशः सफल होते है. भाषण करते हुए शस्य विज्ञान विभाग के प्राध्यापक सह जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केंद्र के निदेशक डा रत्नेश कुमार झा ने कहा कि समय बहुत ही तीव्र गति से गतिमान रहती है. कार्यालय के सभी वरिष्ठ अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर राज्य, जिला एवं प्रखंडों के कार्यों का भलीभांति निष्पादित किया जा सकता है. संचालन करते हुए प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डा विनिता सतपथी ने कहा कि अधिकारियों को अपने पद की गरिमा को बरकरार रखते हुए सरकारी कार्यों का सफल संचालन की जिम्मेवारी मिली है. धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डा फूलचंद ने दिया. मौके पर डा मुकेश कुमार, मुजफ्फरपुर जिला परामर्शी सुनील कुमार शुक्ला, उप परियोजना निदेशक विनोद कुमार सिंह, सुरेश कुमार, सूरज कुमार आदि मौजद थे.

प्रभात खबर
Thursday, March 6, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67c89e656a86a7eb932b77c7

भास्कर 6/3/25 पेज 16

कार्यक्रम • कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में प्रशिक्षण सह भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन

# कृषि में अधिक से अधिक वैज्ञानिक तकनीकों का इस्तेमाल करने से कृषि बनेगी ज्यादा लाभकारी

कार्यक्रम को संबोधित करते वैज्ञानिक।

प्रशिक्षण में मौजूद कृषि पदाधिकारी।

भास्कर न्यूज | पूसा

कृषि विभाग में नवनियुक्त अनुमंडल कृषि पदाधिकारी, सहायक निदेशक तथा प्रखंड कृषि पदाधिकारियों के लिए कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में प्रशिक्षण सह भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण सह भ्रमण कार्यक्रम में बिहार सरकार के कृषि विभाग द्वारा नवनियुक्त 24 पदाधिकारियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र के बाद सभी कृषि पदाधिकारी को कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में अवस्थित विभिन्न इकाइयों एवं प्रक्षेत्रों का भ्रमण कराया गया। केवीके के हेड डॉ. आरके तिवारी समेत कई अन्य वैज्ञानिकों ने कृषि पदाधिकारियों को कृषि की नई-नई तकनीक, कृषि यंत्र, मिट्टी जांच संयंत्र, केंद्र के प्रक्षेत्र में लगाएं गए फलों के बाग, विभिन्न तरह के फसलों आदि के बारे में विस्तार से बताया। इस अवसर पर डॉ. तिवारी ने कृषि पदाधिकारियों से कहा कि हम सभी को एक साथ मिलकर कृषि में अधिक से अधिक कृषि तकनीकों का प्रयोग कराने के लिए किसानों को प्रेरित करना होगा। कृषि में अधिक से अधिक तकनीकों का इस्तेमाल करने से कृषि ज्यादा लाभकारी बन सकती है। उन्होंने कहा कि कृषि में विभिन्न तरह के नए नए तकनीकों के इस्तेमाल से फसल उत्पादन बढ़ने के साथ-साथ कृषि के लागत में भी कमी आती है।

P.T.O

भास्कर 6/3/25 पेज 18

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के मत्स्यकी महाविद्यालय ढोली में कार्यक्रम का आयोजन

# मछलीपालन व उत्पादों को बनाने का कारोबार तेजी से बढ़ रहा : डॉ. स्मृति

## बढ़ाया उत्साह : बाजार में मछली से बने अचार, पापड़, कटलेट की भी अच्छी मांग

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ मत्स्यकी महाविद्यालय ढोली में अनुसूचित जाति से जुड़े मत्स्यपालन किसानों के लिए मछली से बनने वाले विभिन्न उत्पाद के विषय पर चल रहा तीन दिवसीय व्यवहारिक व क्रियाशील प्रशिक्षण कार्यक्रम बुधवार को संपन्न हो गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि पहुंची विवि के सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की पूर्व वैज्ञानिक डॉ. स्मृति रेखा सरकार एवं विशिष्ट अतिथि मत्स्यकी महाविद्यालय ढोली के अधिष्ठाता डॉ.प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने संयुक्त रूप से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले तमाम प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र दिया। मुख्य अतिथि डॉ. स्मृति रेखा सरकार ने कहा कि इस प्रशिक्षण का आयोजन पुसा विवि के कुलपति डॉ. सुविमलेन्दु पाण्डेय के विषेश प्रयास व दिशा-निर्देश पर राष्ट्रीय मत्स्यकी विकास बोर्ड हैदराबाद तेलंगाना के द्वारा किया गया था। इसमें जीविका द्वारा चयनित मुजफ्फरपुर जिले के 25 अनुसूचित जाति से जुड़े मत्स्यपालन किसानों ने भाग लिया हैं। उन्होंने कहा कि मछलीपालन व मछलियों से विभिन्न तरह के उत्पाद को बनाने का कारोबार इन दिनों काफी लोकप्रिय व्यवसाय के रूप में उभर रहा है। बाजार में मछलियों से बने अचार, पापड, कटलेट, सेव आदि की भी खूब बिक्री हो रही है। प्रशिक्षणार्थी मछलियों से ऐसे उत्पाद बनाकर उसका कारोबार शुरू करते हुए काफी अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। मत्स्यकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने सर्वप्रथम सभी प्रशिक्षणार्थियों को मत्स्यपालन करने तथा मछलियों से उत्पाद बनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा की प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण से अर्जित ज्ञान का प्रयोग कर मछलियों से विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पादों को बनाकर स्वरोजगार के माध्यम से जुड़कर बेहतर लाभ कमा सकते हैं।

प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र देती मुख्य अतिथि व अन्य।

### मत्स्यपालन का व्यवसाय आमदनी प्राप्त करने का उभरता विकल्प

उन्होंने कहा कि मत्स्यपालन का व्यवसाय ग्रामीण स्तर पर आमदनी प्राप्त करने का एक उभरता हुआ विकल्प है। उन्होंने कहा कि सभी प्रशिक्षणार्थी अपने घरों पर जाकर अपने अपने पड़ोसियों को भी मत्स्य पालन हेतु जागरूक करें। विगत तीन दिनों के प्रशिक्षण के दौरान खासकर प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. तनुश्री घोड़ई ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को मछली से बनने वाले विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पाद जैसे मछली अचार, कटलेट, बिस्कुट आदि बनाने की जानकारी व्यवहारिक व क्रियाशील रूप से दी। मौके पर जीविका प्रखंड परियोजना प्रबंधक अर्चना शर्मा, जीविकोपार्जन विशेषज्ञ साकेत कुमार कर्ण, मत्स्य वैज्ञानिक डॉ. शिवेन्द्र कुमार, डॉ.सुजीत कुमार नायक के अलावे रोशन कुमार राम, महाविद्यालय कर्मी डॉ. राजेश कुमार, अंशु शर्मा, साजन कुमार भारती, नितेश कुमार, विनोद कुमार आदि मौजूद थे।

दैनिक जागरण 6/3/25 पेज 4

# गन्ना के क्षेत्र में पोस्ट हार्वेस्टिंग व प्रसंस्करण से बेहतर लाभ प्राप्त कर सकते किसान

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय अंतर्गत ईख अनुसंधान संस्थान के सभागार में गन्ना उत्पादन, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन विषय पर सात दिवसीय प्रशिक्षण की शुरूआत हुई। प्रशिक्षण की अध्यक्षता करते हुए नियंत्रक डा. पीके झा ने कहा कि किसान गन्ना के क्षेत्र में पोस्ट हार्वेस्टिंग एवं प्रसंस्करण कर बेहतर लाभ प्राप्त कर सकता है। उद्यमिता की दिशा में कार्य करने की जरूरत है। जिससे सुदूर ग्रामीण परिवेश में बसर करने वाले लोगों को प्रशिक्षित प्रतिभागियों से लाभ दिलाया जा सके। स्वरोजगार को बढ़ावा देते हुए गन्ना के विभिन्न उत्पादों का मूल्य संवर्धन कर उत्पादक अधिकाधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। गुड़ उद्योग के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं झलक रही है। मौके पर उपस्थित संस्थान के निदेशक डा. देवेंद्र सिंह ने कहा कि परंपरागत काल में ईख की खेती महज चीनी आधारित ही हुआ करता था। जबकि वर्तमान में आधुनिक तकनीकों के उपयोग से रोजगारन्मुखी व्यवसाय के रूप में परिलक्षित है। बिहार सरकार गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में मेकेनाइजेशन के लिए अधिकाधिक सब्सिडी दे रही है। वैज्ञानिक सह पाठ्यक्रम निदेशक ई अनुपम अमिताभ ने कहा बिहार सरकार के चौथे कृषि रोड मैप में लागू इस प्रशिक्षण से प्रशिक्षित प्रतिभागियों ने गुड़ प्लांट लगाकर बेहतर आय प्राप्त कर रहे है। गुड़ उद्योग के क्षेत्र में बिहार सरकार के इस बार की बजट में ईख अनुसंधान संस्थान पूसा परिसर में सेंटर फार एक्सीलेंस स्थापित करना वाकई गन्ना उत्पादकों के लिए बहुत ही खुशी की बात है। इससे रोजगार सृजन में सहूलियत मिलेगी। संचालन विज्ञानी डा. सुनीता कुमारी मीणा ने की। धन्यवाद ज्ञापन विज्ञानी डा. एसएन सिंह ने किया। मौके पर डा. मो मिनितुल्लाह, डा सीके झा, डा नवनीत कुमार, डा बलवंत कुमार आदि मौजूद रहे।

कार्यक्रम में मौजूद मुख्य अतिथि व प्रशिक्षणार्थी • जागरण

## नवनियुक्त कृषि अधिकारी किए गए प्रशिक्षित

संवाद सहयोगी, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय अंतर्गत संचालित कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में कृषि विभाग में नवनियुक्त अनुमंडल कृषि पदाधिकारी, सहायक निदेशक तथा प्रखंड कृषि पदाधिकारी का कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली परिषद में प्रशिक्षण सह भ्रमण कार्यक्रम बुधवार को आयोजित हुई। प्रशिक्षण सह भ्रमण कार्यक्रम में बिहार सरकार द्वारा नवनियुक्त 24 पदाधिकारी सम्मिलित हुए। कृषि विज्ञान केंद्र के मुख्य वैज्ञानिक सह कार्यक्रम समन्वयक डा. आरके तिवारी ने नवनियुक्त कृषि पदाधिकारी को कृषि की नवीनतम तकनीक की जानकारी दी। साथ ही बदलते जलवायु एवं जलवायु अनुकूल कृषि के संबंध में किसान को प्रेरित करने के बारे में भी विस्तारपूर्वक बताया। प्रशिक्षण के उपरांत केंद्र के विभिन्न कृषि प्रक्षेत्र का भ्रमण कराया गया। मौके पर केंद्र के सभी वैज्ञानिक एवं वास्तु विशेषज्ञ मौजूद थे।

कृषि विज्ञान केंद्र में भ्रमण के दौरान मौजूद लोग • जागरण

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 9 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ तथा मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 29 से 31 डिग्री व न्यूनतम 15 से 17 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 06 मार्च | 27.4 | 13.5 |
| 07 मार्च | 28.0 | 13.5 |
| | दरभंगा | |
| 06 मार्च | 28.0 | 13.5 |
| 07 मार्च | 28.0 | 14.0 |
| | पटना | |
| 06 मार्च | 30 | 15.0 |
| 07 मार्च | 30 | 15.0 |

डिग्री सेल्सियस में

# कृषि आधारित उद्योगों के विकास में अधिकारियों की भूमिका अहम

**कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली में नवचयनित कृषि अधिकारियों का प्रशिक्षण आयोजित**

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि से जुड़े कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के प्रमुख डॉ.आरके तिवारी ने कहा कि राज्य में कृषि व कृषि आधारित उद्योग के विकास की अपार संभावनाएं हैं। इसमें कृषि अधिकारियों की भूमिका अहम है। वे किसान व सरकार के बीच की कड़ी है। जो सरकार की योजनाओं को किसान व कृषि आधारित उद्यमियों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। जरूरत है अपने ज्ञान व प्रतिभा का समुचित उपयोग कर देश के अन्नदाताओं को आर्थिक रूप से सबल व सझम बनाने की दिशा में पहल करने की। वे बुधवार को केन्द्र के सभागार में कृषि विभाग में नवनियुक्त अनुमंडल कृषि पदाधिकारी, सहायक निदेशक एवं प्रखंड कृषि पदाधिकारियों को संबोधित कर रहे थे। मौका था नवचयनित अधिकारियों को कृषि व उससे जुड़ी तकनीकों की जानकारी के लिए प्रशिक्षण सह भ्रमण कार्यक्रम का। उन्होंने कहा कि सरकार की योजनाओं व किसानो की जरूरतों को ध्यान में रखकर कार्यों को गति देने की जरूरत है। जिससे किसान आसानी से योजनाओं का लाभ ले सके। साथ ही सरकार की योजनाएं भी शत-प्रतिशत सफल रहे। इस दौरान विषय वस्तु विशेषज्ञों ने कृषि से जुड़ी समस्याओं का निदान किया। बाद में अधिकारियों के दल को केन्द्र का भ्रमण कराते हुए विस्तार से जानकारी दी गई। मौके पर वैज्ञानिक भारती उपाध्याय, सुमित कुमार सिंह, डॉ.धीरू कुमार तिवारी, ई.विनिता कश्यप, वर्षा कुमारी आदि मौजूद थे।

कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली में नवचयनित अधिकारियों के साथ केविके के वैज्ञानिक। • हिन्दुस्तान

**Hindustan 06-03-2025**

दिल्ली के पूर्व उपराज्यपाल ले.तेजेन्द्र खन्ना व पद्मश्री डॉ.रवि प्रकाश सिंह ने बीसा फॉर्म का किया निरीक्षण

# खेती की लागत कम करने पर हो ध्यान

**कृषि विवि**

**पूसा, निज संवाददाता।** दिल्ली के पूर्व उपराज्यपाल ले.तेजेन्द्र खन्ना व पद्मश्री डॉ.रवि प्रकाश सिंह ने पूसा स्थित बोरोलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया (बीसा) पूसा का दौरा किया। इस दौरान, ले. तेजेन्द्र खन्ना ने बीसा में संचालित हैप्पी सीडर के प्रदर्शन को गंभीरता से अवलोकन किया। साथ ही संरक्षित कृषि एवं शून्य जुताई(जीरो टिलेज) पर बीसा के वैज्ञानिको के प्रयास की सहाहना की।

उन्होंने मोटे अनाज और संकर मक्का बीज उत्पादन में सीमिट-बीसा की पहल की चर्चा करते हुए भविष्य के लिए बेहतर परिणाम देने वाला बताया। वहीं पद्मश्री डॉ.रवि प्रकाश सिंह ने गेहूं के परीक्षण और जलवायु अनुकूल गेहूं की विभिन्न किस्मों का निरीक्षण किया। इस दौरान मौके पर मौजूद बीसा, के प्रमुख डॉ.राजकुमार जाट ने संरक्षित कृषि, डिजिटल कृषि और जलवायु अनुकूल कृषि के क्षेत्र में बीसा में किये जा रहे कार्यो व उसके परिणामों से अवगत कराया। मौके पर सीमिट मेक्सिको के वनस्पति रोग विज्ञान प्रमुख वैज्ञानिक डॉ.पवन ने भी समुचित सुझाव दिया।

बीसा वैज्ञानिक डॉ.सुनील ने अतिथियों को कृषि में ड्रोन प्रौद्योगिकी के उपयोग, किसानो की जरूरत व पर्यावरण में इसकी भूमिका पर विस्तार से चर्चा की। मौके पर वक्ताओं ने कहा कि खेती को लाभकारी बनाने के लिए उसकी लागत को कम करने की जरूरत है। इस दिशा में बीसा बेहतर प्रयास कर रहा है। इस अवसर पर वैज्ञानिक डॉ.मनीष कुमार, डॉ. विजय मीना, डॉ. चौधरी, डॉ. पलानीसामी, डॉ. शुभम, सुभायन दास, कृषि विवि के वैज्ञानिक डॉ.शंकर झा आदि उपस्थित थे।

बुधवार को केंद्रीय कृषि विवि पूसा के बीसा प्रक्षेत्र का निरीक्षण करते पूर्व उपराज्यपाल तेजेन्द्र खन्ना व अन्य। मत्स्यकी कॉलेज में प्रामणपत्र के साथ प्रशिक्षणार्थी।

## मछलीपालकों को दिया गया प्रमाणपत्र

**06** दिवसीय प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

- कहा, मछली पालन अब उद्योग का ले रहा रूप
- इससे जुड़कर युवा कर सकते हैं अच्छी आमदनी

**पूसा, निज संवाददाता।** मत्स्यकी महाविद्यालय, ढोली में मछली से बनने वाले उत्पाद विषयक त्रि-दिवसीय व्यवहारिक एवं क्रियाशील प्रशिक्षण बुधवार को संपन्न हुआ। इस दौरान अतिथियों ने प्रशिक्षुओं के बीच प्रमाण-पत्र का वितरण किया।

डीन डॉ.पीपी श्रीवास्तव की अध्यक्षता में आयोजित समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद सामुदायिक विज्ञान कॉलेज की वैज्ञानिक डॉ.स्मृति रेखा सरकार ने कहा कि मत्स्य पालन से जुड़े रोजगार की अपार संभावनाएं है। यह आत्मनिर्भर बनाने के साथ आर्थिक रूप से सशक्त करने में अहम भूमिका निभाता है। उन्होंने मछलियों से बनने वाले उत्पादो की चर्चा करते हुए कहा कि इसकी मांग लगातार बढ़ रही है। मौके पर प्रशिक्षण संयोजिका डॉ.तनुश्री घोड़ई, जीविका बीपीएम सुश्री अर्चना शर्मा, जीविकोपार्जन विषेशज्ञ साकेत कुमार कर्ण आदि मौजूद थे।

### गुड़ उत्पादन में अपार संभावनाएं :नियंत्रक

पूसा। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के नियंत्रक डॉ.पीके झा ने कहा कि गुड़ उत्पादन व इससे जुड़े रोजगार की राज्य में अपार संभावनाएं है। इसके विकास गति को तेज करने के लिए राज्य सरकार लगातार प्रयासरत है। जरूरत है किसानो व इससे जुड़े लोगों को प्रशिक्षण लेकर इसको व्यवसायिक रूप देने की। जिससे सरकार की यह महत्वाकांक्षी योजना सफल होने के साथ इससे जुड़े लोग भी आर्थिक रूप से सबल व सक्षम हो सके। वे बुधवार की शाम ईख अनुसंधान संस्थान, पूसा के सभागार में सीवान, गोपालगंज, समस्तीपुर, मोतिहारी, बेतिया आदि से आये प्रशिक्षुओं को संबोधित कर रहे थे। मौका था गन्ना उत्पादन, प्रसंस्करण एवं मूल्य सवर्धन विषय पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का।

**Hindustan 06-03-2025**

# खबरें एक नजर में

## नवनियुक्त प्रशिक्षु कृषि पदाधिकारियों ने किया केवीके बिरौली का भ्रमण

**समस्तीपुर/पूसा।** जिले के पूसा स्थित डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में कृषि विभाग में नवनियुक्त अनुमंडल कृषि पदाधिकारी, सहायक निदेशक तथा प्रखंड कृषि पदाधिकारी का प्रशिक्षण सह भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्य में बिहार सरकार द्वारा नवनियुक्त 24 पदाधिकारी ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर सबसे पहले स्वागत की औपचारिकता व विधिवत उद्घाटन के बाद सभी प्रशिक्षु पदाधिकारियों को कृषि विज्ञान केंद्र में अवस्थित विभिन्न इकाइयों का भ्रमण कराया गया। इस दौरान विषय वस्तु विशेषज्ञों ने तथा केविके परिसर में स्थापित विभिन्न तकनीकों के बारे में उन्हें विस्तृत जानकारी दी। मौके पर केंद्र प्रभारी डॉ आरके तिवारी एवं सभी विषय वस्तु विशेषज्ञ मौजूद थे।

वैज्ञानिकों के साथ प्रशासनिक अधिकारी।

**Rashtriya Sahara 06-03-2025**

# प्रत्येक घटना से कुछ न कुछ सीखने के लिए तैयार रहने वाले पदाधिकारी होते हैं सफल : डॉ अनिल

**समस्तीपुर/पूसा (एसएनबी)।** प्रशासनिक महकमे में दायित्व के प्रति प्रतिबद्धता, समयपालन, कर्तव्यपरायणता अपने अधीनस्थों के प्रति आदर्श व्यवहार महत्वपूर्ण है। डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविधालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में 30 दिवसीय ओरियंटेशन प्रोग्राम के तहत मुजफ्फरपुर जिले के प्रशिक्षु अधिकारियों एवं पदाधिकारियों के लिए दो दिवसीय अभिमुखीकरण कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए निदेशक

कार्यक्रम में शामिल वैज्ञानिक व प्रशिक्षु अधिकारी।

अनुसंधान डॉ अनिल कुमार सिंह ने उक्त बाते कही। उन्होंने कहा कि ये वे गुण है जिससे अपने सहकर्मियों के बीच लोकप्रिय अधिकारी अपने कार्य क्षेत्र में ईमानदारी के साथ समयानुसार समुचित व त्वरित निर्णय लेकर सफलतापूर्वक ससमय कार्य संपादित कर सकते है। पदाधिकारियों को सामाजिक कार्यो में उपयोग होने वाले तकनीकी ज्ञान से अवगत होने की भी आवश्यकता होती है। जीवन में हर पल प्रत्येक घटना से कुछ न कुछ सीखने केलिए तैयार रहने वाले पदाधिकारी सफल होते हैं। स्वागत संबोधन के दौरान शश्य विज्ञान विभाग के प्राध्यापक सह जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा ने कहा कि समय बहुत ही तीव्र गति से गतिमान रहती है। कार्यालय के सभी वरिष्ठ अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर राज्य, जिला एवं प्रखंडों के कार्यो का भलीभांति निष्पादित किया जा सकता है। वहीं कार्यक्रम का संचालन करते हुए प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डॉ बिनीता सतपथी ने कहा कि अधिकारियों को अपने पद की गरिमा को बरकार रखते हुए सरकारी कार्यो के सफल संचालन की जिम्मेवारी मिली है। धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ फूलचंद ने दी। मौके पर डॉ मुकेश कुमार के अलावे मुजफ्फरपुर जिला परामर्शी सुनील कुमार शुक्ला, उप परियोजना निदेशक बिनोद कुमार सिंह सहित टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, सूरज कुमार आदि मौजूद थे।

**Rashtriya Sahara**
**06-03-2025**

# सजावटी मछली व्यवसाय में महिलाओं की भूमिका अहम : डॉ पीपी श्रीवास्तव

वैज्ञानिक के साथ प्रशिक्षु.

**प्रतिनिधि, पूसा**

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ मात्स्यिकी महाविद्यालय के सभागार में सजावटी मछलीपालन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण की शुरुआत की गयी. वहीं मत्स्यपालन, प्रसंस्करण एवं उत्पादों का निर्माण विषय पर चल रहे छह दिवसीय प्रशिक्षण का प्रमाण पत्र वितरण के साथ संपन्न हुआ. अध्यक्षता करते हुए अधिष्ठाता डॉ पीपी श्रीवास्तव ने कहा कि महिला प्रशिक्षणार्थी सजावटी मछलियों के प्रजनन, पालन का तकनीकी और क्रियाशील प्रशिक्षण अर्जित कर प्राप्त ज्ञान से स्वरोजगार अपनाकर बेहतर लाभ प्राप्त कर सकती हैं. सजावटी मत्स्यपालन व्यवसाय का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है. महिलाएं कम लागत में एक्वेरियम निर्माण कार्य शुरू कर अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकती है.

प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रशिक्षणार्थी अपनी तकनीकी ज्ञान को अन्य मत्स्यपालकों तक पहुंचाने का संकल्प लें. प्रशिक्षणार्थी से आह्वान किया कि वे सजावटी मछलियों का मत्स्यपालन कार्य एवं एक्वेरियम व्यवसाय अवश्य करें व समाज में अन्य लोगों को भी स्वरोजगार हेतु प्रेरित करें. मौके पर समस्तीपुर जिले के चयनित 25 प्रशिक्षणार्थियों ने हिस्सा लिया. उद्घाटन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शस्य विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. इन्दु भूषण पाण्डेय थे. मौके पर मात्स्यिकी महाविद्यालय के शिक्षक डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ. मुकेश कुमार सिंह, डॉ. तनुश्री घोड़ई, डॉ प्रवेश कुमार, प्रशिक्षण संयोजक रोशन कुमार राम, महाविद्यालयकर्मी डॉ. राजेश कुमार, विनोद कुमार, साजन कुमार भारती आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Friday, March 7, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67c9f5c4d5b00ec23340b268

भास्कर 7/3/25 पेज 13

कृषि • गन्ना उत्पादन, प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन विषय पर किसानों के लिए सात दिवसीय प्रशिक्षण

# गन्ना उत्पादन तकनीक की बारीकियों से कराया अवगत

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पुसा के अधीनस्थ गन्ना अनुसंधान संस्थान के परिसर में गन्ना उद्योग विभाग बिहार सरकार द्वारा गन्ना उत्पादन, प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन विषय पर किसानों के लिए चलाएं जा रहे सात दिवसीय प्रशिक्षण के दूसरे दिन गन्ना वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रायोगिक व सैद्धांतिक जानकारी दी। इस अवसर पर कार्यक्रम में पहुँचे विवि के नियंत्रक डॉ. पीके झा ने कहा कि प्रशिक्षणार्थियों को खासकर गन्ना उत्पादन तकनीक के बारीकियों से अवगत होने की जरूरत है। प्रशिक्षणार्थी किसान गन्ना के क्षेत्र में पोस्ट हार्वेस्टिंग और प्रसंस्करण कर गन्ना से बेहतर लाभ प्राप्त कर सकते है। उन्होंने कहा कि गन्ना किसानों को इस क्षेत्र में उद्यमिता की दिशा में भी कार्य करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि किसान स्वरोजगार को बढ़ावा देते हुए गन्ना के विभिन्न उत्पादों का मूल्य संवर्धन कर अधिकाधिक लाभ प्राप्त कर सकते है। उन्होंने कहा कि गुड़ उद्योग के क्षेत्र में भी रोजगार की अपार संभावनाएं है।

प्रशिक्षणार्थियों के साथ वैज्ञानिक।

गन्ना संस्थान के निदेशक डा. देवेंद्र सिंह ने प्रशिक्षणार्थियों से कहा कि परंपरागत काल में ईख की खेती महज चीनी उत्पादन के लिए की जाती थी। हालांकि अब वो दौर खत्म हो गया हैं। आज के समय में गन्ना से चीनी तो बनती ही है। इसके अलावे गन्ने से कई तरीके के गुड़, गुड़ से सिरप, गन्ने के गूदे से कागज आदि बनते हैं। उन्होंने कहा कि बिहार सरकार गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में मेकेनाइजेशन के लिए किसानों को अधिकाधिक सब्सिडी भी दे रही है। वैज्ञानिक सह पाठ्यक्रम निदेशक ई. अनुपम अमिताभ ने कहा की प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद छोटे स्तर पर गुड़ प्लांट लगाकर इसका कारोबार करते हुए बेहतर आय प्राप्त कर सकते है। उन्होंने कहा कि गुड़ उद्योग क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए बिहार सरकार ने इस बार की बजट में ईख अनुसंधान संस्थान पूसा के परिसर में सेंटर फॉर एक्सीलेंस स्थापित करने की घोषणा की हैं। सरकार का यह फैसला वाकई में गन्ना उत्पादकों के लिए खुशी का इजहार करने वाला है। उन्होंने कहा कि सेंटर फॉर एक्सीलेंस स्थापित होने से गन्ना उत्पादन, प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं काफी बढ़ जाएंगी। मौके पर डा. सुनीता कुमारी, वैज्ञानिक डा. एसएन सिंह, डा. मो. मिनितुल्लाह, डा. सीके झा, डॉ. नवनीत कुमार, डा. बलवंत कुमार आदि मौजूद थे।

-पढ़ें पेज 7 पर

भास्कर खास | खादी इंडिया के माध्यम से अन्य देशों में भेजा जा रहा, बाजार में इसकी अच्छी डिमांड

# हल्दी, चुकंदर, गेंदा और पालक से हर्बल गुलाल बना रहा पूसा विवि, 25 देशों में की जा रही इसकी सप्लाई

**भास्कर न्यूज़ | पूसा (समस्तीपुर)**

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के अपशिष्ट प्रबंधन विभाग में हल्दी, चुकंदर, गेंदा फूल, पालक और हरी सब्जियों से हर्बल गुलाल बनाया जा रहा है। विवि के वैज्ञानिक ग्रामीण महिलाओं को इसका प्रशिक्षण भी दे रहे हैं। सौ रुपए की न्यूनतम लागत से हर्बल गुलाल बनाने और बेचने का काम लोगों को खूब पसंद आ रहा है। पूसा विवि के अपशिष्ट प्रबंधन विभाग की प्रोजेक्ट डायरेक्टर और वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. संगीता देव ने बताया कि हल्दी, चुकंदर और पालक से गुलाल बनाना आसान है। हल्दी से गुलाल बनाने के लिए कच्ची हल्दी को साफ कर उसका छिलका हटाया जाता है। फिर जूसर मशीन से रस निकालकर उसमें अरारोट मिलाया जाता है। इस मिश्रण को धूप में सुखाने के बाद तुलसी और लेमनग्रास का फ्लेवर मिलाया जाता है। तैयार पाउडर की पैकिंग कर दी जाती है। यह हर्बल गुलाल पूरी तरह सुरक्षित और पर्यावरण के अनुकूल है। वैज्ञानिक डॉ. वीणा शाही ने बताया कि गुलाबी गुलाल चुकंदर से और हरा गुलाल पालक से बनाया जाता है। फिलहाल विवि में पीला, हरा और गुलाबी गुलाल तैयार किया जा रहा है। इसकी बाजार में अच्छी मांग है।

## अवसर... विवि के वैज्ञानिक ग्रामीण महिलाओं को इसका प्रशिक्षण भी दे रहे

हर्बल गुलाल बनाने का प्रशिक्षण लेतीं महिलाएं।

पूसा विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडे ने बताया कि हर्बल गुलाल की मांग इतनी बढ़ गई है कि इसे खादी इंडिया के माध्यम से 25 से अधिक देशों में भेजा जा रहा है। 2023 में विवि ने खादी इंडिया के साथ समझौता किया था, ताकि उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाजार मिल सके। उन्होंने कहा कि खासकर होली के दौरान हर्बल गुलाल की मांग तेजी से बढ़ रही है। खादी इंडिया के जरिए विवि के अन्य उत्पाद जैसे लीची मधु, मर्चा धान का चूड़ा, मशरूम उत्पाद भी देशभर में बेचे जा रहे हैं। पूसा विवि और यहां के वैज्ञानिकों द्वारा बनाए गए कई अन्य उत्पाद भी देश-विदेश में लोकप्रिय हो रहे हैं।

भास्कर 7/3/25 पेज 12

# चहुंमुखी विकास व कृषि क्षेत्र के व्यापक उत्थान के लिए बजट महत्वपूर्ण

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के मत्स्यकी महाविद्यालय ढोली में कार्यरत अधिष्ठाता के निजी सहायक, प्रसिद्ध समाजसेवी, लेखक व विश्लेषक डॉ. राजेश कुमार ने बिहार सरकार द्वारा जारी किए गए बजट पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि बिहार बजट राज्य के चहुंमुखी विकास व कृषि क्षेत्र के व्यापक उत्थान के लिए काफी महत्वपूर्ण है। इस बजट से कृषि एवं कृषि से जुड़े संबद्ध क्षेत्रों में व्यापक उत्थान होगा व विकास की संभावनाएं भी बढ़ेगी। उन्होंने खासकर बजट में पास किये गए पूसा विवि के गन्ना अनुसंधान संस्थान में स्थापित होने वाले सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के लिए राज्य सरकार के प्रति गहरा आभार व्यक्त किया है।

भा-भा 7/3/25 पेज 14

# सजावटी मछलियों का पालन व प्रजनन कारोबार महिला किसानों के लिए लाभकारी : डॉ. इंदु भूषण

## महिला किसानों को समृद्ध बनाने के उद्देश्य से सजावटी मछलियों के कारोबार विषय पर प्रशिक्षण

भास्कर न्यूज़ | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ तिरहुत कृषि महाविद्यालय ढ़ोली के परिसर में महिला किसानों को समृद्ध बनाने के उद्देश्य से सजावटी मछलियों के पालन और प्रजनन के विषय पर व्यवहारिक व क्रियाशील प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत राष्ट्रीय मत्स्यकी विकास बोर्ड हैदराबाद तेलंगाना द्वारा शुरू किए गए इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे सस्य विज्ञान विभाग महाविद्यालय ढ़ोली के प्रोफेसर डॉ. इंदु भूषण पाण्डेय एवं मात्स्यिकी महाविद्यालय ढोली के अधिष्ठाता डॉ. प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. इंदु भूषण पाण्डेय ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि सजावटी मछलियों का पालन व प्रजनन का कारोबार खासकर महिला किसानों के लिए अत्यंत ही लाभकारी हैं। इस व्यापार से जुड़कर ग्रामीण महिलाएं अपनी आर्थिक स्थिति को पहले से ज्यादा बेहतर बना सकती हैं। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण में खासकर महिलाओं को कम लागत में एक्वेरियम के निर्माण करने की जानकारी भी विशेषज्ञों के द्वारा दी जाएगी। महिलाएं एक्वेरियम निर्माण के कार्य को सीखकर इसका कारोबार भी शुरू कर सकती है। उन्होंने सभी प्रशिक्षणार्थी से आह्वान किया की वे सजावटी मछलियों के पालन व प्रजनन कार्य एवं एक्वेरियम बनाने के कार्य को एक व्यवसाय के रूप में अविलंब शुरु करें तथा अपने आस पास के लोगों को भी इसके बारे में बताएं। इस प्रशिक्षण में समस्तीपुर जिले से चयनित कुल 25 महिला किसान भाग ले रही हैं। मौके पर मत्स्यकी महाविद्यालय से जुड़े मत्स्य वैज्ञानिक डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ. मुकेश कुमार सिंह, डॉ.तनुश्री घोड़ई, डॉ. प्रवेश कुमार, प्रशिक्षण संयोजक रोशन भी थे।

प्रशिक्षणार्थियों के साथ मुख्य अतिथि व अन्य वैज्ञानिक।

# हल्दी, चुकंदर और पालक से बन रहा हर्बल अबीर, मिला प्रशिक्षण

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अपशिष्ट प्रबंधन विभाग द्वारा हल्दी, चुकंदर और हरी साग सब्जियों से हर्बल गुलाल तैयार किए जा रहे हैं, जो न केवल सुरक्षित है, बल्कि पर्यावरण के लिए भी बेहतर है। विश्वविद्यालय ने इस पहल के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को गुलाल बनाने का प्रशिक्षण भी देना शुरू किया है ताकि वे घर बैठे हर्बल गुलाल का निर्माण करके रोजगार कर सकें। यह पहल खासकर उन महिलाओं के लिए है जो ग्रामीण परिवेश में रहते हुए आर्थिक तौर पर सशक्त बनना चाहती हैं।

हल्दी, चुकंदर और पालक से बन रहा गुलाल : विज्ञानी डा. संगीता देव ने बताया कि हल्दी, चुकंदर और पालक से गुलाल बनाने की प्रक्रिया सरल है। इसे घर में छोटे पैमाने पर भी तैयार किया जा सकता है। हल्दी से गुलाल बनाने के लिए कच्ची हल्दी को साफ कर उसका छिलका हटाया जाता है, फिर जूसर मशीन से हल्दी का जूस निकाला जाता है और इसे अरारोट के साथ मिलाया जाता है। इस मिश्रण को 20 से 24 घंटे तक सुखाया जाता है। हल्दी के स्वाद को कम करने के लिए इसमें तुलसी और लेमनग्रास जैसे फ्लेवर भी डाले जाते हैं। इसके बाद, सूखा मिश्रण पाउडर रूप में तैयार होता है, जो सुरक्षित और पर्यावरण के अनुकूल होता है। विज्ञानी डा. वीणा शाही ने बताया कि गुलाबी गुलाल बनाने के लिए चुकंदर का उपयोग किया जाता है, जबकि हरे रंग के गुलाल के लिए पालक के पत्ते का प्रयोग होता है। विश्वविद्यालय में फिलहाल पीला, हरा और गुलाबी गुलाल बनाया जा रहा है, जो बाजार में काफी पसंद किए जा रहे हैं।

- केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय की ओर से दिया जा रहा प्रशिक्षण
- हर्बल गुलाल से त्वचा सुरक्षित पर्यावरण के लिए भी बेहतर

## ग्रामीण महिलाओं को दी जा रही विशेष ट्रेनिंग

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में चार से छह मार्च तक तीन दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें ग्रामीण क्षेत्रों की 25 महिलाओं को हर्बल गुलाल बनाने की ट्रेनिंग दी गई। इन महिलाओं को यह प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया जा रहा है। प्रशिक्षित महिलाएं भविष्य में इसे कुटीर उद्योग के रूप में संचालित कर सकती हैं और होली के दौरान इसे बड़े पैमाने पर बेच सकती हैं। विश्वविद्यालय स्तर पर 100 ग्राम की पैकेट की कीमत 40 रुपये रखी गई है।

## बाजार में बढ़ी डिमांड

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय द्वारा तैयार किए गए हर्बल गुलाल की डिमांड बाजारों में बढ़ रही है। खादी ग्रामोद्योग के माध्यम से इसे देशभर के विभिन्न हिस्सों में बेचा जा रहा है। इससे यह कम खर्च में ज्यादा मुनाफा देने वाला साबित हो रहा है। इस पहल से न केवल पर्यावरण को लाभ हो रहा है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को भी रोजगार के अवसर मिल रहे हैं। आने वाले होली पर्व पर इस हर्बल गुलाल की और अधिक मांग हो सकती है, जो समाज में जागरूकता फैलाने के साथ-साथ एक नई दिशा की ओर कदम बढ़ाने का संकेत है।

प्रशिक्षण में शामिल प्रशिक्षणार्थी व विज्ञानी • जागरण

**Dainik Jagran 07-03-2025**

# RPCAU to promote eco-friendly 'gulal'

**B K Mishra | TNN**

**Patna:** Rajendra Prasad Central Agricultural University (RPCAU) has initiated a pioneering step towards promoting eco-friendly Holi this year by developing and marketing herbal 'gulal'. This initiative is aimed at providing a safer and more environment-friendly alternative to traditional chemical-based 'gulal', said university scientists.

RPCAU scientists said the herbal 'gulal', priced at Rs 40 for 100 grams, is made from natural ingredients such as turmeric, beetroot and spinach. The university has collaborated with Khadi India to market and sell the herbal 'gulal', along with other products like litchi honey, mushroom products and jaggery.

RPCAU's vice-chancellor Punyavrat Suvimalendu Pandey told this newspaper that the university is committed to promoting sustainable and eco-friendly practices. "We have trained many women entrepreneurs who are successfully selling their products, including the herbal 'gulal', through our university and Khadi India," he said.

**The herbal 'gulal', priced at ₹40 for 100 grams, is made from natural ingredients such as turmeric, beetroot and spinach**

The university has also organised a three-day training programme for rural women to educate them on the production and marketing of herbal 'gulal'. This initiative aims to empower rural women and provide them with a source of income.

RPCAU's information officer Kumar Rajyavardhan said the herbal 'gulal' developed by the university has gained popularity in the market, with increasing demand from customers seeking eco-friendly and safe Holi celebration options. "The university's efforts to promote sustainable practices and empower rural women have been widely appreciated," he said.

Times of India dt - 7/03/25

# 12 तक आसमान साफ व मौसम शुष्क रहने की संभावना

**समस्तीपुर.** डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केन्द्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 08-12 मार्च, 2025 तक के लिये मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ तथा मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है. इस अवधि में अधिकतम तापमान 29 से 31 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 14-15 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है. पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 5 से 7 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से 9 एवं 10 मार्च को पूर्वा हवा चलने की संभावना है. अन्य दिनों में पछिया हवा चलने का संभावना है. सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 25 से 35 प्रतिशत रहने की संभावना है.आज का अधिकतम तापमान 26.8 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 2.9 डिग्री सेल्सियस कम रहा. वहीं न्यूनतम तापमान 10.5 डिग्री सेल्सियस रहा,जो सामान्य से 2.3 डिग्री सेल्सियस कम रहा.

प्रभात खबर
Saturday, March 8,
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/

# मछली उत्पाद बना ग्रामीण महिलाओं के जीवकोपार्जन का साधन : डॉ श्रीवास्तव

प्रतिभागियों के साथ वैज्ञानिक.

**पूसा.** डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ मात्स्यिकी महाविद्यालय के सभागार में राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड हैदराबाद तेलंगाना द्वारा प्रायोजित एवं जीविका के माध्यम से चयनित मुजफ्फरपुर जिला के मत्स्यपालकों के लिए आयोजित तीन दिवसीय अनुसूचित जाति समुदाय के लिए मछली उत्पाद तैयार करने विषयक व्यावहारिक एवं क्रियाशील प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हो गया. समारोह में अधिष्ठाता डॉ. प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव व मुख्य अतिथि डॉ. स्मृति रेखा सरकार ने प्रमाण पत्र प्रदान किया. प्रशिक्षणार्थियों को मत्स्य पालन के लिए प्रेरित किया गया. प्रशिक्षणार्थी अर्जित ज्ञान से मछलियों से बनने वाले विभिन्न मूल्यवर्धित उत्पाद को बनाकर स्वरोजगार के माध्यम से बेहतर लाभ प्राप्त कर सकते हैं. मछली उत्पाद ग्रामीण महिलाओं की जीवकोपार्जन का साधन बन रहा है. मौके पर प्रशिक्षण संयोजिका डॉ तनुश्री घोड़ई, जीविका प्रखंड परियोजना प्रबंधक अर्चना शर्मा, जीविकोपार्जन विशेषज्ञ साकेत कुमार कर्ण, मात्स्यिकी महाविद्यालय ढोली के शिक्षक डॉ. शिवेन्द्र कुमार, डॉ. सुजीत कुमार नायक, रोशन कुमार राम, डॉ राजेश कुमार, अंशु शर्मा, साजन कुमार भारती, नितेश कुमार, विनोद कुमार आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Saturday, March 8, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67cb462de2d9ef3bc90a2634

# कला को निखारने के लिए गुरु की जरूरत : डॉ आकांक्षा

**कार्यक्रम**

**प्रतिनिधि, पूसा**

प्रतिभागियों के साथ प्रशिक्षक.

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के तत्वावधान में शिक्षकों का पांच दिवसीय कार्यशाला संपन्न हुआ. अध्यक्षता करते हुए डायट की प्राचार्या डॉ आकांक्षा कुमारी ने कहा कि प्रशिक्षण में आये जिले के विभिन्न प्रखंडों के चयनित शिक्षकों ने अनुशासित होकर कार्यशाला पूर्ण किया है. प्राचार्या डॉ कुमारी ने गुरु शिष्यों के परंपरा पर एक मिसाल पेश करते हुए कहा कि एक शिष्य ने गुरु से सफलता का उपाय पूछा था. गुरु ने शिष्य को बताया था कि किसी भी समस्या को हल करने का तरीका है, लेकिन पहले उसे अपनी जड़ पकड़नी होगी. गुरु ने शिष्य को सलाह दी थी कि अपनी कला पर घमंड न करें. गुरु ने शिष्य को सफलता के सही मायने बताये थे. गुरु-शिष्य की परंपरा से ही शिक्षा और विद्या का प्रसार होता है. गुरु-शिष्य की परंपरा से नई पीढ़ी तक ज्ञान पहुंचता है. गुरु से हमें यह सीख मिलती है कि हम जो कर रहे हैं, वह काम सही है या नहीं. गुरु से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपने कामों के लिए किसी दूसरे की मदद का इंतजार नहीं करना चाहिए. गुरु से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपनी कला को निखारने के लिए गुरु की सलाह माननी चाहिए. कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि डायट मोहनिया के प्रभारी प्राचार्य संजय कुमार ने कहा कि हर व्यक्ति को अपनी योग्यता के हिसाब से ही फल मिलता है. बीते समय को बदल नहीं सकते, इसलिए दुख देने वाली बातों को भूलकर जीवन के अच्छे अनुभवों पर ध्यान लगाना चाहिए. मौके पर मोहनिया डायट के व्याख्याता रविन्द्र कुमार गुप्ता, दीनानाथ राय, डा कंचनमाला, डा रूबी कुमारी, डा विनय कुमार, सना नवाज, शांभवी कुमारी, सेजल सुमन, श्वेता प्रियदर्शिनी, सोनी कुमारी, मलका समरीन, संजना कुमारी, दिव्या भारती, फैयाज अहमद, मो. फसीउद्दीन, ललन कुमार, मो. अरबाज, मो. कबीर, धर्मवीर आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Saturday, March 8, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67cb462de2d9ef3bc90a2634

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 12 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ तथा मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 29 से 31 व न्यूनतम 14 से 15 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 08 मार्च | 26.8 | 10.5 |
| 09 मार्च | 27.0 | 11.0 |
| दरभंगा | | |
| 08 मार्च | 27.0 | 11.0 |
| 09 मार्च | 27.0 | 11.5 |
| पटना | | |
| 08 मार्च | 28 | 12.0 |
| 09 मार्च | 28 | 12.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 08-03-2025

# सामान्य से ज्यादा तापमान में मनेगी होली

संस, जागरण • पूसा : इस बार होली सामान्य से अधिक तापमान में मनेगी। सर्दी के मौसम में तुलनात्मक रूप से कम बारिश हुई। इस कारण तापमान में वृद्धि होगी। मौसम विज्ञानी का कहना है कि इस बार 14-15 मार्च का तापमान 32 से 34 डिग्री के बीच पहुंच जाएगा। ठंड के दौरान पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता में कमी के कारण कम बारिश दर्ज की गई।वैसे, उत्तर बिहार में अभी मौसम साफ रहने की संभावना है। तापमान में हल्की वृद्धि हो सकती है। अगले एक सप्ताह तक मौसम सामान्य रहेगा। वहीं इसके बाद तापमान 32-34 डिग्री के बीच रहेगा। होली सामान्य से अधिक तापमान में खेली जाएगी। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार अगले चार दिनों तक मौसम साफ एवं शुष्क रहेगा। अधिकतम तापमान 29 से 31 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 14-15 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। विश्वविद्यालय के द्वारा शुक्रवार का अधिकतम तापमान 26.08 एवं न्यूनतम तापमान 10.05 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। अधिकतम तापमान सामान्य से लगभग तीन डिग्री एवं न्यूनतम तापमान 2 डिग्री कम रिकार्ड की गई है। इस अवधि में औसतन 5 से 7 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से 9 एवं 10 मार्च को पुरबा हवा चलने की संभावना है। अन्य दिनों में पछिया हवा चलेगी। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने बताया कि 12-13 मार्च तक तापमान 30 से 31 डिग्री तक रहेगा जबकि 14-15 मार्च तक यह तापमान 32 से 34 डिग्री पर पहुंच जाएगा। जो सामान्य से अधिक रहेगा।

> मौसम विज्ञानी का कहना है कि इस बार 14-15 मार्च का तापमान 32 से 34 डिग्री के बीच पहुंच जाएगा

**सरसों की कटनी कार्य को दें प्राथमिकता :** पूर्वानुमानित अवधि में मौसम के शुष्क रहने की संभावना को देखते हुए किसान भाई सरसों की कटनी, दौनी एवं सुखाने के कार्य को उच्च प्राथमिकता दें। आलू की खुदाई कर भंडारित कर लें। रबी मक्का की बाल व मोचा निकलने से दाना बनने की अवस्था वाली फसल में पर्याप्त नमी बनाए रखें। गरमा मूंग तथा उरद की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। बुआई के पूर्व 20 किलो ग्राम नेत्रजन, 45 किलो ग्राम स्फूर, 20 किलो ग्राम पोटाश तथा 20 किलो ग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें।

Dainik Jagran 08-03-2025

# प्रशिक्षण से पढ़ाने में मिलेगी मदद

पूसा, निज संवाददाता। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान(डायट), पूसा के तत्वाधान में चयनित शिक्षकों का अनुसंधान प्रविधि विषय पर कृषि विवि के विद्यापति सभागार में आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुक्रवार की शाम संपन्न हुआ।

इस दौरान शामिल प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। मौके पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए प्राचार्य डॉ.आकांक्षा कुमारी ने कहा कि शोध आधारित इस तरह की कार्यशाला शिक्षको के लिए शायद पहली बार आयोजित की गई है। इसके सहयोग से शिक्षक विद्यालय आधारित समस्याओं को दूर करने के साथ बेहतर शिक्षा व्यवस्था को प्रभावी बना सकते हैं। इससे गुणवत्तायुक्त शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने के साथ बच्चों के मनोभावो को समझ कर उसके निदान की पहल आसान होगी। संचालन डॉ.अंकिता कुमारी एवं संयोजन प्रशांत भाष्कर ने किया। मौके पर डायट मोहनिया के प्रभारी प्राचार्य संजय कुमार समेत रविन्द्र कुमार कुमार गुप्ता, प्रो.दीनानाथ राय, डॉ.रूबी कुमारी, पं.विनय कुमार, प्रो.कंचनमाला, धर्मवीर, पूनम कुमारी, धीरेन्द्र कुमार, फैयाज अहमद, मो.कबीर थे।

प्रशिक्षण के समापन सत्र में मौजूद प्रशिक्षु एवं अतिथिगण।

Hindustan 08-03-2025

# 9 और 10 मार्च को चलेगी पूरवा हवा

पूसा। उत्तर बिहार के जिलों में अगले चार दिनों तक आसमान प्रायः साफ एवं मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। इस अवधि में औसतन 5 से 7 किमी. प्रति घंटा की गति से 9 एवं 10 मार्च को पुरवा एवं अन्य दिनों को पछुआ हवा चलने की संभावना है। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम विभाग ने शुक्रवार को 12 मार्च तक का मौसम पूर्वानुमान जारी किया है। जिसके अनुसार इस अवधि में सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 एवं दोपहर में 25 से 35 प्रतिशत रहने की संभावना है। पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान 29 से 31 डिग्री एवं न्यूनतम 14 से 15 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।

Hindustan 08-03-2025

# नारी सशक्तीकरण का मुख्य स्रोत जीविका दीदी : सांसद

बालाहार लांच करतीं सांसद शांभवी चौधरी व अन्य.

**पूसा.** डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में जीविका के तत्वावधान में कार्यक्रम हुआ. अध्यक्षता करते हुए उप विकास आयुक्त शेखर कुमार प्रियदर्शी ने कहा कि बालाहार सांसद के सहयोग से बहुत ऊंचाइयों पर पहुंचेगा. गरीब परिवार के लिए बच्चों का आहार पूरा करना बहुत बड़ी जिम्मेवारी होती है. मुख्य अतिथि सांसद शांभवी चौधरी ने कहा कि नारी सशक्तिकरण का मुख्य स्त्रोत जीविका दीदी है. समाज के निर्माण में नारी का मुख्य योगदान है. सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ उषा सिंह ने कहा कि सशक्त समाज के निर्माण में सशक्त महिला की अहम भूमिका है. पूसा प्रखंड के 20 जीविका दीदियों को बालाहार निर्माण की जिम्मेवारी दी गई है. जीविका के विक्रांत शंकर ने विषय प्रवेश कराया. स मेहंदी प्रतियोगिता में चयनित महिलाओं को सांसद ने सम्मानित किया. संचालन मोनिका एवं नीतू ने किया. मौके पर ज्योति देवी, फूलो कुमारी आदि मौजूद थीं.

Sunday, March 9, 2025
Samstipur
प्रभात खबर
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67cc7fff26978ed74c49d

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 12 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ तथा मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 29 से 31 व न्यूनतम 14 से 15 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| **समस्तीपुर** | | |
| 09 मार्च | 26.8 | 10.5 |
| 10 मार्च | 27.0 | 11.0 |
| **दरभंगा** | | |
| 09 मार्च | 27.0 | 11.0 |
| 10 मार्च | 27.0 | 11.5 |
| **पटना** | | |
| 09 मार्च | 28 | 12.0 |
| 10 मार्च | 28 | 12.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 09-03-2025

# सामाजिक ढांचा की मजबूती में महिलाओं की भूमिका अहम : अनुपम

**समस्तीपुर/विभूतिपुर (एसएनबी)**। जिले के विभूतिपुर प्रखंड स्थित खदियाही में सामाजिक संस्था दूर देहात द्वारा संचालित कौशल विकास केंद्र के सभागार में शनिवार को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता अनुपम राज ने की। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि सामाजिक ढांचे को मजबूत रखने में महिलाओं की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। मध्य काल के बाद महिलाएं दहलीज की जीनत समझी जाने लगी थी, इसलिए सिर्फ घर के कार्यों को देखती थी।लेकिन अब हालात काफी अलग हैं। उद्यम से राजनीति तक, नौकरी से व्यवसाय तक, खेल, ज्ञान विज्ञान प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं का योगदान बढता दिख रहा है। जो विकास का सूचक है, जो यह बताता है कि महिलाये अपने पुराने सम्मान और प्रतिष्ठा को हासिल करने की दिशा में बढ रही है। मौके पर रूपम कुमारी, संगम कुमारी, रवीना कुमारी, संजना कुमारी, प्रीति कुमारी, रितिका कुमारी, पूनम कुमारी, शमा प्रवीण, छोटी कुमारी, आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। दूर देहात के सचिव प्रभु नारायण झा ने बताया कि सम्पूर्ण का कार्यक्रम का संयोजन संस्था से जुड़ी प्रशिक्षण ले रही युवतियों के द्वारा किया गया था।

Rashtriya Sahara 09-03-2025

# मशरूम उत्पादन की तकनीकी बारीकियों को समझने की जरूरत: डॉ. पीके झा

- हजारीबाग के किसान सीख रहे मशरूम उत्पादन व मूल्य संवर्धन की तकनीक

**प्रतिनिधि, पूसा**

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण की शुरुआत हुई. अध्यक्षता करते हुए विवि के नियंत्रक डॉ. पीके झा ने कहा कि मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में उत्पादकों को तकनीकी बारीकियों को समझने की जरूरत है. औषधीय गुणों से भरपूर होने के कारण मशरूम की मांग देश विदेश में वृहत पैमाने पर बढ़ी है.

आधुनिक युग में लोगों की दिनचर्या बदल गयी है. कृषि के सभी क्षेत्रों का पूर्णरूप से डिजिटलीकरण कर दिया गया है. किसान अपनी खेतों में या फॉर्म में समस्याओं का ऑनलाइन निदान निकालकर लाभान्वित हो रहे हैं. मशरूम उत्पादन, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन के क्षेत्र में किसानों को ज्ञानवर्धन करने की जरूरत है.

प्रतिभागियों के साथ वैज्ञानिक.

प्रशिक्षण सत्र में स्वागत भाषण एवं विषय प्रवेश कराते हुए मशरूम विशेषज्ञ डॉ. दयाराम ने कहा कि मशरूम खेती बिना खेत का बेहतर व्यवसाय के रूप में अपना पहचान विकसित कर चुका है. खासकर बिहार के सभी जिले में मशरूम के उत्पादन से ग्रामीण महिलायें जुड़ चुकी हैं. इन्हें अब देश विदेश के बाजारों में उत्पादों को बेचने की तकनीक से अवगत होने की जरूरत है. बेहतर बाजार के लिए समूह में उत्पादन कर ऑनलाइन बाजार की दिशा में पहल करने की आवश्यकता है.

संचालन वैज्ञानिक डॉ. सुधानंदनी कर रही थी. वहीं धन्यवाद ज्ञापन मशरूम केंद्र प्रभारी वैज्ञानिक डॉ. आरपी प्रसाद ने किया. मौके पर आईएआरआई झारखंड के वरीय वैज्ञानिक डॉ. पंकज कुमार सिन्हा, वरीय वैज्ञानिक डॉ. आशा रानी पटेल, टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, सूरज कुमार, सुभाष कुमार आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Monday, March 10, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67cde7deb40a041d37d31533

# किसानों को सोच में परिवर्तन लाने की जरूरत : डॉ. रामसुरेश

**प्रतिनिधि, पूसा**

प्रतिभागियों के साथ वैज्ञानिक.

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित सेंटर फॉर एक्सीलेंस के सभागार में मिलेट्स के बीज उत्पादन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रामसुरेश ने कहा कि आधुनिक कृषि को अपनाने के लिए किसानों के अपनी सोच में परिवर्तन लाने की जरूरत है. जलवायु परिवर्तन के दौर में तकनीकों में हो रहे बदलाव से किसानों को लाभ लेने की जरूरत है. स्वरोजगार की दिशा में ग्रामीण महिलाएं अव्वल होती है. खासकर मिलेट्स उत्पादन एवं इसके बीज निर्माण में महिलाओं की महती भूमिका है. परंपरागत काल में भी मरूआ, सांमा, कौनी एवं बाजरा की खेती कर बड़े ही शौक से लोग खाने में उपयोग करते थे. देश में लोगों को बढ़ते हुए कुपोषण के दौरान बेहतर स्वास्थ्य की चिंता परेशानी का सबब बनते जा रहा है. इस परेशानी से निपटने के लिए भारत सरकार एवं राज्य सरकार पंजीकृत निजी संगठनों के साथ जुड़कर दर्जनों परियोजना के माध्यम से मिलेट्स उत्पादन की दिशा में किसानों के खेत में बेहतर अनुसंधान कर किसान हित में कार्य किया जा रहा है. डब्लूएचओ के एक आंकड़े के अनुसार विश्व स्तर पर मानवीय रोगों की संख्या सतत बढ़ते जा रहा है. खासकर बिहार में ग्रामीण महिलाएं एवं मासूम बच्चे कुपोषण का शिकार हो रहे रहे हैं. वैज्ञानिक सतत इस दिशा में बेहतर शोध कर रहे हैं. इसी कड़ी में मिलेट्स के तरफ देश के युवा युवतियों का झुकाव देखा जा रहा है. वह समय आ गया है, जिसमें अब मिलेट्स का उत्पाद या व्यंजन नामीगिरामी फाइव स्टार होटल में भी परोसा जा रहा है. देश की कुल आबादी के करीब 70 प्रतिशत लोग कृषि पर आधारित होकर गांव में ही रहते हैं. शेष बचें 30 प्रतिशत की आबादी इन्हीं गांव में बसर करने वाले लोगों पर पूर्णरूप से निर्भर रहते हैं. किसानों को रासायनिक खादों से बचने की जरूरत है. विकल्प के रूप में जैविक खाद के सहारे प्राकृतिक खेती को अपनाने की आवश्यकता है. प्रशिक्षण का विषय प्रवेश कराते हुए परियोजना के मुख्य अन्वेषिका सह वैज्ञानिक डॉ. श्वेता मिश्रा ने कहा कि मिलेट्स के बीज निर्माण में जीविका का आउटलेट पर चल रहे कार्य महत्वपूर्ण है. गुणवत्तापूर्ण बीज के निर्माण से ही बेहतर बाजार की परिकल्पना की जा सकती है. मिलेट्स का फसल एवं बीज उत्पादन में तकनीकों का अंतर है. उसे प्रशिक्षण में समझने की जरूरत है. स्वागत भाषण सह संचालन वैज्ञानिक डॉ. राजीव कुमार श्रीवास्तव ने किया. धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ. कौशल किशोर ने किया. मौके पर वैज्ञानिक डॉ. मीनाक्षी द्विवेदी सहित केंद्र से जुड़े सभी कर्मी मौजूद थे.

प्रभात खबर
Monday, March 10, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67cde7deb40a041d37d31557

# मशरूम बना ब्रांड, किसानों के लिए लोकप्रिय हो गई खेती

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के एडवांस सेंटर आफ मशरूम रिसर्च के परिसर में किसानों के लिए मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन के विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन हुआ। उद्घाटन विश्वविद्यालय के नियंत्रक डा. पीके झा ने किया। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए डा. पीके झा ने कहा कि अब मशरूम उत्पादन खासकर ग्रामीण महिलाओं के जीविकोपार्जन का मुख्य साधन बन चुका है। दिन ब दिन मशरूम की बढ़ती जा रही मांग और मशरूम के सेवन से होने वाले स्वास्थ्य लाभ के कारण इसकी खेती काफी लोकप्रिय हो गई है। उन्होंने कहा कि आज देश के ऐसे लाखों किसान जिनके पास जोत की भूमि न के बराबर हैं। वे सभी कम जगह व कम लागत में मशरूम की खेती कर अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं। मशरूम के वरिष्ठ विज्ञानी डा. दयाराम ने कहा कि मशरूम आज एक बड़ा ब्रांड बन चुका हैं। देश दुनिया के तमाम फाइव स्टार और सेवन स्टार होटलों में आज मशरूम का सेवन लोग जम कर रहे हैं। मंच संचालन सुधा नंदिनी एवं धन्यवाद ज्ञापन केंद्र प्रभारी डा. आर पी प्रसाद ने किया। मौके पर कर्मी सुभाष, मुन्नी, निशा आदि मौजूद रहे।

संबोधित करते मुख्य अतिथि • जागरण

Dainik Jagran 10-03-2025

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 12 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ तथा मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 29 से 31 व न्यूनतम 14 से 15 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| **समस्तीपुर** | | |
| 10 मार्च | 26.8 | 10.5 |
| 11 मार्च | 27.0 | 11.0 |
| **दरभंगा** | | |
| 10 मार्च | 27.0 | 11.0 |
| 11 मार्च | 27.0 | 11.5 |
| **पटना** | | |
| 10 मार्च | 28 | 12.0 |
| 11 मार्च | 28 | 12.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 10-3-25

# बेहतर उत्पादन को अच्छा बीज जरूरी

पूसा,निसं। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के डीन डॉ.राम सुरेश ने कहा कि मौसम के बदलते परिवेश में श्रीअन्न का उत्पादन, प्रसंस्करण व मूल्य संवर्धन समय की मांग है। इस दिशा में सरकार से लेकर वैज्ञानिक तक किसानो को हरसंभव सहयोग देने में जुटे हैं। श्रीअन्न उत्पादन व इससे जुड़े कार्यों के विकास में महिलाओं की लगातार बढ़ रही भागीदारी बेहतर भविष्य के प्रति निर्देशित कर रहा है।

वे रविवार को विवि के पोषक अनाज एवं मूल्य श्रृंखला उत्कृष्टता केन्द्र में शिवहर से आये जीविका दीदीयों के समूह को संबोधित कर रहे थे। मौका था श्रीअन्न के बीज उत्पादन तकनीक के तीन दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का। उन्होंने कहा कि बेहतर उत्पादन के लिए गुणवत्तायुक्त बीज का काफी महत्व है। विवि प्रशिक्षण के माध्यम से उसके गुड़ का ज्ञान देकर कार्य के लिए प्रेरित करेगा। केन्द्र की प्रधान अन्वेषिका डॉ.स्वेता मिश्रा ने कहा कि नवीनतम तकनीकी ज्ञान से गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन ली जा सकती है। उन्होंने कहा कि बीज बिक्री नहीं होने पर विवि हरसंभव सहयोग करेगा। जरूरत है इसके तकनीकी पहलुओ को समझने की। संचालन करते हुए डॉ.राजीव कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि महिलाएं घर, समाज व देश में परिवर्तन ला सकती है।

कृषि विवि के उत्कृष्टता केन्द्र में प्रशिक्षुओं के साथ डीन व अन्य वैज्ञानिक।

Hindustan 10-03-2025

# कुत्ते को बचाने में पोल से कार टकराई, वैज्ञानिक दंपती घायल

- समस्तीपुर से लौटने के दौरान हादसे के शिकार
- प्राथमिक उपचार के बाद पटना रेफर किया

पूसा (समस्तीपुर), निसं। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के वैज्ञानिक दंपती डॉ. विशाल कुमार और उनकी पत्नी सविता कुमारी रविवार को कार दुर्घटना में गंभीर रूप से जख्मी हो गये। आनन-फानन में घायलों को अनुमंडलीय अस्पताल, पूसा में भर्ती कराया गया, जहां से प्राथमिक उपचार के बाद दोनों को पटना रेफर कर दिया गया। जख्मी वैज्ञानिक कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्यौगिकी महाविद्यालय, पूसा में कार्यरत हैं। विवि परिसर स्थित सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय गेट के निकट एक कुत्ता अचानक सड़क पर आ गया। कुत्ते को बचाने से कार अनियंत्रित होकर सड़क किनारे स्थित बिजली के खंभे से टकरा गयी। हादसे में पति-पत्नी गंभीर रूप से जख्मी हो गये। वैज्ञानिक दंपती समस्तीपुर से मार्केटिंग कर घर लौट रहे थे। इसी दौरान हादसे के शिकार हो गये। डीन डॉ. राम सुरेश, ई. अनुपम अमिताभ, डॉ. सतीश कुमार, डॉ. विपिन कुमार, डॉ. निलांजय, डॉ. शंकर झा, डॉ. एसपी सिंह, डॉ. सुदर्शन समेत अन्य वैज्ञानिक व कर्मी अस्पताल पहुंचे। वहां से गहन चिकित्सा के लिए पटना रवाना कर दिया गया।

Hindustan 10-03-2025

## सजावटी मछलियों का प्रजनन और पालन विषय पर प्रशिक्षण शुरू

# ग्रामीण महिलाओं को चौखट से बाहर निकलने की जरूरत : डॉ श्रीवास्तव

**प्रतिनिधि, पूसा**

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ मात्स्यिकी महाविद्यालय के सभागार में मीठे पानी के सजावटी मछलियों का प्रजनन और पालन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए कहा कि विवि से तकनीकी ज्ञान प्राप्त करने के लिए ग्रामीण महिलाओं को घर की चौखट से बाहर निकलने की जरूरत है. जिससे ग्रामीण परिवेश में बसर करने वाली ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार के मुख्यधारा से जोड़ा जा सके. सजावटी मछलियों को घर में रखने पर रोग व्याध में भी कमी आती है. अक्सर लोग विदेशी मछलियों के सहारे रोगों का आदान प्रदान कर लेते हैं. इससे व्यवसाय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है. महाविद्यालय में बहुत जल्द मोती पालन प्रशिक्षण की व्यवस्था शुरू होने वाली है. सिंगापुर से ऑस्कर एवं डिस्कस प्रजाति के मछली आती है. केरल क्वीन मछली की प्रजातियों का एक मछली का 8 से 9 हजार रुपये कीमत है. रंगीन मछली वर्ष में एक ही बार अंडे देती है. प्रतिभागियों को सीखने के प्रवृति को बढ़ाने की जरूरत है. वैज्ञानिक डा शिवेंद्र कुमार ने कहा कि रंगीन मछली का व्यवसाय स्वरोजगार के साथ अलग से बेहतर आमदनी का मुख्य स्रोत है. सजावटी मछलियों की मांग बढ़ रही है. डा सुमित कुमार नायक ने कहा कि सजावटी मछलियों को घर के अंदर रखने से बेहतर माहौल पैदा होता हैं. जिससे खासकर बच्चे मोबाइल देखने से बच जाते हैं. डा आरके ब्रह्मचारी ने कहा कि रंगीन मछली का व्यवसाय आय प्राप्त करने के लिए एक साधन के रूप में पहचान विकसित कर चुका है. संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डा रोशन कुमार राम ने की. मौके पर डा राजेश कुमार जीवकोपार्जन विशेषज्ञ साकेत कुमार कर्ण, रामनारायण राय, कृष्णदेव पासवान, सार्थक राजेश, विकास कुमार, सत्यम कुमार झा, आशीष कुमार राय आदि मौजूद थे.

## बीते कुछ वर्षों से श्री अन्नों (मिलेट्स) की मांग बढ़ी

प्रतिभागियों के साथ वैज्ञानिक .

**प्रतिनिधि, पूसा**

बीते कुछ वर्षों से श्री अन्नों (मिलेट्स) की मांग बढ़ी है. इन फसलों के मूल्य वर्धित उत्पादों का बाजारों में उपलब्धता भी सुनिश्चित हो रही है. इसको भारतीय भोजन में सामान्यजन शामिल भी कर रहे हैं. यह पौष्टिकता के महत्व के प्रति जन जागरूकता के वजह से संभव हो पाया है. श्री अन्न की मांग एवं उपलब्धता के अंतर कम करने की दिशा में गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन कार्यक्रम निश्चित तौर पर मील का पत्थर साबित होगा. यह उद्गार अपने अभिभाषण में मुख्य अन्वेषिका-सह-संयोजक, श्री अन्न परियोजना डा. श्वेता मिश्रा ने तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम विषय "लघु कदन्न फसलों (श्री अन्न) का बीज उत्पादन तकनीक" के समापन कार्यक्रम में दिया. विदित हो कि यह कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम पोषक अनाज एवं मूल्य श्रृंखला उत्कृष्ठता केन्द्र, डा राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के माध्यम से आयोजित किया गया. पाठ्यक्रम निदेशक डा राजीव कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि उत्तम व गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन किसानों द्वारा तथा किसानों के खेत पर करने का प्रयास विश्वविद्यालय द्वारा सफलतापूर्वक किया गया है. संचालन डा ऋतंभरा सिंह व धन्यवाद ज्ञापन डा कौशल किशोर ने किया. मौके पर डा पुष्पा सिंह, डा मिथिलेश कुमार आदि मौजूद थे.

**पुस्तक मेला का हुआ समापन: शाहपुर पटोरी** : जननायक कर्पूरी स्टेडियम के प्रांगण में आयोजित पुस्तक मेला का समापन एसडीओ विकास कुमार पांडेय की मौजूदगी में समारोहपूर्वक किया गया. समापन के मौके पर स्कूली बच्चों द्वारा इंतखाब आलम के संचालन में कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई है. प्रो अशरफ इमाम के संचालन में पुस्तकों की विलुप्त होती संस्कृति पर परिचर्चा का आयोजन किया गया. पर्यावरणसेवी वशिष्ठ राय वशिष्ठ के संचालन में कवि सम्मेलन एवं मुशाएरा का आयोजन किया गया. स्थानीय बुद्धिजीवियों द्वारा पुस्तक मेला का वर्तमान एवं भविष्य विषय पर विचार प्रकट किया गया. मौके पर राम भवन चौधरी उर्फ बालो बाबू, मुख्य पार्षद प्रियंका सुमन, डॉ दयानिधि प्रसाद राय, डॉ मनोज कुमार गुप्ता वर्णमाला, प्रो दीपक प्रकाश सहित कई लोग मौजूद थे. पुस्तक मेला में सोमवार को छात्र-छात्राओं के अलावे काफी संख्या में लोगों ने हिस्सा लिया.

प्रभात खबर
Tuesday, March 11, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67cf38e4a5827abd7e6641af

# आज की शिक्षा पद्धति वैज्ञानिकता के साथ व्यावहारिकता पर भी आधारित होनी चाहिए

**प्रतिनिधि, पूसा**

कार्यशाला को संबोधित करते अतिथि.

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डायट के तत्वाधान में शारीरिक शिक्षा एवं खेल पर तीन दिवसीय कार्यशाला हुई. राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद के अंतर्गत फिजिकल एजुकेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया (पेफी) के सहयोग से बिहार के परिप्रेक्ष्य में शारीरिक शिक्षा एवं खेल में नए दृष्टिकोण एवं पहल विषय पर अतिथियों ने तकनीकी व्याख्यान दिया. उद्घाटन निदेशक छात्र कल्याण डॉ. रमण कुमार त्रिवेदी, डायट पूसा की प्राचार्या डॉ. आकांक्षा कुमारी एवं डॉ मनोज कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से किया. निदेशक छात्र कल्याण डॉ. त्रिवेदी ने कहा कि खेलों का अस्तित्व गुरुकुल शिक्षा पद्धति से ही देखने को मिलता है. जिसका स्वरुप आज पूरी तरह वैज्ञानिक हो चुका है. आज की शिक्षा पद्धति वैज्ञानिकता के साथ-साथ व्यावहारिकता पर भी आधारित होनी चाहिए. डॉ मनोज ने कहा खेलकूद से छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है. अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य ने कहा कि इस तरह के आयोजन से शारीरिक शिक्षा एवं खेल को बढ़ावा मिलता है. इससे पूर्व आयोजन सचिव कुमार आदित्य ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यशाला की रुपरेखा को प्रस्तुत किया. मौके पर साधन सेवी के रूप में डब्लू कुमार एवं रवीन्द्र कुमार सिंह थे. मौके पर प्रभारी प्राचार्य सह वरीय व्याख्याता अनिल कुमार सिंह, व्याख्याता संयोग कुमार प्रेमी एवं यशवंत कुमार शर्मा उपस्थित रहे. प्रशिक्षुओं में सोनाली प्रिया, अंजलि, अन्नू, प्रीति रानी, ब्यूटी, सृष्टि, कामिनी ने स्वागत गान तो वैष्णवी कुमारी, ज्योति, काजल, आरती एवं कहकशां ने वंदे मातरम् की प्रस्तुति दी. स्नेहिल प्रवीण, अजय कुमार, सचिन कुमार, मनीष, जय कुमार आदि स्वयंसेवक की भूमिका में मौजूद थे.

## 11वीं की 17 व नौवीं की परीक्षा 20 मार्च से होगी

**समस्तीपुर.** होली पर्व के बाद 9वीं और 11वीं के छात्र-छात्राओं की वार्षिक परीक्षा शुरू होगी. इसको लेकर विद्यालय स्तर पर तैयारी शुरू हो गई है. बिहार बोर्ड ने इस बारे में दिशा-निर्देश जारी किया है. शिक्षकों का कहना है कि नौवीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा में सफल होने के बाद छात्र दसवीं कक्षा में नामांकन लेंगे. यह छात्र वर्ष 2026 में मैट्रिक की परीक्षा में शामिल होंगे. 11वीं पास करने वाले विद्यार्थी 12वीं में पहुंचेंगे. इनकी भी मुख्य परीक्षा वर्ष 2026 में आयोजित होगी. बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के निर्देश पर यह परीक्षा ली जा रही है. प्लस2 हाई स्कूलों में कक्षा 11वीं की परीक्षा 17 मार्च से और नौवीं की वार्षिक परीक्षा 20 मार्च से होगी. उत्तर पुस्तिकाएं उपलब्ध करा दी गई हैं. 13 मार्च तक प्रश्नपत्र विद्यालयों को उपलब्ध करा दिये जायेंगे. नौवीं की सैद्धांतिक परीक्षा 20 मार्च से शुरू होगी. 25 मार्च तक चलेगी. प्रायोगिक परीक्षा 26 मार्च को ली जायेगी. प्लस 2 हाई स्कूल में सैद्धांतिक परीक्षा 17 मार्च से शुरू होगी. और 23 मार्च तक चलेगी प्रायोगिक परीक्षा 26 और 27 मार्च को विद्यालय में होगी. जो परीक्षार्थी इस परीक्षा में अनुपस्थित रहेंगे या अनुत्तीर्ण होंगे उन्हें अगली कक्षा में प्रवेश नहीं मिलेगा. शिक्षकों ने बताया कि शिक्षा विभाग एवं बिहार बोर्ड के निर्देश पर कक्षा नौवीं से 12वीं तक में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं को मासिक सिलेबस दिया गया है. इसके आधार पर उनकी पढ़ाई कराई जाती है. इस वार्षिक परीक्षा से छात्रों को यह पता चलेगा कि उन्होंने कैसी तैयारी की है और मुख्य परीक्षा के लिए कैसी तैयारी करनी पड़ेगी. यह परीक्षा भी मुख्य परीक्षा की तरह ही ली जायेगी.

प्रभात खबर
Tuesday, March 11, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67cf38e4a5827abd7e6641af

भास्कर 11/3/25 पेज 6

**कार्यक्रम** • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में कार्यक्रम का आयोजन

# श्रीअन्न की मांग व उपलब्धता के अंतर को कम करने की दिशा में प्रशिक्षण होगा कारगर : श्वेता मिश्रा

भास्कर न्यूज़ | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में किसानों के लिए लघु कदन्न फसलों (श्रीअन्न) के बीज उत्पादन तकनीक विषय पर चल रहा तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण सोमवार को संपन्न हो गया। समापन कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए प्रशिक्षण की अन्वेषिका सह संयोजक श्री अन्न परियोजना डा. श्वेता मिश्रा ने कहा कि कुछ वर्षों से श्री अन्न यानी (मिलेट्स) की मांग काफी बढ़ गई है। इन फसलों से जुड़े मूल्य वर्धित उत्पादों का बाजारों में उपलब्धता भी सुनिश्चित हो रहा है। उन्होंने कहा कि आज ज्यादातर लोग श्री अन्न को अपने भोजन में शामिल कर चुके है। यह सब श्री अन्न में पौष्टिकता के महत्व के प्रति जन जागरूकता की वजह से ही संभव हो पाया है। उन्होंने कहा कि श्री अन्न की माँग एवं उपलब्ध्ता के अंतर को कम करने की दिशा में यह प्रशिक्षण निश्चित तौर पर मील का पत्थर साबित होगा। डा. राजीव कुमार श्रीवास्तव पाठ्यक्रम निदेशक ने अपने उद्बोधन में कहा कि उत्तम व गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन किसानों के द्वारा तथा किसानों के खेत पर करने का प्रयास विश्वविद्यालय द्वारा सफलता पूर्वक किया गया है। यह प्रशिक्षण श्री अन्न के बीज उत्पादन में किसानों को आत्मनिर्भर बनाने में निश्चित तौर पर सार्थक साबित होगा। इस प्रशिक्षण में शिवहर जिले से पहुंची 35 महिला बीज उत्पादक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। समापन कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों के बीच प्रमाण पत्र तथा श्री अन्न के बीजों का वितरण किया गया। मंच संचालन एवं स्वागत डा. रितम्भरा सिंह तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. कौशल किशोर ने किया। मौके पर डॉ. पुष्पा सिंह, डा. मिथिलेश कुमार सिंह आदि मौजूद थे।

कार्यक्रम में शामिल प्रशिक्षणार्थी

# खेलकूद से छात्रों का सर्वांगीण विकास

- डायट पूसा में शारीरिक शिक्षा एवं खेल में नए दृष्टिकोण पर तीन दिवसीय कार्यशाला आरंभ
- वैज्ञानिकता के साथ-साथ व्यवहारिकता पर भी आधारित हो शिक्षा व्यवस्था: निदेशक

संवाद सहयोगी, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के विद्यापति सभागार में सोमवार को पूसा में स्थित डायट में शारीरिक शिक्षा एवं खेल में नए दृष्टिकोण पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हुआ। उद्घाटन विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशक डा. रमण कुमार त्रिवेदी, डायट की प्राचार्य डा. आकांक्षा कुमारी एवं डा. मनोज कुमार सिंह-ने किया। मुख्य अतिथि डा. त्रिवेदी ने कहा कि खेलों का अस्तित्व गुरुकुल शिक्षा पद्धति से ही देखने को मिलता है। उसका स्वरूप आज पूरी तरह वैज्ञानिक हो चुका है। आज की शिक्षा पद्धति वैज्ञानिकता के साथ-साथ व्यवहारिकता पर भी आधारित होनी चाहिए। डा. मनोज ने कहा खेलकूद से छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है। कार्यक्रम की अध्यक्ष प्राचार्य डा. आकांक्षा ने कहा कि इस तरह के आयोजन से शारीरिक शिक्षा एवं खेल को बढ़ावा मिलता है। इसके पूर्व आयोजन सचिव कुमार आदित्य ने आगत अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यशाला के रुपरेखा को प्रस्तुत किया। मौके पर साधन सेवी के रूप में डब्लू कुमार, व्याख्याता डायट बांका एवं रवीन्द्र कुमार सिंह, पेफी प्रतिनिधि ने आज के सत्र का संचालन किया। मौके पर वरीय व्याख्याता अनिल कुमार सिंह, व्याख्याता संयोग कुमार प्रेमी एवं यशवंत कुमार शर्मा उपस्थित रहे। डायट के प्रशिक्षु छात्रों में सोनाली प्रिया, अंजलि, अन्नू, प्रीति रानी, ब्यूटी, सृष्टि, कामिनी ने स्वागत गान, तो वैष्णवी कुमारी, ज्योति, काजल, आरती ने की। वंदे मातरम की प्रस्तुति स्नेहिल प्रवीण, अजय कुमार, सचिन कुमार ने किया।

कार्यक्रम में मौजूद अतिथि और संबोधित करते मुख्य अतिथि • जागरण

Dainik Jagran 11-03-2025

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 12 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ तथा मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 29 से 31 व न्यूनतम 14 से 15 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 10 मार्च | 28.8 | 12.5 |
| 11 मार्च | 29.0 | 12.5 |
| दरभंगा | | |
| 10 मार्च | 29.0 | 12.5 |
| 11 मार्च | 29.0 | 13.0 |
| पटना | | |
| 10 मार्च | 30 | 14.0 |
| 11 मार्च | 30 | 14.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 11-03-2025

# पढ़ाई संग खेलकूद को बढ़ावा देना समय की मांग : डॉ. मनोज

**पूसा, निज संवाददाता।** डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के निदेशक, छात्र कल्याण डॉ.रमण त्रिवेदी ने कहा कि भारत को विश्व गुरू बनाने में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व व्यक्तित्व विकास जरूरी है। इसमें खेलकूद भी एक अहम कड़ी है। यह शारीरिक, बौद्धिक विकास के साथ अनुशासन व एकता का पाठ पढ़ाता है। जरूरी है शिक्षा के साथ खेलकूद को बढ़ावा देने की। इस दिशा में सरकार भी लगातार प्रयासरत है। वे सोमवार को विवि के विद्यापति सभागार में बोल रहे थे। मौका था जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट), पूसा एवं फिजिकल एजुकेशन फाउन्डेशन ऑफ इंडिया के तत्वाधान में आयोजित शिक्षको के तीन दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का। प्रशिक्षण का विषय था बिहार के परिपेक्ष्य में शारीरिक शिक्षा एवं खेल के नये दृष्टिकोण और पटल। उन्होंने कहा कि गुरूकुल परंपरा से ही बच्चों के सर्वांगिन

विद्यापति सभागार में आयोजित डायट के कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथिगण। कृषि विवि के विद्यापति सभागार में गीत प्रस्तुत करती डायट की छात्राएं।

विकास के लिए शिक्षा के साथ खेल, धुड़सवारी जैसे कई अन्य कार्य में दक्ष बनाया जाता रहा है। प्राचार्या डॉ.आकांक्षा कुमारी ने कहा कि यह प्रशिक्षण शिक्षको के स्कील में बढ़ोतरी के साथ प्रोफेशन में भी सहयोग करने में अहम भूमिका निभायेगा। व्याख्याता डॉ.मनोज कुमार सिंह ने कहा कि पढ़ाई के साथ खेलकूद को बढ़ावा समय की मांग है। आयोजन सचिव कुमार आदित्य ने समारोह की रूपरेखा प्रस्तुत की। स्वागत गीत छात्रा अंजली, अन्नू, ब्यूटी, कामनी, सोनाली प्रिया, अंजली, सृष्टि, प्रीति रानी प्रस्तुत किया। संचालन रविन्द्र कुमार ने किया। मौके पर संस्थान के व्याख्याता अनिल कुमार सिंह, संयोग कुमार प्रेमी, यशवंत कुमार शर्मा, डब्लू कुमार आदि मौजूद थे। समारोह को सफल बनाने में ज्योति, स्नेहिल प्रवीण, मनीष कुमार, जय कुमार, अजय, सचिन आदि जुटे थे।

Hindustan 11-03-2025

# कृषक सहभागिता बीज उत्पादन कार्यक्रम सशक्त उद्यामिता का प्रतीक : डॉ श्वेता मिश्रा

**समस्तीपुर (एसएनबी)।** विगत कुछ वर्षो से श्री अन्न (मिलेट्स) की माँग बढ़ी है। इनके मूल्य वर्धित उत्पादों की बाजार में उपलब्धता भी सुनिश्चित हो रही है। लोगों में सेहत के प्रति बढी जागरूकता के कारण अब मिलेट्स को भारतीय व्यन्जनों तथा भोजन में आम आदमी शामिल भी कर रहे है। मुख्य अन्वेषिका-सह-संयोजक, श्री अन्न परियोजना, डॉ श्वेता मिश्रा ने सोमवार को लघु कदन्न फसलों (श्री अन्न) का बीज उत्पादन तकनीक विषयक तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन सत्र को संबोधित करने हुए उक्त बातें कही। उन्होंने कहा कि यह पौष्टिकता के महत्व के प्रति जन जागरूकता के वजह से संभव हो पाया है। अतः श्री अन्न के माँग एवं उपलब्ता के अंतर कम करने की दिशा में गुणवक्तापूर्ण बीज उत्पादन कार्यक्रम निश्चित तौर पर मील का पत्थर साबित होगा। बताते चलें कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पोषक अनाज एवं मूल्य श्रृखला उत्कृष्ठता केन्द्र, डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा द्वारा आयोजित किया गया। समापन सत्र को संबोधित करते हुए पाठ्यक्रम निदेशक डॉ राजीव कुमार श्रीवास्तव, ने संबोधित करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा उत्तम व गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन किसानों द्वारा तथा किसानों के खेत पर करने का प्रयास सफलता पूर्वक किया गया है। जो श्री अन्न बीज के उपलब्धता मामले में आत्मनिर्भर बनाने दिशा में सार्थक साबित होगा। दिनांक 08-10 मार्च, 2025 तक चले इस प्रशिक्षण में शिवहर जिला की लगभग 35 महिला बीज उत्पादक प्रतिभागी के रूप में सफलतापूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस क्रम में प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र तथा श्री अन्न के बीज का पैकेट प्रदान किया गया। इस प्रशिक्षण के समापन कार्यक्रम का संचालन एवं स्वागत डॉ रितम्भरा सिंह तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ कौशल किशोर ने किया। मौके पर डॉ पुष्पा सिंह एवं डॉ मिथिलेश कुमार सिंह के अलावा कई वैज्ञानिक व किसान उपस्थित थे।

प्रशिक्षण में शामिल वैज्ञानिक व अन्य।

Rashtriya Sahara 11-03-2025

किसान चिंतित • आंवला उत्पादक किसान इन बीमारियों के प्रबंधन के लिए अपनाएं वैज्ञानिक तकनीक

# आंवला की फसल पर रतुआ व उकठा रोग का खतरा, उत्पादन कम होने की आशंका

भास्कर न्यूज़ | पूसा

आंवला की खेती पूरे देश में होती है। बिहार में भी इसका उत्पादन अच्छा है। लेकिन हाल के वर्षों में मौसम में बदलाव के कारण आंवले की फसल पर रतुआ (रस्ट) और उकठा (विल्ट) रोग का असर बढ़ गया है। ये दोनों बीमारियां उत्पादन को बुरी तरह प्रभावित कर रही हैं। इससे किसानों को हर साल भारी नुकसान हो रहा है। कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के प्रमुख और वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आंवले के पेड़ों और फलों में आधा दर्जन से ज्यादा बीमारियां लगती हैं। लेकिन इनमें रतुआ और उकठा सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाने वाले रोग हैं। वैज्ञानिक सुझावों को अपनाकर किसान इन बीमारियों का प्रबंधन कर सकते हैं और बेहतर उत्पादन ले सकते हैं। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि विगत दो वर्षों से अत्यधिक वर्षा होने के कारण आंवला के पौधों में यह बीमारी ज्यादा देखने को मिल रही है। इस रोग से संक्रमित पौधों की छाल का फटने लगती है। पेड़ से पत्तियों का झड़ना आरंभ हो जाता है तथा पौधें धीरे धीरे सूख जाते है। इस बीमारी में पौधों के सूखने की समस्या अत्यधिक बारिश के साथ ठंड में पड़ने वाला पाला भी है। उन्होंने बताया कि यह रोग फुजेरियम नामक कवक द्वारा होता है। इस रोग से आंवला के छोटे पौधों को बचाने के लिए पाला गिरने के दौरान छोटे पेड़ों को किसी पत्री या त्रिपाल से ढक देना चाहिए। पौधे के आस पास की मिट्टी को हमेशा नम रखना चाहिए ताकि पाला का असर कम हो सके। छोटे पौधों के जड़ो के आसपास घास-फूस या काली पालीथीन बिछाकर रखने से भी इस रोग में कमी पाई गई है। इसके अलावे आंवला के बड़े पौधें में रोग के शुरुआती लक्षण दिखाई देने पर किसान तत्काल कार्बेन्डाजिम या रोको एम नामक फफूंदनाशक की 2 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर पेड़ो पर स्प्रे करने के अलावे पेड़ो के आस पास की मिट्टी को खूब अच्छी तरह से भींगा दिया करें।

## सलाह : छोटे पौधों की जड़ों के आसपास काली पालीथीन बिछाकर रखें

आंवले में लगा रतुआ यानी रस्ट रोग।

### आंवला खाने से सुधरती है सेहत, आंखों के लिए वरदान

आंवला खाने के कई स्वास्थ्य लाभ होते हैं। इससे बाल काले और घने बने रहते हैं और आंखों की रोशनी तेज होती है। इससे डाइजेस्टिव सिस्टम अच्छा रहता है और वजन कम करने में मदद मिलती है। आंवला हार्ट डिजीज और कैंसर जैसी बीमारियों की आशंका को भी कम कर सकता है। आंवले का नियमित सेवन करने से बालों की सेहत सुधरती है। इसका सीरम भी काफी कारगर होता है। आंवला खास तरह के एंजाइम की एक्टिविटी को ब्लॉक करके बाल उगने के लिए जरूरी सेल्स को बढ़ावा देता है। विटामिन C से हेयर फॉल रुकता है और एंटीबैक्टीरियल प्रॉपर्टी से डैंड्रफ खत्म होता है। आंवले का नियमित सेवन करने से किडनी की सेहत में सुधार होता है।

## फल खराब दिखने के कारण बाजार में इसकी कीमत भी अच्छी नहीं मिलती

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि रतुआ यानी (रस्ट ) रोग एक कवक द्वारा लगता हैं। जिसे रवेलिया इम्बलिकी कहते है। यह रोग आंवला के एक प्रमुख रोगों में से एक है। इस रोग से फलों पर आरंभ में काले छोटे फफोले जैसी उभरी हुई संरचनाये दिखाई देने लगती हैं जो बाद में एक दूसरे से मिलकर बड़े धब्बे के रूप में विकसित हो जाते हैं। धब्बे एक दूसरे से जुड़कर फल के काफी क्षेत्र को घेर लेते हैं। धब्बों के ऊपर भी पतली चमकीली झिल्ली दिखाई देती है जो बाद में फट जाती है जिससे काले बीजाणु बाहर निकल आते हैं। इस वजह से फल खराब दिखने लगता हैं तथा बाजार में इसकी कीमत भी अच्छी नहीं मिलती है। फल पर धब्बे बनाने से पहले यह रोग कारक यानी पत्तियों पर भी गुलाबी भूरे छोटे-छोटे उभार के रूप में नजर आते हैं। आंवला उत्पादक किसान इस रोग के प्रबंधन के लिए घुलनशील गंधक की 4 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर पेड़ो पर छिडकाव करें। इसके अलावे किसान अन्य दवों का छिड़काव कर सकते हैं।

दैनिक जागरण 12/3/25 पृ 3

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 16 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 33 से 35 व न्यूनतम 17 से 22 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 11 मार्च | 31.0 | 14.4 |
| 12 मार्च | 31.0 | 15.0 |
| | दरभंगा | |
| 11 मार्च | 31.0 | 15.0 |
| 12 मार्च | 31.5 | 15.0 |
| | पटना | |
| 11 मार्च | 32 | 16.0 |
| 12 मार्च | 32 | 16.0 |

डिग्री सेल्सियस में

हिन्दुस्तान 12/3/25 पेज 5

# श्रीअन्न के बीज व उत्पादों का बढ़ावा जरूरी: डॉ. श्वेता

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के पोषक अनाज एवं मूल्य शृंखला उत्कृष्टता केन्द्र की मुख्य अन्वेषिका डॉ.श्वेता मिश्रा ने कहा कि श्रीअन्न व इसके उत्पादो की मांग लगातार बढ़ रही है।

ऐसे में इसके गुणवत्तायुक्त बीज व इसके मूल्य वर्धित उत्पादों के विकास की दिशा में पहल तेज करने की जरूरत है। इस दिशा में विवि लगातार लोगों को प्रशिक्षित कर रहा है। वे सोमवार को केन्द्र में प्रशिक्षुओं को संबोधित कर रही थी। इस दौरान प्रशिक्षुओं को प्रमाण-पत्र देते हुए उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण की सार्थकता इसके कार्यरूप देने पर निर्भर है। पाठ्यक्रम निदेशक डॉ.राजीव कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि उत्तम व गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन किसान अपने खेत में विवि के तकनीकी सहयोग से कर रहे हैं।

हिन्दुस्तान 12/3/25 पे 4

# होली में हलक सुखायेगी गर्मी

पूसा । होली में इस वर्ष गर्मी चरम पर रहने का अनुमान है। मौसम विभाग के अनुसार अगले चार दिनों तक औसतन 5 से 7 किमी. प्रति घंटा की गति से पछुआ हवा चल सकती है। इस दौरान अधिकतम तापमान 33 से 35 डिग्री एवं न्यूनतम तापमान 17 से 22 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम विभाग ने मंगलवार को 16 मार्च तक का मौसम पूर्वानुमान जारी किया है। जिसके अनुसार इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलो में 14-15 मार्च के आसपास हल्के बादल रह सकते हैं।

प्रभात खबर 12/3/25 पेज 3

# 16 मार्च तक मौसम शुष्क आसमान में हल्के बादल

**समस्तीपुर** . डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केन्द्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 12 से 16 मार्च 2025 तक के लिये मौसम पूर्वानुमान जारी हुआ है. पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में 14 से 15 मार्च के आसपास आसमान में हल्के बादल बन सकते हैं. हालांकि मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है. इस अवधि में अधिकतम तापमान 33 से 35 डिग्री सेल्सियस व न्यूनतम तापमान 17 से 22 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है. पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 5 से 7 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने का संभावना है. सापेक्ष आद्रर्ता सुबह में 80 से 85 प्रतिशत व दोपहर में 30 से 35 प्रतिशत रहने की संभावना है. मंगलवार का अधिकतम तापमान 31.0 डिग्री सेल्सियस रहा. यह सामान्य से 0.9 डिग्री अधिक रहा. वहीं न्यूनतम तापमान 14.4 डिग्री सेल्सियस रहा. यह सामान्य से 0.7 डिग्री सेल्सियस कम रहा.

आयु वर्ग के छात्रा ने भाग लिया. इनमें ... अवधेश कुमार सिंह मौजूद थे.

प्रभात खबर 12/3/25 पेज 4

# समूह बना कर करें मत्स्य पालन : डॉ तिवारी

पूसा. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ मात्स्यिकी महाविद्यालय के सभागार में छः दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण का समापन प्रमाण पत्र के साथ सम्पन्न हुआ. मुख्य अतिथि कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली समस्तीपुर के वरीय वैज्ञानिक व प्रधान डॉ. आरके तिवारी व मात्स्यिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र दिया. इन्होंने बताया कि मत्स्यपालन तकनीकी ज्ञान को मत्स्यपालन कार्य में अपनाकर बेहतर लाभ प्राप्त करें. अन्य मत्स्य पालकों तक भी पहुंचायें. मौके पर प्रशिक्षणार्थियों के माध्यम से प्रशिक्षण की उपयोगिता एवं प्राप्त प्रशिक्षण से प्राप्त तकनीकी ज्ञान के बहुआयामी लाभ को भी दर्शाया. महाविद्यालय के शिक्षक डॉ. मुकेश कुमार सिंह, डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ. अनिरुद्ध कुमार, डॉ. सुजीत कुमार नायक, डॉ. तनुश्री घोड़ई, डा रोशन कुमार राम, तकनीकी पदाधिकारी डॉ. संजीव कुमार, डॉ. राजेश कुमार, मुकेश कुमार, साजन कुमार भारती, विनोद कुमार आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर 12/3/25 पेज 4

# सामाजिक व सांस्कृतिक एकीकरण को शारीरिक शिक्षा जरूरी : डॉ कश्यप

सम्मानित होते अतिथि.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में शारीरिक शिक्षा एवं खेल पर 3 दिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन खेल की वैज्ञानिकता एवं मनोरंजनात्मक पहलू पर चर्चा की गयी. राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद के तत्वावधान में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) के माध्यम से फिजिकल एजुकेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया (पेफी) के सहयोग से बिहार के परिप्रेक्ष्य में शारीरिक शिक्षा एवं खेल में नये दृष्टिकोण एवं पहल विषय पर 3 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला में मंगलवार के सत्र का प्रारंभ आयोजन सचिव कुमार आदित्य ने किया. मौके पर साधन सेवी के रूप में डब्लू कुमार, व्याख्याता डायट बांका, डॉ. अरिजीत पुततुंडा, अमित सौरभ, नीरज कश्यप का अंग वस्त्र, पाग, पुष्पगुच्छ एवं प्रतीक चिन्ह देकर स्वागत किया. प्रथम सत्र में नीरज कश्यप ने सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकीकरण के लिए शारीरिक शिक्षा और खेल एक उपकरण के रूप में विषय पर, दूसरे सत्र में अरिजीत पुततुंडा ने दीर्घकालिक फिटनेस बनाम शारीरिक सौंदर्य का विरोधाभासी विकल्प विषय पर विस्तार से चर्चा की. तृतीय सत्र में अमित सौरभ ने खेलों में बायोमेकैनिकस, चौथे सत्र में खेल शिक्षा शास्त्र-मनोरंजनातमक खेलों के आधार पर गतिविधि और अंतिम सत्र में संतोष कुमार ने शारीरिक शिक्षा एवं खेल राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विषय पर विस्तार से चर्चा की. सत्र के दौरान प्रभारी प्राचार्य सह वरीय व्याख्याता अनिल कुमार सिंह, व्याख्यात्ता संयोग कुमार प्रेमी एवं यशवंत कुमार शर्मा उपस्थित रहे. डायट के प्रशिक्षु छात्रों में अंजलि, प्रीति रानी, श्रृष्टि, ब्यूटी एवं स्नेहिल प्रवीण, अजय कुमार, सचिन कुमार, मनीष, जय कुमार आदि मौजूद थे.

भास्कर 13/3/25 पेज 16

कृषि • मीठे पानी में सजावटी मछलियों का पालन व प्रजनन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का हुआ समापन

# सजावटी मछलियों के पालन- प्रजनन का कारोबार शुरू कर बेहतर लाभ प्राप्त करें

## बढ़ेगा रोजगार : कम लागत में एक्वेरियम निर्माण का दिया गया प्रशिक्षण

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ मात्स्यकी महाविद्यालय ढ़ोली में मत्स्यपालन में रुचि रखने वाले किसानों के लिए मीठे पानी में सजावटी मछलियों का पालन व प्रजनन के विषय पर चल रहा तीन दिवसीय व्यवहारिक व क्रियाशील प्रशिक्षण कार्यक्रम बुधवार को संपन्न हो गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि पहुंची जीविका मुजफ्फरपुर की जिला परियोजना प्रबंधक अनीषा कुमारी एवं विशिष्ट अतिथि मात्स्यकी महाविद्यालय ढोली के अधिष्ठाता डॉ.प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने संयुक्त रूप से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले तमाम प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र के साथ-साथ एक एक एक्वेरियम भी दिया। इस मौके पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए अनीषा कुमारी ने कहा कि प्रशिक्षणार्थी यहां से प्राप्त किये गए ज्ञान के आधार पर बहुत ही कम जगह और अल्प पूंजी में सजावटी मछलियों के पालन व प्रजनन का कारोबार शुरू कर बेहतर से बेहतर लाभ प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा की सजावटी मछलियों का कारोबार देश में बहुत ही उभरता हुआ कारोबार है। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण में विशेषज्ञों के द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को कम लागत में एक्वेरियम के निर्माण करने की जानकारी भी दी गई हैं। प्रशिक्षणार्थी एक्वेरियम का निर्माण कर तथा उसे बेचकर भी अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकते है। डॉ.प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि विवि के कुलपति डॉ. सुविमलेन्दु पाण्डेय के विशेष प्रयास व मार्गदर्शन में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतरगत राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड हैदराबाद तेलंगाना के द्वारा इस प्रशिक्षण का आयोजन किया गया था। इस प्रशिक्षण में जीविका के माध्यम से चयनित किये गए मुजफ्फरपुर जिले के 25 उत्साही प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया हैं।

प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र देते अतिथि।

### सजावटी मछलियों के साथ समय बिताने से स्ट्रेस लेवल कम होता है

डॉ. पीपी श्रीवास्तव ने सर्वप्रथम प्रशिक्षणार्थियों को सजावटी मछलियों का पालन करने के लिए उन्हें प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि सजावटी मछलियां मनोरंजन के साथ-साथ स्वास्थ्य लाभ का भी एक बेहतर जरिया है। सजावटी मछलियों के साथ समय बिताने से स्ट्रेस लेवल को भी कम किया जा सकता है। इससे एंजाइटी में भी आराम मिलता है। उन्होंने प्रशिक्षण में उपस्थित खासकर महिलाओं तथा युवक प्रशिक्षणार्थियों से कहा कि वे अपने तकनीकी ज्ञान को समाज के अन्य लोगों तक भी पहुंचाने का कार्य करें। मात्स्यकी महाविद्यालय के फिशरिज स्नातक अंतिम वर्ष के छात्र आशीष कुमार राय, सत्यम कुमार झा, अजीत कुमार एवं शिवांशु भास्कर द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम में तकनीकी सहायता प्रदान की गई। मौके पर जिविका मुरौल के जिविकोपार्जन विशेषज्ञ साकेत कुमार कर्ण, मात्स्यिकी महाविद्यालय ढोली के शिक्षक डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ. सुजीत कुमार नायक, डॉ.मुकेश कुमार सिंह, डॉ.तनुश्री घोड़ई, महाविद्यालय कर्मी डॉ.राजेश कुमार, विनोद कुमार, साजन कुमार, प्रशिक्षण संयोजक रोशन कुमार राम आदि मौजूद थे।

हिन्दुस्तान 13/3/25 पेज 6

## तीन दिवसीय कार्यशाला संपन्न, प्रशिक्षु शिक्षकों को दिया गया प्रमाणपत्र

# 'गांव की प्रतिभा निखार कर शिक्षक दिलाएं पहचान'

पूसा, निज संवाददाता। राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद व जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट), पूसा, के तत्वाधान में 'बिहार के परिप्रेक्ष्य में शारीरिक शिक्षा एवं खेल में नए दृष्टिकोण एवं पहल' विषय पर आयोजित 3 दिवसीय कार्यशाला बुधवार को संपन्न हो गया। इस दौरान प्रशिक्षु शिक्षकों को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

मौके पर डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलसचिव डॉ.मृत्युंजय कुमार ने खेल के महत्व पर चर्चा करते हुए नई पीढ़ी को इसके प्रति प्रेरित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि राज्य में प्रतिभा की कमी नहीं है। जरूरत है उसे पहचानकर निखार लाने की। जिससे गांवों की प्रतिभा राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय स्तर अपनी पहचान बना सके। डायट की प्राचार्य डॉ.आकांक्षा कुमारी, अनिल कुमार सिंह,

विवि के विद्यापति सभागार में प्रशिक्षु शिक्षक अपना प्रमाणपत्र के साथ और मौजूद अतिथिगण।

संयोग कुमार प्रेमी, सुरेश कुमार, मो. रिजवान अंसारी, यशवंत कुमार शर्मा, साधन सेवी डायट बांका के व्याख्याता डब्लू कुमार, डायट, सीतामढ़ी के नीरज कश्यप, डायट पटना के अमित सौरभ आदि मौजूद थे। मौके पर अन्य वक्ताओं ने कहा कि शिक्षा के साथ खेलकूद को बढ़ावा समय की मांग है। इसके लिए छात्रो की प्रतिभा निखारने की दिशा में पहल तेज करने में यह प्रशिक्षण काफी लाभकारी साबित होगा। मौके पर अंजली, अन्नू, प्रीति रानी, ब्यूटी, सृष्टि, कामिनी, वैष्णवी कुमारी, ज्योति, काजल, आरती, स्नेहिल प्रवीण, अजय कुमार, सचिन कुमार शर्मा, मनीष कुमार, जय कुमार आदि स्वयंसेवक जुटे रहे।

(ए) हिन्दुस्तान 13/3/25 पेज 6

# सजावटी मछलियों पर 3 दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मत्स्यकी महाविद्यालय में सजावटी मछलियों का प्रजनन, पालन विषयक व्यवहारिक व क्रियाशील स्वरोजगारोन्मुखी 3 दिवसीय प्रशिक्षण बुधवार को संपन्न हुआ। इस दौरान प्रशिक्षुओं के बीच प्रमाण-पत्र वितरित की गई। मौके पर महाविद्यालय के डीन डॉ.पीपी श्रीवास्तव ने प्रशिक्षण के महत्वो पर चर्चा करते हुए कार्यरूप देने पर बल दिया। इस दौरान जीविका, मुजफ्फरपुर की जिला परियोजना प्रबंधक अनीषा ने प्रमाण-पत्र व प्रशिक्षुओं के स्वनिर्मित एक्यूबेरियम देते हुए स्वरोजगार के रूप में अपनाने पर बल दिया। राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद, तेलंगाना से प्रायोजित प्रशिक्षण के मौके पर शिक्षक डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ. सुजीत कुमार नायक, डॉ.मुकेश कुमार सिंह, डॉ.तनुश्री घोड़ई, डॉ.राजेश कुमार, विनोद कुमार, साजन कुमार भारती समेत मत्स्य संसाधन प्रबंधन विभाग के वैज्ञानिक व प्रशिक्षण संयोजक रोशन कुमार राम, छात्र आशीष कुमार राय, सत्यम कुमार झा, अजीत कुमार, शिवांशु भास्कर आदि मौके पर मौजूद थे। इस दौरान छात्रो ने प्रशिक्षुओं को तकनीकी सहायता दी।

दैनिक जागरण 13/3/25 पृ 3

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 16 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 33 से 35 व न्यूनतम 17 से 22 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 13 मार्च | 26.8 | 10.5 |
| 14 मार्च | 27.0 | 11.0 |
| | दरभंगा | |
| 13 मार्च | 27.0 | 11.0 |
| 14 मार्च | 27.0 | 11.5 |
| | पटना | |
| 13 मार्च | 28 | 12.0 |
| 14 मार्च | 28 | 12.0 |

डिग्री सेल्सियस में

प्रभात खबर 13/3/25 पेज 4

# खेल से छात्र-छात्राओं का सर्वांगीण विकास संभव: कुलसचिव

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में चल रहे जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डायट के तत्वाधान में बिहार के परिप्रेक्ष्य में शारीरिक शिक्षा एवं खेल में नए दृष्टिकोण एवं पहल पर तीन दिवसीय कार्यशाला का सम्पन्न हुआ. अध्यक्षता करते हुए विवि के कुलसचिव डा मृत्यंजय कुमार ने कहा कि किसी भी खेल से छात्र-छात्राओं का सर्वांगीण विकास होता है. खेलों का अस्तित्व इस तरह के आयोजन से जमीनी स्तर पर फलित होगा. शारीरिक शिक्षा शिक्षकों के निर्माण से ही स्कूली छात्रों का

प्रमाणपत्र के साथ प्रतिभागी.

शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास सम्भव हो पाता है. राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद के तत्वावधान में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से फिजिकल एजुकेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया (पेफी) के सहयोग से कार्यशाला आयोजित की गई थी. डायट पूसा की प्राचार्या डॉ. आकांक्षा कुमारी एवं प्रभारी प्राचार्य सह वरीय व्याख्याता अनिल कुमार सिंह, संयोग कुमार प्रेमी, सुरेश कुमार, मो. रिजवान अंसारी आदि उपस्थित थे. प्राचार्य डॉ. आकांक्षा ने कहा आज की शिक्षा पद्धति में खेल आधारित अधिगम को बढ़ावा देने हेतु इस तरह के आयोजन मिल का पत्थर साबित होंगे. इससे पूर्व आयोजन सचिव कुमार आदित्य ने अतिथियों का स्वागत करते हुए 3 दिवसीय कार्यशाला के उपलब्धियों का सार प्रस्तुत किया. अंत में सभी प्रतिभागी शारीरिक शिक्षा शिक्षकों को अतिथियों द्वारा प्रमाणपत्र वितरण किया गया. मौके पर साधन सेवी के रूप में डब्लू कुमार, व्याख्याता डायट बांका, नीरज कश्यप व्याख्याता डायट सीतामढ़ी, अमित सौरभ डायट पटना ने आज के सत्र का संचालन किया. यशवंत कुमार शर्मा ने कार्यक्रम का अंत राष्ट्रगान के साथ किया. शिक्षक प्रमोद कुमार ठाकुर, चितरंजन प्रसाद राय, ज्योति कुमारी के अलावा डायट के प्रशिक्षु छात्रों में अंजलि, अन्नू, प्रीति रानी, ब्यूटी, सृष्टि, कामिनी, वैष्णवी कुमारी, ज्योति, काजल, आरती, कहकशां, स्नेहिल प्रवीण, अजय कुमार, सचिन कुमार शर्मा, मनीष कुमार, जय कुमार आदि थे.

प्रभात खबर 13/3/25 पेज 4

# सजावटी मछलियों का प्रजनन व पालन प्रबंधन करने की जरूरत

प्रतिभागियों के साथ वैज्ञानिक.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ मात्स्यिकी महाविद्यालय के सभागार में रंगीन मछली उत्पादन एवं एक्यूरियम निर्माण विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ. विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पुण्यव्रत सुविमलेन्दु पाण्डेय के विशेष प्रयास व दिशा निर्देशन तथा प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना अंतर्गत राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद, तेलंगाना द्वारा प्रायोजित एवं जीविका के माध्यम से चयनित प्रतिभागियों के लिए प्रशिक्षण आयोजित किया गया. अधिष्ठाता डॉ. प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव तथा जीविका मुजफ्फरपुर की जिला परियोजना प्रबंधक अनीषा ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र दिया. साथ में सभी प्रशिक्षणार्थियों को उनके स्वयं के द्वारा बनाया गया एक-एक एक्वेरियम भी दिया गया.

इस अवसर पर अधिष्ठाता ने विश्वविद्यालय के कुलपति के साथ ही राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद, तेलंगाना का इस स्वरोजगारोंन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन मात्स्यिकी महाविद्यालय में कराने के लिए गहरा आभार व्यक्त किया गया, अधिष्ठाता ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए प्रशिक्षणार्थियों से सजावटी मछलियों के पालन के लिए प्रेरित किया गया. उन्होंने बताया की प्रशिक्षणार्थी सजावटी मछलियों के प्रजनन, पालन का तकनीकी और क्रियाशील प्रशिक्षण से प्राप्त तकनीकी ज्ञान द्वारा एक छोटे जगहों पर अल्प पूंजी से स्वरोजगार अपनाकर बेहतर लाभ प्राप्त कर सकते हैं, सजावटी मत्स्य पालन व्यवसाय एक बहुत ही उभरता हुआ क्षेत्र है, तकनीकी ज्ञान अर्जित कर प्रशिक्षणार्थी कम लागत में एक्वेरियम निर्माण कार्य शुरू कर अच्छा आमदनी प्राप्त कर सकते हैं. सजावटी मछलियों के पालन से मनोरंजन के साथ ही स्वास्थ्य लाभ भी प्राप्त होता है. सजावटी मछलियों के साथ समय बिताने से स्ट्रेस लेवल को आसानी से कम किया जा सकता है साथ ही एंजाइटी में भी आराम मिलता है. उन्होंने प्रशिक्षण में उपस्थित महिलाओं तथा युवकों प्रशिक्षणार्थियों को बताया कि वे अपने तकनीकी ज्ञान को समाज के अन्य लोगों तक भी पहुंचाने का भी कार्य करें तथा सभी प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि वे सजावटी मछलियों का मत्स्य पालन कार्य एवं एक्वेरियम निर्माण व्यवसाय अवश्य करें व समाज में अन्य लोगों को भी इस स्व-रोजगार से जुड़ने हेतु जागरूक करें, उन्होंने बताया कि यह प्रशिक्षण प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना अंतर्गत संचालित किया जा रहा है. मौके पर मुजफ्फरपुर जिले के जीविका के माध्यम से चयनित 25 प्रशिक्षणार्थियों के साथ जीविका मुजफ्फरपुर की जिला परियोजना प्रबंधक अनीषा और उनके सहयोगीगण, जीविका मुरौल के जीविकोपार्जन विशेषज्ञ साकेत कुमार कर्ण, मात्स्यिकी महाविद्यालय, के शिक्षक डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ. सुजीत कुमार नायक, डॉ.मुकेश कुमार सिंह, डॉ.तनुश्री घोड़ई महाविद्यालय कर्मी डॉ.राजेश कुमार, विनोद कुमार, साजन कुमार भारती इत्यादि मौजूद थे. विगत तीन दिनों से चलने वाले इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में महाविद्यालय के मत्स्य संसाधन प्रबंधन विभाग के वैज्ञानिक व प्रशिक्षण संयोजक डॉ. रोशन कुमार राम ने प्रशिक्षणार्थियों को सजावटी मछलियों के प्रजनन, पालन एवं एक्वेरियम निर्माण के लिए व्यवहारिक एवं क्रियाशील प्रशिक्षण दिया गया. महाविद्यालय के फिशरिज स्नातक अंतिम वर्ष के छात्र आशीष कुमार राय, सत्यम कुमार झा, अजीत कुमार एवं शिवांशु भास्कर ने भी प्रशिक्षण कार्यक्रम में तकनीकी सहायता दी. प्रशिक्षण पाकर सभी प्रशिक्षणार्थियों में काफी प्रसन्नता एवं आत्मविश्वास दिखाई दे रहा था.

भास्कर 14/3/25 पेज 20

मौसम • अधिकतम तापमान 34 से 36 डिग्री व न्यूनतम तापमान 18 से 20 डिग्री के बीच रहने का अनुमान

# उत्तर बिहार में 19 तक आसमान में हल्के बादल व कुछ जिलों में बारिश की संभावना, बढ़ेगी गर्मी

## 5 से 7 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से पछिया हवा चलेगी

भास्कर न्यूज | समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों में 19 मार्च तक आसमान में हल्के बादल छाए रह सकते हैं। गोपालगंज और पश्चिमी चंपारण में 15-16 मार्च के आसपास कहीं-कहीं हल्की बारिश होने की संभावना है। अन्य जिलों में मौसम शुष्क रहेगा। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, इस दौरान अधिकतम तापमान 34 से 36 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 18 से 20 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। पछुआ हवा 5 से 7 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलेगी। सुबह सापेक्ष आर्द्रता 75 से 80 प्रतिशत और दोपहर में 35 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है। मौसम शुष्क रहने की संभावना को देखते हुए किसान फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। सरसों की कटाई, दौनी और सुखाने का काम प्राथमिकता से पूरा करें। भूमि का तापमान 30 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो गया है, इसलिए तैयार आलू की खुदाई जल्द करें। आम के बगीचों में मंजर पूरी तरह आ चुका है। इस दौरान किसान किसी भी प्रकार के कृषि रसायन का प्रयोग न करें। विकृत मंजर को तोड़कर बाग से बाहर ले जाकर जला दें या जमीन में गाड़ दें। ओल की बुआई के लिए गजेन्द्र किस्म उपयुक्त है। 0.5 किलोग्राम के कंद की रोपाई 75x75 सेमी की दूरी पर करें। 0.5 किलोग्राम से कम वजन के कंद न लगाएं। बीज दर 80 क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई से पहले प्रति गड्ढे में 3 किलोग्राम सड़ी गोबर खाद, 20 ग्राम अमोनियम सल्फेट या 10 ग्राम यूरिया, 37.5 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट और 16 ग्राम पोटेशियम सल्फेट डालें। कटे कंद को ट्राइकोडर्मा भिरीडी दवा के 5 ग्राम प्रति लीटर गोबर घोल में 20-25 मिनट तक डुबोकर रखें। फिर छाया में 10-15 मिनट सुखाकर रोपाई करें। इससे मिट्टी जनित बीमारियों से बचाव होगा और अच्छी उपज मिलेगी।

खेतों में कटाई योग्य सरसों की फसल।

### बैंगन की फसल में कीट नियंत्रण जरूरी

बैंगन की फसल में तना और फल छेदक कीट का प्रकोप बढ़ सकता है। यह कीट फल के अंदर घुसकर उसे पूरी तरह नष्ट कर देता है। प्रभावित फलों की बढ़वार रुक जाती है और पूरी फसल खराब हो सकती है। कीट दिखने पर तुरंत प्रभावित तना और फलों को तोड़कर नष्ट करें। इसके बाद स्पीनेसेड 48 ईसी का 1 मिली प्रति 4 लीटर पानी या क्वीनालफॉस 1.5 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

### गरमा मूंग और उड़द की बुआई प्राथमिकता से करें

बुआई से पहले 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 45 किलोग्राम फॉस्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश और 20 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर डालें। मूंग के लिए पूसा विशाल, सम्राट, एसएमएल-668, एचयूएम-16 और सोना किस्में उपयुक्त हैं। उड़द के लिए पंत उड़द-19, पंत उड़द-31, नवीन और उत्तरा किस्में अनुशंसित हैं। बुआई से दो दिन पहले बीज को 2.5 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति किलोग्राम की दर से शोधित करें। बुआई से ठीक पहले बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें। छोटे दानों के लिए बीज दर 20-25 किलोग्राम और बड़े दानों के लिए 30-35 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई की दूरी 30x10 सेमी रखें। मिट्टी में नमी की जांच कर बुआई करें।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 16 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 33 से 35 व न्यूनतम 17 से 22 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 14 मार्च | 26.8 | 10.5 |
| 15 मार्च | 27.0 | 11.0 |
| | दरभंगा | |
| 14 मार्च | 27.0 | 11.0 |
| 15 मार्च | 27.0 | 11.5 |
| | पटना | |
| 14 मार्च | 28 | 12.0 |
| 15 मार्च | 28 | 12.0 |

डिग्री सेल्सियस में

प्रभात खबर 17-03-25 पेज 4

## आईएसएएस का 75वां सम्मेलन डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में होगा

# सम्मेलन से अवसरों को तलाश करने में मिलेगा सहयोग : कुलपति

**सम्मेलन की तैयारी**

- इस सम्मेलन में पूरे भारत के विश्वविद्यालयों और संस्थानों से 250 से अधिक प्रतिनिधि भाग लेंगे

प्रतिनिधि, पूसा

भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसाइटी (आईएसएएस) का 75वां सम्मेलन डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में आयोजित किया जायेगा. यह सम्मेलन 20 से 22 मार्च तक तीन दिनों तक चलेगा. विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने बताया कि सम्मेलन का विषय कृषि में डेटा क्रांति : विकसित भारत 2047 के लिए नवाचारी सांख्यिकीय और गणनात्मक विधियां है. उन्होंने कहा कि भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी की स्थापना देश के प्रथम कृषि मंत्री और प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डॉ राजेन्द्र प्रसाद ने की थी. उन्होंने कहा कि बाद में भी वे लगभग सोलह वर्ष तक इस संस्था से जुड़े रहे. उन्होंने कहा कि पूसा में इस कांफ्रेंस का आयोजन विश्वविद्यालय के लिए गौरव का विषय है.

इस सम्मेलन में पूरे भारत के विश्वविद्यालयों और संस्थानों से 250 से अधिक प्रतिनिधि भाग लेंगे. कॉलेज ऑफ बेसिक साइंस एंड ह्यूमैनिटीज के डीन डॉ. अमरेश चंद्रा ने बताया कि यह एक अनोखा अवसर है. जिसमें पूरे देश के 250 से अधिक प्रसिद्ध वैज्ञानिक भाग लेंगे. विश्वविद्यालय सभी प्रतिनिधियों के स्वागत के लिए तैयारी कर रहा है. उन्होंने कहा कि तीन दिनों तक चलने वाले इस कार्यक्रम में देश को 2047 तक विकसित बनाने में सांख्यिकी के योगदान पर गहन मंथन किया जायेगा. निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा ने कहा कि पूसा कृषि अनुसंधान की जन्मस्थली है. सभी वैज्ञानिक पुराने इंपीरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट की यादें भी देखेंगे जिसे विश्वविद्यालय में कुलपति डॉ पांडेय के प्रयासों से सहेज कर रखा गया है. उन्होंने कहा वैज्ञानिकों को मिथिला क्षेत्र की आवभगत और संस्कृति का भी अनुभव होगा. ऐसा प्रयास किया जा रहा है. विश्वविद्यालय ने सम्मेलन के लिए 20 से अधिक समितियों का गठन किया है. यह सम्मेलन 20 मार्च से 22 मार्च तक आयोजित किया जायेगा.

इस सम्मेलन का उद्देश्य कृषि क्षेत्र में डेटा क्रांति के माध्यम से नवाचारी सांख्यिकीय और गणनात्मक विधियों को बढ़ावा देना है. इस सम्मेलन से कृषि अनुसंधान और विकास में नए अवसरों को तलाश करने में सहयोग मिलेगा.

के बाद पुलिस गांव में कैंप किए हुए हैं।

राष्ट्रीय सहारा 17/3/25 पृ 5

# भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसाइटी का 75वां सम्मेलन 20 से

समस्तीपुर/पूसा (एसएनबी)। भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसाइटी (आईएसएएस) का 75वां सम्मेलन डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में आयोजित किया जाएगा। यह सम्मेलन 20 मार्च से 22 मार्च तक तीन दिनों तक चलेगा। इस बाबत विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडे ने बताया कि सम्मेलन का विषय कृषि में डेटा क्रांति - विकसित भारत 2047 के लिए नवाचारी सांख्यिकीय और गणनात्मक विधियाँ है। इस सम्मेलन का उद्देश्य .षि क्षेत्र में डेटा क्रांति के माध्यम से नवाचारी सांख्यिकीय और गणनात्मक विधियों को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि भारतीय .षि सांख्यिकी सोसायटी की स्थापना देश के प्रथम .षि मंत्री और प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद के द्वारा किया गया था। उन्होंने कहा कि बाद में भी वे लगभग सोलह वर्ष तक इस संस्था से जुड़े रहे। उन्होंने कहा कि पूसा में इस कांफ्रेंस का आयोजन विश्वविद्यालय के लिए गौरव का विषय है। इस सम्मेलन में पूरे भारत के विश्वविद्यालयों और संस्थानों से 250 से अधिक प्रतिनिधि भाग लेंगे। कॉलेज ऑफ बेसिक साइंस एंड ह्यूमैनिटीज के डीन डॉ. अमरेश चंद्रा ने बताया कि यह एक अनोखा अवसर है जिसमें पूरे देश के 250 से अधिक प्रसिद्ध वैज्ञानिक भाग लेंगे। विश्वविद्यालय सभी प्रतिनिधियों के स्वागत के लिए तैयारी कर रहा है। उन्होंने कहा कि तीन दिनों तक चलने वाले इस कार्यक्रम में देश को 2047 तक विकसित बनाने में सांख्यिकी के योगदान पर गहन मंथन किया जाएगा। निदेशक शिक्षा डॉ उमाकांत बेहरा ने बताया कि पूसा कृषि अनुसंधान की जन्मस्थली है। इस सम्मेलन के दौरान वैज्ञानिक पुराने इंपीरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट की यादें भी देखेंगे जिसे विश्वविद्यालय में कुलपति डॉ पांडेय के प्रयासो से सहेज कर रखा गया है। वहीं उन्हें मिथिला क्षेत्र के आवभगत की परंपरा और सांस्कृतिक विरासत का भी अनुभव होगा। विश्वविद्यालय ने सम्मेलन की सफलता के लिए 20 से अधिक समितियों का गठन किया है। इस सम्मेलन से कृषि अनुसंधान और विकास में नए अवसरों को तलाश करने में सहयोग मिलेगा।

सहारा 17/3/25 P-5

संक्षिप्त खबरें

## तेज हवा के साथ बारिश व वज्रपात की संभावना

**समस्तीपुर।** रविवार की सुबह अचानक मौसम बदल गया। आसमान में मध्यम बादलों के बीच कई जगहों पर हल्की बूंदाबांदी भी देखी गई है। मौसम विभाग के मुताबिक आज अधिकतम तापमान 36 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 22 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। इसी बीच मौसम विभाग ने समस्तीपुर सहित 12 जिलों में हल्की बारिश का अलर्ट भी जारी किया है। इन जिलों में पश्चिमी और पूर्वी चंपारण, सीवान, सारण, गोपालगंज, सीतामढ़ी, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, वैशाली, शिवहर, समस्तीपुर, बक्सर, भोजपुर, रोहतास, भभुआ, औरंगाबाद और अरवल शामिल है। इन जिलों में हल्की से मध्यम बारिश और वज्रपात की संभावना व्यक्त की गई है। साथ ही तेज हवाएं चलने की भी चेतावनी जारी की गई है। मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार पश्चिमी विक्षोभ के कारण हिमालय क्षेत्र में बर्फबारी हो रही है, जिसका असर बिहार के मैदानी इलाकों में भी देखने को मिल रहा है। इसके कारण आने वाले दो दिनों यानी 16 और 17 मार्च को कई जिलों में हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है, साथ ही वज्रपात की भी चेतावनी दी गई है। मौसम विभाग के मुताबिक अगले एक सप्ताह के दौरान बिहार में तेज हवाएं चलने की संभावना है। इस बीच कुछ इलाकों में हल्की बारिश भी हो सकती है। सोमवार से बुधवार तक अधिकतम तापमान 35 डिग्री सेल्सियस से 36 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है। मौसम विभाग ने लोगों से यह भी अपील की है कि वे खराब मौसम के दौरान अपने पशुओं और खुद के साथ बाहर जाने से बचें। आंधी-तूफान के दौरान पेड़-पौधों के नीचे शरण न लें। बारिश के दौरान सुरक्षित स्थान पर जाकर बैठें।

राष्ट्रीय सहारा 17/3/25 पेज 5

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पौधा रोग विभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक ने दी जानकारी

# आम व लीची के बागों से बेहतर पैदावार के लिए वैज्ञानिक तरीके से करें प्रबंधन

भास्कर न्यूज़ | पूसा

आम एवं लीची बिहार की प्रमुख फलों की फसल है। इस साल बिहार के अधिकांश भागों में आम एवं लीची में बहुत ही अच्छे फूल तथा उसके बाद छोटे छोटे फल भी लग चुके हैं। इस अवस्था में किसानों को अपने बगीचों पर कुछ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। अन्यथा हमें आशातीत लाभ नहीं मिल पाएगा। यह जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पुसा के पौधा रोग विभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.एस के सिंह ने दी है। उन्होंने आम व लीची के बगीचों से जुड़े किसानों को सुझाव देते हुए कहा कि आम व लीची के बाग में जब मंजरों पर पर्याप्त मात्रा में फूल लगे हो तो इस अवस्था में किसी तरह का कोई कीटनाशक का प्रयोग नहीं करना चाहिए। कीटनाशक का प्रयोग जहां बागों में कीटों को नहीं पहुंचने देगा वही इससे परागण भी नहीं हो पाएगा। इस वजह से पौधों में फल भी नहीं लग पाएंगे। उन्होंने कहा कि यदि बागों में ब्लॉसम ब्लाइट रोग लगा हो तो ऐसी स्थिति में किसानों को हेक्साकोनाजोल नामक दवा का प्रयोग 1 मिलीलीटर दवा 1 लीटर पानी में घोल कर करना चाहिए। इस दवा के छिड़काव से इस रोग के उग्रता में काफी कमी आ जाएगी। उन्होंने कहा कि जब बागों में फूल पूरी तरह से खिले हो तो बागों में सिंचाई नहीं करनी चाहिए।

## बागों में फूल पूरी तरह से खिले हों तो बागों में सिंचाई नहीं करनी चाहिए

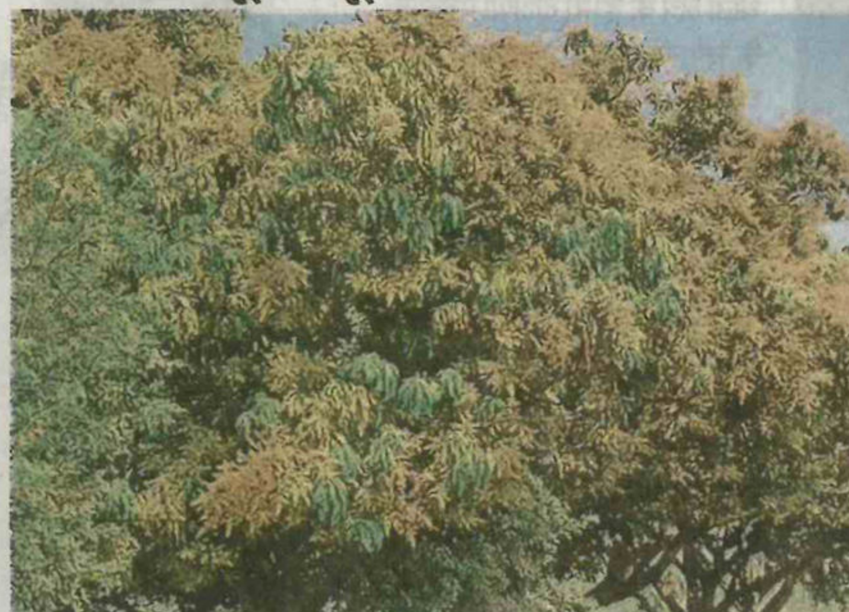

पूसा में आम के पेड़ों पर लगे मंजर।

### लीची के बाग से शहद उत्पादन करें

लीची के बागों में जब फूल अच्छी तरह से खिले हो इस अवस्था में बाग में 15 से 20 मधुमक्खियों के बक्से रख देने से परागण काफी अच्छा होता है। उन्होंने कहा कि लीची के बगीचे में मधुमक्खियों के बक्से रखने से पेड़ पर फल काफी अच्छे ढंग से लगते हैं। उन्होंने कहा कि जिन बागों में फूल के स्थान पर फल लग गए हो उन बागों में सिंचाई प्रारंभ कर दिया जाना चाहिए तथा प्रति वयस्क पेड़ 300 ग्राम यूरिया, 250 ग्राम पोटेशियम सल्फेट तथा 5 से 10 किलोग्राम कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट पेड़ में चारों तरफ से रिंग बनाकर देना चाहिए। पौधों का रिंग एक से डेढ़ मीटर दूरी पर तथा 9 इंच गहरा 9 इंच चौरा बनाना चाहिए। उन्होंने बताया कि रिंग से आधी मिट्टी को निकालकर आधी मिट्टी में उर्वरकों को मिलाने के बाद बाकी बचे आधे मिट्टी से रिंग को भर देना चाहिए।

## आम व लीची के फलों को झड़ने से बचाने के लिए दवा का करें छिड़काव

उन्होंने किसानों को महत्वपूर्ण सलाह देते हुए कहा कि आम व लीची के फलों को झड़ने से बचाने के लिए किसान प्लेनोफिक्स नामक दवा एक मिली लीटर प्रति 4 लीटर पानी के साथ घोल कर छिड़काव कर सकते हैं। इसके अलावे चूर्णिल आसिता रोग से बचाव के लिए किसान तरल सल्फर फफूंदनाशक दवा को 1 मिलीलीटर 1 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव कर सकते है।उन्होंने कहा कि फलों को फटने से बचाने के लिए आवश्यक है कि किसान बागों में बोरेक्स नामक दवा 4 ग्राम 1 लीटर पानी में घोलकर स्प्रे कर दे। इसका छिड़काव 10 से 15 अप्रैल के बीच होना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसानों को चाहिए कि वे बागों की मिट्टी को कभी भी सूखने न दें। लीची को फलभेदक कीट से बचाने के लिए बाग को साफ सुथरा रखना अति आवश्यक है। इसके अलावे किसान इमिडावलोप्रिड नामक दवा भी 1 एमएल 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर सकते हैं। अंततः उन्होंने बताया कि उपरोक्त सभी उपायों को अपनाकर किसान बागों से अधिक से अधिक फल उत्पादन और लाभ दोनों प्राप्त कर सकते हैं।

"दैनिक भास्कर" दि० 17/3/25 P-17

# मृदा की उर्वरता शक्ति को बचाने की जरूरत : डॉ पुनीत कुमार सिंह

**आयोजन**

वैज्ञानिकों के साथ प्रतिभागी.

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, अनुसंधान एवं गतिविधियां विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए राज्य प्रबंधक डॉ पुनीत कुमार सिंह ने कहा कि अगली पीढ़ी के बेहतर भविष्य को देखते हुए मृदा की उर्वरक शक्ति को बचाने की जरूरत है. एनएफएल यूरिया से मृदा शक्ति को क्षीण हो रही है. इससे बचाने के लिए रासायनिक उर्वरक का प्रयोग कम करते हुए जैविक खाद के प्रयोग पर जोर देने की आवश्यकता है. प्राकृतिक खेती अपनाने पर बदलते जलवायु के परिवेश में किसान लक्ष्य के अनुरूप उत्पादन लेने में सक्षम हो सकते हैं. एनएफएल भारत सरकार का उपक्रम में से एक है. समूचे भारत में 7.50 लाख टन रासायनिक उर्वरक का प्रयोग किया जा रहा है. इसमें 3.50 लाख टन सिर्फ यूरिया का प्रयोग होता है. इसमें से किसानों के माध्यम से अत्यधिक प्रयोग करने के कारण 2 लाख टन यूरिया बेकार ही चली जाती है. इसे वैज्ञानिकी विधि से सुधारने की जरूरत है. स्वागत भाषण करते हुए वैज्ञानिक फूलचंद ने कहा कि मृदा स्वास्थ्य को बचाने के लिए राज्य एवं केंद्र सरकार ने विवि के सहयोग से किसानों के खेत में नित्य नये-नये अनुसंधान कर किसानों के आर्थिक स्थिति को सबल बनाने की दिशा में क्रियाशील है. संचालन करते हुए प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डा विनिता सतपथी ने कहा कि मां और मिट्टी को समान दर्जा प्राप्त है. इसी सुरक्षित एवं संरक्षित रखने का दायित्व किसानों की है.

पूरी दुनिया में सिर्फ भारत की ही मिट्टी पूजनीय है. जलवायु परिवर्तन की दौर में टिकाऊ खेती की जरूरत है. मौके पर मृदा वैज्ञानिक डा एसपी सिंह, एनएफएल समस्तीपुर प्रभारी जय प्रकाश, टेक्निकल टीम में सुरेश कुमार, सूरज कुमार आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Tuesday, March 18, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67d87300b64387aa4301032f

भास्कर 18/3/25 पेज 18

कृषि • वैज्ञानिक तकनीक से की गई मूंग की खेती किसानों को दिलाएगी बेहतर पैदावार और आमदनी

# ग्रीष्मकालीन मूंग की बुआई महीने के अंत तक हर हाल में करें बीज को दीमक से बचाने को रासायनिक दवा डालें : वैज्ञानिक

भास्कर न्यूज़ | पूसा

बिहार के किसान गेहूं, धान और मक्के की खेती को करने के अलावे दलहन और तिलहन की खेती पर विशेष रूप से ध्यान दें। दलहन और तिलहन का उत्पादन कम होने के कारण प्रतिवर्ष देश में दाल और तेल का आयात करना पड़ता हैं। ये जानकारी कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. रविंद्र कुमार तिवारी ने दी है।

उन्होंने कहा कि मौजूदा समय ग्रीष्मकालीन मूंग की बुआई का हैं। ऐसे में बिहार के किसान मार्च के अंत तक मूंग की वैज्ञानिक खेती कर बेहतर उत्पादन और लाभ दोनों प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे तो सभी प्रकार के दलहन फसल लेकिन खासकर मूंग के दाल में पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट एवं वसा पाया जाता है जो मनुष्य के शरीर के लिए अत्यंत ही लाभकारी हैं। उन्होंने कहा कि इतना ही नहीं दलहनी फसल को प्रत्येक साल खेत में लगाने से मृदा की उर्वरा शक्ति भी निरंतर बढ़ती रहती है। उन्होंने बताया कि मूंग के लिए जहां नम एंव गर्म जलवायु की आवश्यकता होती है। वही इसकी खेती के लिए दोमट से बलुआर दोमट मिट्टी काफी उपयुक्त मानी जाती हैं। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि कि.ान सबसे पहले हल व रोटावेटर के माध्यम से खेत की गहरी जुताई करायें। इसके बाद खेत से खरपतवार निकालकर खेत में पाटा चलाकर उसे समतल कर दें। मूंग की फसल को दीमक से बचाने के लिए खेत तैयार करते समय खेत में क्लोरपायरीफॉस 1.5 प्रतिशत का चूर्ण 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से जरूर मिलाएं। इसके अलावे एक एकड़ खेत में मूंग की बुआई करने से पूर्व खेत को तैयार करते वक्त मिट्टी में 8 किलो नत्रजन, 20 किलो स्फुर, 8 किलो पोटाश एवं 8 किलो गंधक जरूर मिला दें।

पूसा के मोरसंड गांव में खेत में की गई मूंग की बुआई।

## मूंग की इन किस्मों की करें बुआई, होगी अधिक उपज

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि मूंग से उच्च स्तरीय उत्पादन प्राप्त करने के लिए किसान हमेशा गुणवत्ता वाले बीजों का चयन करें तथा बीज को उपचारित करने के बाद ही इसकी बुआई करें।किसान टाम्बे जवाहर मूंग 3, जवाहर मूंग 721, 3 के 851, एच यू एम 1, पी.डी.एम 11,पूसा विशाल आदि मूंग के प्रभेदों को लगाकर बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। इससे किसानों को अच्छी आमदनी होगी।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 19 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों मे मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 33 से 35 व न्यूनतम 17 से 22 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 18 मार्च | 26.8 | 10.5 |
| 19 मार्च | 27.0 | 11.0 |
| | दरभंगा | |
| 18 मार्च | 27.0 | 11.0 |
| 19 मार्च | 27.0 | 11.5 |
| | पटना | |
| 18 मार्च | 28 | 12.0 |
| 19 मार्च | 28 | 12.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 18-03-2025

Times of India 18-03-25 P-2

# RPCAU to host 3-day conf on agri statistics

**B K Mishra** | TNN

**Patna:** Rajendra Prasad Central Agricultural University (RPCAU), Pusa, will host the three-day 75th annual conference of the Indian Society of Agricultural Statistics from March 20 to 22. The event will bring together 250 delegates from across India to discuss innovative statistical and computational methods for agriculture.

RPCAU's information officer Rajyavardhan Kumar said the theme of the conference, "Data Revolution in Agriculture: Innovative Statistical and Computational Methods for Viksit Bharat@2047," aligns with the govt's vision for a developed India by 2047. He pointed out that this event will provide a platform for experts to share their knowledge and experiences in applying statistical and computational methods to agriculture.

"The conference will feature technical sessions, paper presentations and panel discussions on various topics related to agricultural statistics. Delegates will also have the opportunity to visit the historic Imperial Research Institute and experience the rich culture of the Mithila region," he said. RPCAU has constituted over 20 committees to ensure peaceful conduct of the conference.

**BRIGHT BIHAR**
EDUCATION IS POWER

# 22 मार्च को हल्की बारिश व ओला गिरने के आसार

**समस्तीपुर .** डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केंद्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 19 से 23 मार्च, 2025 तक के लिये मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. अनुकूल मौसमीय सिस्टम के प्रभाव से 22 मार्च के आसपास उत्तर बिहार के अनेक स्थानों पर गरज वाले बादल बनने के साथ हल्की वर्षा या बूंदाबांदी हो सकती है. वर्षा के समय तेज हवा बह सकती है. कुछ स्थानों पर ओलावृष्टि की भी सम्भावना है. अधिकतम तापमान 34 से 35 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है. न्यूनतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है.पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 9 से 12 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की सम्भावना है. 23 मार्च को तेज हवा के साथ पुरवा हवा चलने की सम्भावना है. सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 65 से 75 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 35 प्रतिशत रहने की संभावना है.आज का अधिकतम तापमान 32.4 डिग्री सेल्सियस रहा जो सामान्य से 0.9 डिग्री अधिक रहा, वहीं न्यूनतम तापमान 16.0 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 0.7 डिग्री कम रहा.

प्रभात खबर
Wednesday, March 19, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/

# मृदा की गुणवत्ता व स्वस्थ बनाने की जरूरत : डॉ सतपथी

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, अनुसंधान एवं प्रसार गतिविधियां विषय पर जारी प्रशिक्षण प्रमाण पत्र वितरण के साथ ही सम्पन्न हुआ. अध्यक्षता करते हुए प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डा विनिता सतपथी ने कहा कि जलवायु परिवर्तन विश्व की समस्या बनी हुई है. इस तरह के हालात से आने वाले पीढ़ियों को संरक्षित एवं सुरक्षित बनाए रखने के लिए मृदा की गुणवत्ता एवं स्वास्थ्य प्रबंधन की दिशा में कार्य करने की जरूरत है. मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, मिट्टी की गुणवत्ता और स्वास्थ्य को बनाये रखने

प्रमाणपत्र के साथ प्रतिभागी.

और बेहतर करने के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू है. जिसमें जैविक और रासायनिक उर्वरकों का संतुलित उपयोग, मृदा परीक्षण और उचित जल प्रबंधन शामिल हैं. मिट्टी की उर्वरता और पोषक तत्वों की कमी जानने के लिए मृदा परीक्षण आवश्यक है. रासायनिक उर्वरकों के साथ-साथ जैविक खाद और जैव-उर्वरकों का उपयोग करके मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाया जा सकता है. सिंचाई और जल निकासी को उचित तरीके से प्रबंधित करना मिट्टी के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है. धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक फूलचंद ने किया. मौके पर जयप्रकाश, टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, सूरज कुमार, विक्की कुमार आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Wednesday, March 19, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67d9c4316f29db6fa7e45372

भास्कर 19/3/25 पेज 16

**मौसम** • अधिकतम तापमान 34 से 35 डिग्री व न्यूनतम 20 से 22 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है

# अनुकूल मौसमीय सिस्टम के प्रभाव से 22 को बारिश और ओला गिरने की संभावना

## कुछ जगहों पर गरज वाले बादल के साथ हल्की बारिश या बूंदाबांदी हो सकती है

भास्कर न्यूज | समस्तीपुर

उत्तर बिहार में 22 मार्च के आसपास मौसम बदल सकता है। गरज वाले बादल बनेंगे। हल्की बारिश या बूंदाबांदी हो सकती है। कुछ जगहों पर ओले भी गिर सकते हैं। बारिश के दौरान तेज हवा चलने की संभावना है। अधिकतम तापमान 34 से 35 डिग्री सेल्सियस रहेगा। न्यूनतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। पूर्वानुमान के अनुसार, 9 से 12 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से पछिया हवा चलेगी। 23 मार्च को तेज पुरवा हवा चलने की संभावना है। सुबह की सापेक्ष आर्द्रता 65 से 75 प्रतिशत रहेगी। दोपहर में यह 30 से 35 प्रतिशत तक रह सकती है। बारिश की संभावना को देखते हुए किसान 21-22 मार्च को कृषि कार्यों में सावधानी बरतें। खेतों में नमी और बारिश की संभावना को देखते हुए सिंचाई फिलहाल 2-3 दिन के लिए रोक दें। आम के बगीचों में मंजर पूरी तरह आ चुका है। इस समय किसी भी कृषि रसायन का प्रयोग न करें। विकृत मंजर को तोड़कर बाग से बाहर ले जाकर जला दें या जमीन में गाड़ दें। ओल की रोपाई का यह सही समय है। गजेन्द्र किस्म की रोपाई करें। 0.5 किलोग्राम वजन वाले कंद की रोपाई के लिए 75x75 सेमी की दूरी रखें। 0.5 किलोग्राम से कम वजन वाले कंद न लगाएं। बीज दर 80 क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखें।

## 9 से 12 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से पछिया हवा चलेगी

खेतों में लगी गेहूं की फसल।

### गरमा मूंग और उरद की बुआई करें बुआई से पहले बीच उपचार जरूरी

गरमा मूंग और उरद की बुआई प्राथमिकता से करें। बुआई से पहले 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 45 किलोग्राम स्फूर, 20 किलोग्राम पोटाश और 20 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से डालें। मूंग के लिए पूसा विशाल, सम्राट, एसएमएल-668, एचयूएम-16 और सोना किस्में उपयुक्त हैं। उरद के लिए पंत उरद-19, पंत उरद-31, नवीन और उत्तरा किस्में अनुशंसित हैं। बुआई से दो दिन पहले बीज को कार्बेन्डाजीम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से शोधित करें। बुआई से ठीक पहले बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें। छोटे दानों के लिए बीज दर 20-25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर और बड़े दानों के लिए 30-35 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई की दूरी 30x10 सेमी रखें। मिट्टी में नमी की जांच कर बुआई करें।

## लत्तर वाली सब्जियों पर नजर रखें, कीट दिखे तो दवा का छिड़काव करें

नेनुआ, करेला, लौकी और खीरा की फसलों में लाल मूंग कीट का खतरा बढ़ सकता है। यह कीट पौधों की जड़ों को नुकसान पहुंचाते हैं। बड़े पौधों की पत्तियां और फूल भी खराब कर देते हैं। इससे पौधों की बढ़वार रुक जाती है और वे सूख सकते हैं। गाय के गोबर की राख में थोड़ा किरासन मिलाकर सुबह पौधों पर छिड़काव करें। ज्यादा नुकसान होने पर क्लोरोपायरीफास 2 प्रतिशत धूल दवा का 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। पत्तियों पर डाइक्लोरवास 76 ईसी का 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। बैगन की फसल में तना और फल छेदक कीट का प्रकोप बढ़ सकता है। यह कीट फल के अंदर घुसकर उसे पूरी तरह खराब कर देते हैं। प्रभावित फलों की बढ़वार रुक जाती है। कीट का असर दिखते ही संक्रमित तना और फलों को तोड़कर नष्ट कर दें। इसके बाद स्पीनेसेज 48 ईसी का 1 मि.ली. प्रति 4 लीटर पानी में घोलकर या क्वीनालफॉस 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 23 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में पांच दिनों के अंदर अनेक स्थानों पर बादल बनने के साथ बूंदाबांदी हो सकती है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में तेज हवा के साथ कुछ स्थानों पर ओलावृष्टि का भी अनुमान है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 19 मार्च | 31.0 | 16.0 |
| 20 मार्च | 31.0 | 17.0 |
| दरभंगा | | |
| 19 मार्च | 31.0 | 17.0 |
| 20 मार्च | 32.0 | 17.0 |
| पटना | | |
| 19 मार्च | 33 | 18.0 |
| 20 मार्च | 33 | 18.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 19-03-25

# 22 को उत्तर बिहार में वर्षा व ओलावृष्टि की संभावना

- मौसम विभाग ने 23 तक का पूर्वानुमान जारी किया
- इस अवधि में 9 से 12 किमी प्रति घंटे चलेगी हवा

पूसा, निज संवाददाता। अनुकूल मौसमीय प्रभाव से 22 मार्च के आसपास उत्तर बिहार के अनेक स्थानों पर गरज के साथ बादल रह सकते है। इससे हल्की वर्षा या बूंदाबांदी हो सकती है। वर्षा के समय हवा तेज रह सकती है।

कुछ स्थानों पर ओलावृष्टि की भी सम्भावना मौसम विभाग ने जताया है। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम विभाग ने मंगलवार को 23 मार्च तक का मौसम पूर्वानुमान जारी किया है। जिसके अनुसार इस अवधि में औसतन 9 से 12 किमी प्रति घंटा की गति से पछुआ हवा चलने की सम्भावना है। 23 मार्च को तेज हवा के साथ पुरवा हवा चल सकती है। इस दौरान सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 65 से 75 एवं दोपहर में 30 से 35 प्रतिशत रहने की संभावना है। पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान 34 से 35 डिग्री एवं न्यूनतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।

Hindustan 19-03-2025

# गन्ना सलाहकार सेवा मोबाईल ऐप का किया गया परीक्षण

**समस्तीपुर/हसनपुर (एसएनबी)।** गन्ना उद्योग विभाग, बिहार-सरकार के गन्ना विकास कार्यक्रम के अंतर्गत चल रहे मास परियोजना के तहत आज दिनांक 17ध03ध2025 को हसनपुर चीनी मिल स्थित गन्ना विभाग परिसर में गन्ना सलाहकार सेवा मोबाईल ऐप का परीक्षण किया गया । इस ऐप के परीक्षण के अवसर पर निदेशक बीज एवं प्रक्षेत्र डॉ डी. के. राय डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय .षि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। साथ में मास परियोजना के मुख्य अन्वेषक डॉ सी. के. झा, उपाध्यक्ष गन्ना सुरेंद्र पाल सिंह, वैज्ञानिक अनिल कुमार एवं ऐप डेवलपर श्रीकुमार सिन्हा मौजूद थे। कार्यक्रम में मुख्य अन्वेषक डॉ सी. के. झा ने गन्ना सलाहकार ऐप का विस्तृत प्रस्तुतीकरण दिया। उन्होंने उपस्थित किसानों को मोबाईल एप के पंजीकरण विधी, उपयोग करने का तरीका एवं इसके महत्व के बारे में विस्तृत जानकारी दिया। मुख्य अतिथि डॉ डी. के. राय ने गन्ने की उत्पादन विधि, बीज की महत्ता, बीज का उपचार एवं गन्ने संस्तुति को ऐप में शामिल होने पर प्रसन्नता जाहिर किया। ज्ञातव्य हो कि मुख्यमंत्री गन्ना विकास कार्यक्रम के अंतर्गत गन्ना उत्पादक किसानों के लिए मोबाईल एप का विकास ईख अनुसंधान, पूसा द्वारा किया जा रहा है। इस ऐप का मुख्य लक्ष्य गन्ना उत्पादक किसानों को गन्ना की उन्नत खेती की जानकारी एक प्लेटफार्म उपलब्ध करवाना है। उन्होंने ने किसानों से इस ऐप को बेहतर बनाने हेतु सुझाव भी मांगा। इस दौरान चीनी मिल के उपाध्यक्ष गन्ना सुरेंद्र पाल सिंह ने गन्ना सलाहकार ऐप में सीधे किसानों को गन्ना खेती के नए तकनीक, मौसम एवं किसानों के लिए योजनाओं के संबंध में जानकारी दिए जाने पर जोड़ दिया जिससे कि गन्ना उत्पादक किसानों को लाभ मिल सके। मौके पर वरीय प्रबंधक गन्ना पुनीत चौहान, प्रबंधक गन्ना अमित कुमार, प्रमोद मणि त्रिपाठी, अतुल कुमार मिश्रा, गौरव कुमार सिन्हा, राम.ष्ण प्रसाद, अमित कुमार राय, दीपक कुमार, शंभू चौधरी, शोभित शुक्ला, सुधांशु शुक्ला, मनोज महतो, रामनाथ सिंह, रमन कुमार सिंह सहित सैकड़ों गन्ना उत्पादक किसान एवं चीनी मिल के गन्ना विकास के सभी अधिकारी, पदाधिकारी एवं फील्ड कर्मचारी मौजूद थे।

कार्यक्रम में मौजूद पदाधिकारी व अन्य।

Rashtriya Sahara 19-03-2025

# हो सकती है 22 मार्च के आसपास गरज वाले बादलों के साथ हल्की बारिश, ओला वृष्टि के आसार

**समस्तीपुर।** जिले के डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा स्थित ग्रामीण .षि मौसम सेवा, एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जलवायू परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी 19-23 मार्च, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार अनुकूल मौसमीय सिस्टम के प्रभाव से 22 मार्च के आसपास उत्तर बिहार के अनेक स्थानों पर गरज वाले बादल बनने के साथ हल्की वर्षा या बूंदाबांदी हो सकती है। वर्षा के समय तेज हवा बह सकती है। कुछ स्थानों पर ओला वृष्टि की भी सम्भावना है। अधिकतम तापमान 34 से 35 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 9 से 12 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की सम्भावना है। 23 मार्च को तेज हवा के साथ पुरवा हवा चलने की सम्भावना है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 65 से 75 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 35 प्रतिशत रहने की संभावना है।

Rashtriya Sahara
19-03-2025

# किसानों की आय में बढ़ोतरी करने की जरूरत : डॉ तिवारी

**प्रतिनिधि, पूसा**

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के सभागार में वर्जित ज्ञान प्रमाण विषय पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए केंद्र प्रमुख डॉ आरके तिवारी ने कहा किसानों की आय में बढ़ोतरी करने की जरूरत है. इसके लिए किसानों को स्वरोजगार की दिशा में आगे बढ़ने की आवश्यकता है. इस कड़ी में मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण की शुरुआत की जा रही है. यह कार्यक्रम बिहार सरकार के श्रम संसाधन विभाग से बिहार कौशल विकास मिशन के अंतर्गत किया जा रहा है. इसमें 30 युवा भाग ले रहे हैं. कार्यक्रम का उद्देश्य समस्तीपुर जिले में मधुमक्खी पालन का विकास करते हुए अधिक से अधिक मधु उत्पादन करना है. किसानों के आय में बढ़ोतरी के साथ-साथ फसल उत्पादन में भी बढ़ोतरी करना है. यह प्रशिक्षण कार्यक्रम कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के सुमित कुमार सिंह जो कि पौध संरक्षण के विषय वस्तु विशेषज्ञ के द्वारा चलाया जा रहा है. केंद्र प्रमुख डॉ तिवारी ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया.

दीप जलाकर प्रशिक्षण सत्र का उद्घाटन करते अतिथि.

प्रभात खबर
Thursday, March 20, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67db1740c64fd8f7a9cad2bd

भास्कर 20/3/25 पेज 15

तैयारी • सम्मेलन में विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों और कृषि संस्थानों से पहुंचेंगे 250 से अधिक प्रतिनिधि

# आज पूसा केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसाइटी के 75वें सम्मेलन का आयोजन

भास्कर न्यूज | पूसा

भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसाइटी (आईएसएएस) का 75वां सम्मेलन डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के विद्यापति सभागार में 20 मार्च गुरुवार यानी आज से आयोजित किया जाएगा। यह सम्मेलन 20 मार्च से 22 मार्च यानी तीन दिनों तक चलेगा। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडे ने बताया कि सम्मेलन का विषय कृषि में डेटा क्रांति और विकसित भारत 2047 के लिए नवाचारी सांख्यिकीय और गणनात्मक विधियों पर आधारित है। उन्होंने कहा कि भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी की स्थापना देश के प्रथम कृषि मंत्री और प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा किया गया था। उन्होंने कहा कि डॉ. राजेंद्र प्रसाद लगभग सोलह वर्ष तक इस संस्था से जुड़े रहे। उन्होंने कहा कि पूसा में इस कांफ्रेंस का आयोजन विश्वविद्यालय के लिए गौरव का विषय है। बताया जाता है कि इस सम्मेलन में पूरे भारत के विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों और कृषि संस्थानों से पहुंचने वाले करीब 250 से अधिक प्रतिनिधि भाग लेंगे। कॉलेज ऑफ बेसिक साइंस एंड ह्यूमैनिटीज के डीन डॉ. अमरेश चंद्रा ने बताया कि यह एक अनोखा अवसर है जिसमें पूरे देश के 250 से अधिक प्रसिद्ध वैज्ञानिक भाग लेंगे। विश्वविद्यालय सभी प्रतिनिधियों के स्वागत के लिए सभी तरह की तैयारियों को पूरा कर चुका है। उन्होंने कहा कि तीन दिनों तक चलने वाले इस कार्यक्रम में देश को 2047 तक विकसित बनाने में सांख्यिकी के योगदान पर गहन चिंतन व मंथन किया जाएगा।

पूसा विवि का परिसर।

## पूसा कृषि विवि अनुसंधान की जन्मस्थली : उमाकांत बेहरा

निदेशक शिक्षा डॉ. उमाकांत बेहरा ने कहा कि पूसा कृषि विवि अनुसंधान की जन्मस्थली है। देश के कोने कोने से पुसा विवि पहुँचने वाले सभी वैज्ञानिक विवि के पुराने इंपीरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट की यादों से भी रूबरू होंगे जिसे विश्वविद्यालय में कुलपति डॉ. पांडेय के प्रयासो से सहेज कर रखा गया है। उन्होंने कहा बाहर से आने वाले वैज्ञानिकों को मिथिला क्षेत्र की आवभगत और संस्कृति का भी अनुभव होगा।विश्वविद्यालय ने सम्मेलन के लिए 20 से अधिक समितियों का गठन किया है। श्री बेहरा ने बताया कि इस सम्मेलन का उद्देश्य कृषि क्षेत्र में डेटा क्रांति के माध्यम से नवाचारी सांख्यिकीय और गणनात्मक विधियों को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन से कृषि अनुसंधान और विकास में नए अवसरों को तलाशने में सहयोग मिलेगा।

# मधुमक्खी पालन से फसल उत्पादन में भी होती वृद्धि

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय अंतर्गत केविके बिरौली द्वारा बिहार कौशल मिशन अंतर्गत प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण का उद्घाटन करते हुए केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक डा. आरके तिवारी ने कहा कि मधुमक्खी पालन एवं मधु उत्पादन एक अच्छा रोजगार है। बिहार की लीची की मधु आज पूरे देश में चर्चित है। यह प्रशिक्षण केंद्र के वास्तु विशेषज्ञ सुमित कुमार सिंह के देखरेख में 10 दिनों तक चलेगा।

Dainik Jagran 20-03-2025

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 23 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में पांच दिनों के अंदर अनेक स्थानों पर बादल बनने के साथ बूंदाबांदी हो सकती है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में तेज हवा के साथ कुछ स्थानों पर ओलावृष्टि का भी अनुमान है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 20 मार्च | 32.0 | 16.2 |
| 21 मार्च | 32.0 | 17.0 |
| दरभंगा | | |
| 20 मार्च | 32.0 | 17.0 |
| 21 मार्च | 33.0 | 17.0 |
| पटना | | |
| 20 मार्च | 34 | 18.0 |
| 21 मार्च | 34 | 18.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 20-03-2025

बुधवार को कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली में प्रशिक्षण में मौजूद प्रशिक्षु।

# मशरूम उत्पादन पर प्रशिक्षण शुरू

पूसा। कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली, में मधुमक्खी पालन विषय पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण बुधवार को शुरूआत हुई। केन्द्र प्रमुख डॉ .आरके तिवारी ने दीप प्रज्जवलित कर समारोह की शुरूआत की। बिहार सरकार के श्रम संसाधन विभाग के बिहार कौशल विकास मिशन के तहत आयोजित प्रशिक्षण में 30 युवाओं ने हिस्सा लिया। मौके पर उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण का उद्देश्य जिले में मधुमक्खी पालन का विकास करते हुए अधिक से अधिक मधु का उत्पादन करना है।

Hindustan 20-03-2025

# मधुमक्खी पालन विषय पर दस दिवसीय प्रशिक्षण आरंभ

**पूसा (एसएनबी)।** कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली परिसर में पुर्वा अर्जीत ज्ञान प्रमाणन के तहत मधुमक्खी पालन विषय पर आधारित दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का बुधवार को विधिवत शुभारंभ किया गया। इस प्रशिक्षण में 30 युवा प्रशिक्षु शामिल है। इस अवसर पर केवीके प्रमुख सह वरीय वैज्ञानिक डॉ आरके तिवारी ने प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा कि प्रशिक्षण का उद्देश्य जिला में मधुमक्खी पालन का विकास करना है। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण से किसानों को मधुमक्खी पालन व शहद उत्पादन में मदद मिलेगा। जिससे प्रशिक्षु मधुमक्खी पालन कर अपनी आय को बढ़ा सकते हैं। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम बिहार सरकार के श्रम संसाधन विभाग द्वारा बिहार कौशल विकास मिशन के तहत कराया जा रहा है। मौके पर सुमित कुमार सिंह सहित वैज्ञानिक एवं प्रशिक्षु उपस्थित थे।

संबोधित करते वैज्ञानिक व अन्य।

## डीएम ने किया प्रखंड मुख्यालय का निरीक्षण, दिये आवश्यक निर्देश

**मोरवा (एसएनबी)।** डीएम रौशन कुशवाहा ने बुधवार को डीडीसी संदीप शेखर प्रियदर्शी के साथ प्रखंड कार्यालय, अंचल कार्यालय, सीडीपीओ कार्यालय, मनरेगा कार्यालय ,एम ओ कार्यालय, पशुपालन विभाग, स्वास्थ्य विभाग, कृषि विभाग एवं शिक्षा विभाग का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने कई आवश्यक दिशा निर्देश दिये।

Rashtriya Sahara 20-3-2025

# डाटा के बिना विज्ञान व विकास की कल्पना मुश्किल

संबोधित करते डॉ मंगला राय व सभागार में मौजूद वैज्ञानिक.

**प्रतिनिधि, पूसा**

बिहार सरकार के मुख्यमंत्री कृषि सलाहकार सह भारत सरकार के पूर्व कृषि सचिव डीजी आइसीएआर नई दिल्ली डॉ मंगला राय ने कहा कि भारत को 2047 तक विकसित बनाने में सांख्यिकी की अहम भूमिका होगी. विज्ञान में डाटा और डाटा एनालिसिस की अहम भूमिका है. डाटा के बगैर विज्ञान और विकास की कल्पना करना भी मुश्किल है. उन्होंने कहा कि कृषि के शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं को सांख्यिकी की तकनीकी जानकारी होनी चाहिए. विशेषज्ञों को चाहिए कि वे आमलोगों को भी सांख्यिकी की मोटी जानकारी उपलब्ध करायें ताकि वे सच को पहचान सकें. डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी के तीन दिवसीय प्लैटिनम जुबली कांफ्रेंस का शुभारंभ करते हुए कृषि में डेटा क्रांति : 2047 तक विकसित भारत के लिए नवीन सांख्यिकीय और कम्प्युटेशनल विधियां की अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि सांख्यिकी के विशेषज्ञों को डाटा की सत्यता को लेकर सचेत रहना चाहिए. डाटा का काफी दुरुपयोग किया जा रहा है. कुछ महीनों में दस से अधिक सहायक प्राध्यापक डिजिटल एग्रीकल्चर से संबद्ध क्षेत्रों में बहाल किये जा रहे हैं. कहा कि तीन दिन तक चलने वाले इस कार्यक्रम में सांख्यिकी के विभिन्न आयामों पर गहन मंथन किया जायेगा. निष्कर्ष को पुस्तक के रूप में भी प्रकाशित किया जायेगा.

भारतीय कृषि सांख्यिकी के प्रेसिडेंट डॉ पद्म सिंह ने कहा कि सांख्यिकी सोसायटी का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि इसकी स्थापना सर सीवी रमन के निर्देश पर की गई थी. अखिल भारतीय सांख्यिकी सोसायटी के सचिव डॉ राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि 75वें कांफ्रेंस का ऐतिहासिक महत्व है. कालेज आफ बेसिक साइंस के डीन डॉ अमरेश चंद्रा ने स्वागत भाषण दिया. कांफ्रेंस में बीस से अधिक राज्यों के लगभग 250 से अधिक वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं. संचालन डा ऋतंभरा व डॉ अंजनी ने किया. धन्यवाद ज्ञापन डॉ महेश कुमार ने किया. इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने स्वर्णियर का भी विमोचन किया. कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार, निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, निदेशक प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ मयंक राय, मात्स्यिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ पीपी श्रीवास्तव, वैज्ञानिक डा विनय कुमार शर्मा, कृषि विज्ञान केंद्र जाले के पीसी डा दिव्यांशु शेखर, बिरौली के डा आरके तिवारी, निदेशक बीज डा डीके राय, डा बिनीता सतपथी, डा पुष्पा सिंह, डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ नीलांजय, डॉ कुमार राज्यवर्धन थे.

प्रभात खबर
Friday, March 21, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67dc64ccce61c0b10181c787

# किसानों को दी मधुमक्खी पालन की जानकारी

कार्यक्रम का उद्घाटन करते डीएओ व अन्य .

**प्रतिनिधि, समस्तीपुर**

मथुरापुर स्थित गजराज पैलेस में दो दिवसीय तेलहनी फसलों के साथ मधुमक्खीपालन विषय पर जिला स्तरीय कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण का आयोजन किया गया. इसका उद्घाटन डॉ. सुमीत सौरभ, जिला कृषि पदाधिकारी-सह-परियोजना निदेशक, आत्मा, डॉ. नागेन्द्र कुमार, वरीय वैज्ञानिक, कीट विज्ञान विभाग, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, प्रशांत कुमार, सहायक निदेशक, उद्यान, गंगेश कुमार चौधरी, उप परियोजना निदेशक, आत्मा, रिशु कुमार, सहायक निदेशक, कृषि अभियंत्रण, अमित कुमार, सहायक निदेशक, रसायन ने संयुक्त रूप से किया. मंच का संचालन मारूत नंदन शुक्ला, सहायक तकनीकी प्रबंधक, ताजपुर के द्वारा किया गया. प्रशिक्षक डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,पूसा के कीट विभाग के वरीय वैज्ञानिक ने मधुमक्खी पालन के बारे में विस्तार से बताया. उन्होंने कहा कि मधुमक्खी को घरेलू छत्ता विधि और बॉक्स विधि के जरिये पाला जा सकता है. उन्होंने मधुमक्खी के प्रकार, उसकी वंश वृद्धि, उत्पादित मधु के व्यापार के बारे में बताया. उन्होंने किसी सीजन में किस फसल से अधिक मधु का उत्पादन करने में मुधमक्खी सक्षम होता है उसके बारे में विस्तार से जानकारी दी. कहा कि कम लागत में मधुमक्खी पालन कर अधिक से अधिक लाभ लिया जा सकता है. इस कार्यक्रम में शांता कुमार चौधरी, बीटीएम, रंजीत कुमार रंजन, बीटीएम, मुकेश कुमार, के साथ-साथ 250 किसानों ने भाग लिया.

प्रभात खबर
Friday, March 21, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67dc64ccce61c0b10181c787

**पूसा विवि में कार्यक्रम** • भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी के तीन दिवसीय प्लैटिनम जुबली कांफ्रेंस के दौरान वैज्ञानिकों ने रखी राय

# भारत के विकास में सांख्यिकी की अहम भूमिका

भास्कर 21/3/25 पेज 16 भास्कर न्यूज | पूसा

**गिनाई उपलब्धि : दो वर्षों में पूसा केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय को 12 से अधिक पेटेंट मिले**

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के विद्यापति सभागार में भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी का तीन दिवसीय प्लैटिनम जुबली कांफ्रेंस आयोजित हुआ। उद्घाटन समारोह में बिहार के मुख्यमंत्री के कृषि सलाहकार और भारत सरकार के पूर्व कृषि सचिव व आईसीएआर के डीजी डॉ. मंगला राय सहित अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। मुख्य अतिथि डॉ. मंगला राय ने कहा कि 2047 तक भारत को विकसित बनाने में सांख्यिकी की अहम भूमिका होगी। विज्ञान में डाटा और डाटा एनालिसिस बेहद जरूरी है। डाटा के बिना विज्ञान और विकास की कल्पना मुश्किल है। कृषि के शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं को सांख्यिकी की तकनीकी जानकारी होनी चाहिए। विशेषज्ञों को आम लोगों को भी सांख्यिकी की बुनियादी जानकारी देनी चाहिए, ताकि वे सच को पहचान सकें। उन्होंने कहा कि कुलपति डॉ. पी एस पांडेय के नेतृत्व में विश्वविद्यालय तेजी से प्रगति कर रहा है। दो वर्षों में विश्वविद्यालय ने 12 से अधिक पेटेंट हासिल किए हैं, जो सराहनीय उपलब्धि है। वैज्ञानिकों को एकजुट होकर कार्य करने की जरूरत है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ऋतंभरा और डॉ. अंजनी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. महेश कुमार ने दिया। मौके पर कुलसचिव डॉ. मृत्युंजय कुमार, निदेशक शिक्षा डॉ. उमाकांत बेहरा, निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. मयंक राय, निदेशक बीज डॉ. डी के राय, डॉ. शिवपूजन सिंह, डॉ. नीलांजय, डॉ. कुमार राज्यवर्धन, डॉ. एसके सिंह, डॉ. आरके तिवारी समेत कई शिक्षक, वैज्ञानिक और पदाधिकारी मौजूद थे।

कार्यक्रम में मौजूद वैज्ञानिकों को संबोधित करते मुख्य अतिथि।

## देश भर में विश्वविद्यालय डिजिटल एग्रीकल्चर में अग्रणी भूमिका निभा रहा

कांफ्रेंस में मौजूद देश के विभिन्न राज्यों से पहुंचे वैज्ञानिक।

अखिल भारतीय सांख्यिकी सोसायटी के सचिव डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि विश्वविद्यालय में आयोजित 75वां कांफ्रेंस ऐतिहासिक महत्व रखता है। विश्वविद्यालय डिजिटल एग्रीकल्चर में अग्रणी भूमिका निभा रहा है, जिसमें सांख्यिकी की अहम भूमिका है। कॉलेज ऑफ बेसिक साइंस के डीन डॉ. अमरेश चंद्रा ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने कांफ्रेंस के उद्देश्यों पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि देश के 20 से अधिक राज्यों से 250 से अधिक वरिष्ठ वैज्ञानिक इसमें भाग ले रहे हैं। अगले तीन दिनों तक सांख्यिकी के विभिन्न विषयों पर गहन मंथन होगा।

## सांख्यिकी विशेषज्ञ डाटा की सत्यता को लेकर रहें सतर्क

कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने कहा कि सांख्यिकी विशेषज्ञों को डाटा की सत्यता को लेकर सतर्क रहना चाहिए। डाटा का दुरुपयोग बढ़ रहा है, जिससे सावधान रहने की जरूरत है। विश्वविद्यालय डिजिटल एग्रीकल्चर पर तेजी से काम कर रहा है। आने वाले महीनों में 10 से अधिक सहायक प्राध्यापक डिजिटल एग्रीकल्चर से जुड़े क्षेत्रों में नियुक्त किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि दुनियाभर में डाटा संकलन के नए मेथड और एल्गोरिद्म विकसित किए जा रहे हैं। तीन दिवसीय इस कांफ्रेंस में सांख्यिकी के विभिन्न आयामों पर वैज्ञानिक गहन मंथन करेंगे। कांफ्रेंस के निष्कर्षों पर एक पुस्तक प्रकाशित होगी। नीति निर्माताओं के साथ भी निष्कर्ष साझा किए जाएंगे, ताकि नीति निर्माण में मदद मिल सके। भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी के प्रेसिडेंट डॉ. पद्म सिंह ने कहा कि इस सोसायटी की स्थापना महान वैज्ञानिक सीवी रमन के निर्देश पर हुई थी। इसके पहले सचिव भारत के राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद थे, जो 16 वर्षों तक इस संस्था से जुड़े रहे। इस सोसायटी ने कृषि विकास में अहम भूमिका निभाई है।

# विज्ञान में डाटा एनालिसिस की अहम भूमिका : डा. मंगला

## सीएम के कृषि सलाहकार ने कहा–भारत को 2047 तक विकसित बनाने में सांख्यिकी की अहम भूमिका होगी

संबोधन करते मुख्य अतिथि डा. मंगला राय • जागरण

कृषि विश्वविद्यालय पूसा के विद्यापति सभागार में मौजूद लोग • जागरण

- भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी का तीन दिवसीय प्लेटिनम जुबली कांफ्रेंस शुरू
- डाटा के बगैर विज्ञान और विकास की कल्पना करना भी मुश्किल एकजुट होकर करें कार्य

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के विद्यापति सभागार में भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी का तीन दिवसीय प्लेटिनम जुबली कांफ्रेंस का शुभारंभ गुरुवार को हुआ। मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री के कृषि सलाहकार और भारत सरकार के पूर्व कृषि सचिव डा. मंगला राय ने कहा कि भारत को 2047 तक विकसित बनाने में सांख्यिकी की अहम भूमिका होगी। विज्ञान में डाटा और डाटा एनालिसिस की अहम भूमिका है। डाटा के बगैर विज्ञान और विकास की कल्पना करना भी मुश्किल है। कृषि के शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं को सांख्यिकी की तकनीकी जानकारी होनी चाहिए। विशेषज्ञों को चाहिए कि वे आम लोगों को भी सांख्यिकी की मोटी जानकारी उपलब्ध कराएं ताकि वे सच को पहचान सकें। डा. राय ने विज्ञानियों से एकजुट होकर कार्य करने की अपील की।

कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि सांख्यिकी के विशेषज्ञों को डाटा की सत्यता को लेकर सचेत रहना चाहिए। डाटा का काफी दुरूपयोग किया जा रहा है। इसको लेकर भी सचेत रहने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय डिजिटल एग्रीकल्चर को लेकर काफी तेजी से कार्य कर रहा है। आने वाले कुछ महीनों में दस से अधिक सहायक प्राध्यापक डिजिटल एग्रीकल्चर से संबद्ध क्षेत्रों में बहाल किए जा रहे हैं। दुनिया भर में डाटा के संकलन को लेकर नई तकनीक और एल्गोरिद्म का निर्माण किया जा रहा है। तीन दिन तक चलने वाले इस कार्यक्रम में सांख्यिकी के विभिन्न आयामों पर गहन मंथन किया जाएगा और जो निष्कर्ष निकाला जाएगा उसे पुस्तक के रूप में भी प्रकाशित किया जाएगा। कांफ्रेंस के निष्कर्ष को नीति निर्माताओं के साथ भी साझा किया जाएगा ताकि उन्हें नीति बनाने में सहयोग मिल सके। भारतीय कृषि सांख्यिकी के अध्यक्ष डा. पद्म सिंह ने कहा कि सांख्यिकी सोसायटी का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि इसकी स्थापना सर सीवी रमन के निर्देश पर की गई थी और इसके पहले सचिव भारत के राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद थे। वे सोलह वर्ष तक इस संस्था से जुड़े रहे। इस सोसायटी ने कृषि के विकास में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सचिव डा. राजेन्द्र प्रसाद ने 75वें कांफ्रेंस को ऐतिहासिक बताया। विश्वविद्यालय डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में देश में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इसमें सांख्यिकी की अहम भूमिका है। कालेज आफ बेसिक साइंस के डीन डा. अमरेश चंद्रा ने कांफ्रेंस के दौरान स्वागत भाषण दिया और कांफ्रेंस के मूल उद्देश्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी । उन्होंने कहा कि इस कांफ्रेंस में बीस से अधिक राज्यों के लगभग 250 से अधिक वरीय विज्ञानी भाग ले रहे हैं । मंच संचालन डा. ऋतंभरा और डा. अंजनी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डा. महेश कुमार ने किया।

कार्यक्रम में कुलसचिव डा. मृत्युंजय कुमार, निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, निदेशक प्रसार शिक्षा डा. मयंक राय, निदेशक बीज डा डी के राय, डा. शिवपूजन सिंह, डा. नीलांजय समेत विभिन्न शिक्षक विज्ञानी एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

Dainik Jagran 21-03-2025

# एमबीए के छात्रों को 10 लाख का पैकेज, नौ छात्र चयनित

एकजुट चयनित छात्र • जागरण

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय अधीनस्थ कृषि व्यवसाय प्रबंधन (एमबीए) के छात्रों को इस वर्ष 10 लाख तक के पैकेज पर चयन किया गया है। इसमें 9 छात्र चयनित हुए हैं। कृषि व्यवसाय प्रबंधन के सात छात्र एवं ग्रामीण मैनेजमेंट के दो छात्र शामिल हैं। रिलायंस बायो एनर्जी कंपनी ने रूरल मैनेजमेंट के अजय कुमार कुशवाहा, अंकेश कुमार के अलावा एग्री बिजनेस के एके हेमंत कुमार, दुर्गा प्रसाद यादव, बाल कृष्ण प्रधान, प्रियंका पड़ोदा, अंकित राज, दीपांशु, प्रणय नागर शामिल रहे। इसके अलावा पांच छात्रों का चयन एचडीएफसी ने 8.64 लाख के पैकेज पर किया है। इसमें रूरल मैनेजमेंट के सिद्धार्थ कुमार समेत विपुल कुमार, सपना कुमारी, धीरज कुमार एवं एग्री बिजनेस के चंदन शामिल है। कृषि व्यवसाय प्रबंधन के समन्वयक डा. राम दत्त ने बताया कि इस वर्ष फाइनल ईयर के 62 में से 28 छात्रों का चयन विभिन्न कंपनियों में हो चुका है।

Dainik Jagran 21-03-2025

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 23 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में पांच दिनों के अंदर अनेक स्थानों पर बादल बनने के साथ बूंदाबांदी हो सकती है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में तेज हवा के साथ कुछ स्थानों पर ओलावृष्टि का भी अनुमान है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 21 मार्च | 32.0 | 16.2 |
| 22 मार्च | 32.0 | 17.0 |
| दरभंगा | | |
| 21 मार्च | 32.0 | 17.0 |
| 22 मार्च | 33.0 | 17.0 |
| पटना | | |
| 21 मार्च | 34 | 18.0 |
| 22 मार्च | 34 | 18.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 21-03-25

हिन्दुस्तान 21/3/25 पेज 10

## विवि में कृषि में डेटा क्रांति:विकसित भारत के लिए अभिनव सांख्यिकीय व कम्प्यूटेशनल विधि विषय पर तीन दिवसीय कांफ्रेंस शुरू

# शोध के लिए डेटा संग्रह व उसका विश्लेषण अहम

गुरुवार को विश्वविद्यालय के विद्यापति सभागार में पुस्तक का विमोचन करते पूर्व डीजी,वीसी व अन्य।

विवि के विद्यापति सभागार में मौजूद देश के विभिन्न राज्यों के वैज्ञानिक।

पूसा,निज संवाददाता। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (आसीएआर) के पूर्व महानिदेशक सह मुख्यमंत्री के कृषि सलाहकार डॉ.मंगला राय ने कहा कि विकसित भारत की परिकल्पना को साकार करने में कृषि एक सशक्त कड़ी है। इसमें किसानो की मेहनत, वैज्ञानिको की शोध व सरकार की सकारात्मक पहल से यह साकार होगा। बेहतर शोध परिणाम के लिए डेटा संग्रह व उसका विश्लेषण पर विशेष नजर रखने की जरूरत है।

वे गुरूवार को डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के विद्यापति सभागार में देश भर से आये कृषि वैज्ञानिको को संबोधित कर रहे थे। मौका था भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी के तीन दिवसीय प्लैटिनम जुबली कांफ्रेंस के उद्घाटन सत्र का। विषय है कृषि में डेटा क्रांति:विकसित भारत के लिए अभिनव सांख्यिकीय और कंम्प्यूटेशनल विधियां। उन्होंने कहा कि कृषि के शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं को सांख्यिकी की तकनीकी जानकारी होनी चाहिए।

वीसी डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि सांख्यिकी के विशेषज्ञों को डाटा की सत्यता को लेकर सचेत रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि विवि डिजिटल एग्रीकल्चर को लेकर काफी तेजी से कार्य कर रहा है। आने वाले कुछ महीनों में 10 से अधिक सहायक प्राध्यापक डिजिटल एग्रीकल्चर से संबद्ध क्षेत्रों में बहाल किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि दुनिया भर में डेटा के संकलन को लेकर नये मेथाडालाजी और एल्गोरिद्म का निर्माण किया जा रहा है।

इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में गहन चिंतन-मंथन के बेहतर परिणाम को पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जायेगा। भारतीय कृषि सांख्यिकी के अध्यक्ष डॉ.पद्म सिंह ने कहा कि सांख्यिकी सोसायटी का काफी महत्व है। इसकी स्थापना सर सीवी रमन के निर्देश पर की गई थी और इसके पहले सचिव भारत के राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद थे। वे 16 वर्षो तक इस संस्था से जुड़े रहे। स्वागत डीन डॉ अमरेश चंद्रा, संचालन डॉ.ऋतंम्भरा व डॉ.कुमारी अंजनी एवं धन्यवाद डॉ.महेश कुमार ने किया। मौके पर डॉ.एसडी शर्मा, डॉराजेन्द्र प्रसाद, डॉ.एके पॉल, डॉ.अमृत पाल सिंह समेत विवि के डीन-डायरेक्टर व वैज्ञानिक मौजूद थे।

# डाटा की सत्यता और इसके दुरूपयोग को लेकर सचेत रहने की जरूरत : कुलपति

**समस्तीपुर (एसएनबी)।** डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा समस्तीपुर के विद्यापति सभागार में भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी का तीन दिवसीय प्लैटिनम जुबली कांफ्रेंस का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम आगत अतिथियों द्वारा संयुक्त रूप से देश रत्न डॉ राजेन्द्र प्रसाद को माल्यार्पण व दीप प्रज्जवलन के बाद कुलगीत के प्रसारण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तदुपरांत अतिथियों का मिथिला की परंपरा के अनुसार शॉल, पुष्प गुच्छ एवं स्मृति चिन्ह से स्वागत अभिनंदन किया गया।

कॉलेज आफ बेसिक साइंस के डीन डॉ अमरेश चंद्रा ने स्वागत संबोधन के दौरान कांफ्रेंस के मूल उद्देश्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उद्घाटन सत्र में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए मुख्य अतिथि बिहार के मुख्यमंत्री के कृषि सलाहकार और भारत सरकार के पूर्व कृषि सचिव और डीजी आइसीएआर डॉ मंगला राय ने कहा कि कृषि से जुड़े शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं को सांख्यिकी की तकनीकी जानकारी होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि विशेषज्ञों को चाहिए कि वे आम लोगों को भी सांख्यिकी की समान्य जानकारी उपलब्ध करायें ताकि वे आंकडों की

उद्घाटन करते अतिथि व अन्य।

हकीकत को पहचान सकें। डॉ राय ने कुलपति डॉ पांडेय के कार्यकाल की सराहना करते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में विश्वविद्यालय तेजी से प्रगति कर रहा है। महज दो वर्षो की अल्पावधि में विश्वविद्यालय ने बारह से अधिक पेटेंट हासिल किया है यह बडी उपलब्धि कही जा सकती है। यह अपने आप में सब कुछ कहने में सक्षम है। उन्होंने वैज्ञानिकों से एकजुट होकर कार्य करने की अपील की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने कहा कि डाटा का काफी दुरूपयोग किया जा रहा है। सांख्यिकी विशेषज्ञों को डाटा की सत्यता और इसके दुरूपयोग को लेकर सचेत रहने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय डिजिटल एग्रीकल्चर की दिशा में काफी तेजी से कार्य कर रहा है। आने वाले कुछ महीनों में दस से अधिक सहायक प्राध्यापक डिजिटल एग्रीकल्चर से संबद्ध क्षेत्रों में बहाल किये जा रहे है। उन्होंने कहा कि दुनिया भर में डाटा के संकलन को लेकर नयी मेथेडोलॉजी और एल्गोरिद्म का निर्माण किया जा रहा है। तीन दिन तक चलने वाले इस कार्यक्रम में सांख्यिकी के विभिन्न आयामों पर गहन मंथन किया जाएगा और जो निष्कर्ष निकाला जाएगा उसे पुस्तक के रूप में भी प्रकाशित किया जाएगा। वहीं कांफ्रेंस के निष्कर्ष को नीति निर्माताओं से साथ भी साझा किया जाएगा ताकि उन्हें नीति बनाने में सहयोग मिल सके। इस अवसर पर अपने संबोधन में भारतीय कृषि सांख्यिकी के प्रेसिडेंट डॉ पद्म सिंह ने कहा कि सांख्यिकी सोसायटी का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि इसकी स्थापना सर सीवी रमन के निर्देश पर की गई थी और इसके पहले सचिव भारत के प्रथम राष्ट्रपति देश रत्न डॉ राजेन्द्र प्रसाद थे। उन्होंने कहा कि इस सोसायटी ने कृषि के विकास में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कार्यक्रम को अखिल भारतीय सांख्यिकी सोसायटी के सचिव डॉ राजेन्द्र प्रसाद, भाषण दिया और । इस कांफ्रेंस में बीस से अधिक राज्यों के लगभग 250 से अधिक वरीय वैज्ञानिक भाग ले रहे है। मंच संचालन डॉ अंजनी ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन डॉ महेश कुमार ने किया। मौके पर कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार निदेशक शिक्षा डॉ उमाकांत बेहरा निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय, निदेशक बीज डॉ डी के राय, डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ नीलांजय डॉ कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

संबोधित करते अतिथि।

---

करते हुए मुख्यमंत्री बिहार के कृषि सलाहकार और भारत सरकार के पूर्व कृषि सचिव और डीजी आइसीएआर डॉ मंगला राय ने उक्त बातें कही। उन्होंने कहा कि आपने किसी की आय दोगुनी कर दी, किसी की चौगुनी कर दी। मगर उत्पादन तो दोगुनी चौगुनी नहीं हुई फिर आय कैसे दोगुनी चौगुनी हो गई। यह सोचने की बात है बिना उत्पादन बढे किसानो की आय कैसे बढी क्या वास्तव में बढी। यह सब वास्तव में आंकडों की बाजीगरी है। अनुसंधान में नवाचारों के प्रयोग के महत्व को चिन्हित करते हुए उन्हेंाने कहा कि हमारे यहां मिर्च का प्रयोग मसाले में होता है। मगर दूसरे देशों में इसके तीखेपन का कोई महत्व नहीं वे इसके विभिन्न अवस्थाओं के रंग का प्रयोग लिप्स्टिक आदि सौंदर्य प्रसाधन बनाने मे करते हैं। हमारे यहां 20 से 100 रूपये प्रतिकिलो बिकने वाले मिर्च से बना यह लिप्स्टिक 100 डॉलर से 1000 डॉलर तक में बिकता है। डॉ राय ने कहा कि अनुसंधान में नवाचार रिस्क है। बेशक रिस्क है। मगर सोचिए रिस्क कहां नहीं है। आप घर में बैठे रहें कुछ न करें तो क्या रिस्क नहीं है। मोर वर्क मोर रिस्क, लेस वर्क लेस रिस्क, तो ठीक है मगर नो वर्क नो रिस्क की गारंटी भी तो नहीं है। अपने संबोधन मे ंडॉ राय ने कहा कि मै विश्वविद्यालय से आग्रह करूंगा कि आपके यहां से पास आउट छात्र में वज्र की तरह अचूक प्रहार करने की क्षमता हो तो साथ ही किसानों की पीडा, उनका दुख देख कर द्रवित होने वाला फूलों की तरह नाजुक व संवेदनशील हृदय वाले हो। यदि ऐसा हो सका तो वहीं से अनुसंधान में नवाचार का मार्ग प्रशस्त हो जायेगा।

Raashtriya Sahara 21-03-2025

# आम के मंजर में मटर के दाने के बराबर फली आने पर रसायन का छिड़काव न करें: वैज्ञानिक

**समस्तीपुर.** डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय ने किसानों के लिए समसामयिक सुझाव जारी किया है. वैज्ञानिक ने कहा है कि इन दिनों आम के बगीचों में मंजर पूरी तरह आ चुका है. किसान आम में मंजर वाली अवस्था से फल के मटर के दाने के बराबर होने की अवस्था के मध्य किसी प्रकार का कोई भी कृषि रसायन का प्रयोग नहीं करे. विकृत दिखने वाले मंजर को तोड़कर बाग से बाहर ले जाकर जला दें या मिट्टी में गाड़ दे. वहीं लीची के पेड़ में फल बेधक कीट के शिशु जो उजले रंग के होते हैं, यह फलों के डंठल के पास से फली में प्रवेश कर गुदे को खाते हैं. जिससे प्रभावित फल खाने लायक नहीं रहता. इस कीट से बचाव के लिए लीची के पत्तियों एवं टहनियों पर प्रोफेनोफॉस 50 ईसी का 10 मिली या कार्बारिल 50 प्रतिशत घुलनशील पाउडर का 20 ग्राम दवा को 10 लीटर पानी में घोलकर अप्रैल माह में 15 दिनों के अंतराल पर प्रति पेड़ की दर से दो छिड़काव आसमान साफ रहने पर ही करें. लत्तर वाली सब्जियों जैसे नेनुआ, करैला, लौकी तथा खीरा में लाल मूंग कीट से बचाव के लिए डाइक्लोरवीस 76 ईसी प्रति एक मिली प्रति लीटर पानी की दर से आसमान साफ रहने पर ही छिड़काव करे. किसान हल्दी एवं अदरक की बोआई के लिए खेत की तैयारी करें. खेत की जुताई में प्रति हेक्टेयर 25 से 30 टन गोबर की सड़ी खाद डाले. 15 मई से किसान हल्दी एवं अदरक की बोआई कर सकते हैं. किसान ओल की रोपाई करें. रोपाई के लिए गजेंद्र किस्स अनुशंसित है. प्रत्येक 0.5 किलोग्राम के कंद की रोपनी के लिए दूरी 75 गुना 75 सेमी रखें. 0.5 किलोग्राम से कम वजन की कंद की रोपाई नहीं करे. बीज दर 80 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से रखें. बोआई से पूर्व प्रति गड्ढा तीन किलोग्राम सड़ी हुई गोबर, 20 ग्राम अमोनियम सल्फेट या 10 ग्राम मुरिया, 37.5 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट एवं 16 ग्राम पोटेशियम सल्फेट का व्यवहार करें. ओल की कटे कंद को ट्राइकोडर्मा विरीडी दवा के 60 ग्राम प्रति लीटर गोबर के घोल में मिलाकर 20-25 मिनट तक डूबोकर रखने के बाद कंद को निकालकर छाया में 10-15 मिनट तक सुखने दें. उसके बाद उपचारित कंद को लगाएं ताकि मिट्टी जनित बीमारी लगने की संभावना को रोका जा सके तथा अच्छी उपज प्राप्त हो सके. किसान गरमा मूंग व उड़द की बुआई करें. बोआई के पूर्व 20 किलोग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम स्कूर, 20 किलोग्राम पोटाश व 20 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें. मूंग के लिए पूसा विशाल सम्राट, एसएमएल-668 एचयूएम-16 एवं सीमा व उड़द के लिए पंत उड़द-19. पंत उड़द-31. नवीन एवं उतरा किस्में बोआई के लिए अनुशंसित है. बोआई के दो दिन पूर्व बीज को कार्बेन्डाजीम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से शोधित करें. बोआई के ठीक पहले शोधित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बोआई करें. बीज दर छोटे दानों के प्रभेदों के लिए 20-25 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर व बड़े दानों के प्रभेदों के लिए 30-35 किली ग्राम प्रति हेक्टेयर रखें. बोआई की दूरी 30 गुना 10 सेमी रखें.

प्रभात खबर
Saturday, March 22, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67ddacb4aa3dba5b5d1c84d9

# नवीन समाधान विकसित करने के लिए साथ काम करने की जरूरत : कुलपति

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी के तीन दिवसीय प्लैटिनम जुबली कॉन्फ्रेंस के दूसरे दिन विशेषज्ञों ने कृषि में नवाचारी सांख्यिकीय विधियों पर विमर्श किया. भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी के प्लैटिनम जुबली सम्मेलन में विशेषज्ञों के बीच कृषि में नवाचारी सांख्यिकीय विधियों और अनुप्रयोग व इससे संबद्ध विषय पर देश के विभिन्न राज्यों से आये वरीय वैज्ञानिकों ने एक सौ से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किये. इस सम्मेलन में 13 तकनीकी सत्र आयोजित किये जा रहे हैं. सोसायटी के प्रेसिडेंट व पूर्व निदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद डा पद्म सिंह और कांफ्रेंस के सचिव एवं निदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद डॉ राजेन्द्र प्रसाद ने कीन ोट स्पीच भी दिया. तकनीकी सत्र और शोध पत्र प्रस्तुतियों में डिजिटल कृषि, सटीक खेती और डेटा-संचालित निर्णय लेने के विभिन्न आयामों पर भी चर्चा की गई. कृषि अनुसंधान और नीति निर्माण में सांख्यिकीय विश्लेषण के महत्व को रेखांकित किया. कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने जटिल कृषि चुनौतियों का समाधान करने के लिए अंतर विषयक सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया. कहा कि सांख्यिकीविदों, शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं को नवीन समाधान विकसित करने के लिए साथ में काम करना चाहिए. सम्मेलन कल एक पैनल चर्चा के साथ समाप्त होगा.

प्रभात खबर
Saturday, March 22, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67ddacb4aa3dba5b5d1c84e8

# कैंपस अलर्ट

## बिहार में औषधीय मशरूम की खेती की अपार संभावनाएं

लैब में मौजूद स्वनिर्मित मशरूम बैग के साथ प्रतिभागी.

**पूसा.** डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित एडवांस सेंटर ऑफ मशरूम रिसर्च के सभागार में मशरूम उत्पादन एवं प्रसंस्करण विषय 15 दिवसीय प्रशिक्षण में सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक सत्र का संचालन जारी है. इसी कड़ी में शुक्रवार को प्रतिभागियों ने लैब में बटन मशरूम कम्पोस्ट निर्माण, कल्चर, केसिंग आदि उत्पादन से संबंधित ज्ञानवर्धन किया गया. वैज्ञानिक डा आरपीके राय ने बताया कि बिहार में ओएस्टर, बटन, पेडीस्ट्रा, मिल्की आदि की व्यवसायिक खेती चल रही है. बीते तीन वर्षों में सिटाके, हैरिसियम, किंग आयस्टर, सिजोफाइलिया एवं आर्कुलेरिया औषधीय मशरूम उत्पादन तकनीक विकसित किया गया है. बिहार के किसानों के बीच अब किंग ऑयस्टर एवं सिटाके मशरूम को भी पहुंचाया गया है. आने वाले समय में इसकी खेती वृहत पैमाने पर की जानी है. डा दयाराम ने बताया कि औषधीय मशरूम की व्यवसायिक खेती की बिहार में अपार संभावनाएं हैं. मौके पर रीता देवी, सुनीता महतो, असला मुर्मू, बेलारानी महतो, नलिता शरण, सरस्वती बासुके, सुखंती हांसदा, माधवी पात्रों, पुनीता कुमारी, मंजू देवी, डिंपल देवी, मुकेश, सुभाष, निशा, मुन्नी आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Saturday, March 22, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67ddacb4aa3dba5b5d1c84e8

# 24 से 48 घंटे तक हल्की वर्षा के आसार

**मौसम की खबर**

**प्रतिनिधि, समस्तीपुर**

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केंद्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 21-25 मार्च 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों के अधिकांश स्थानों पर गरज वाले बादल छाये रह सकते हैं. आज 21 मार्च शाम से अगले 24-48 घंटों में अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा या बूंदाबांदी हो सकती है. उसके बाद मौसम साफ तथा मौसम शुष्क रहने की संभावना है.

अधिकतम तापमान 34 से 37 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है. न्यूनतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है. पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 4 से 9 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है. 23 मार्च को तेज हवा के साथ पुरवा हवा चलने की संभावना है. सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 78 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 35 प्रतिशत रहने की संभावना है. आज का अधिकतम तापमान 29.0 डिग्री सेल्सियस रहा,जो सामान्य से 3.8 डिग्री कम रहा. वहीं न्यूनतम तापमान 18.8 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 1.9 डिग्री अधिक रहा.

प्रभात खबर
Saturday, March 22, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67ddacb4aa3dba5b5d1c84ee

भास्कर 22/3/25 पेज 21

मौसम • अधिकतम तापमान 34 से 37 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान, धीरे-धीरे बढ़ेगी गर्मी

# उत्तर बिहार के जिलों में गरज वाले बादल छाये रह सकते हैं, बूंदाबांदी की संभावना

## सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 78 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 35 प्रतिशत रहेगी

सिटीरिपोर्टर|समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों के अधिकांश स्थानों पर गरज वाले बादल छाये रह सकते हैं। 21 मार्च शाम से अगले 24-48 घंटों में अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा या बुंदा बूंदी हो सकती है। उसके बाद मौसम साफ तथा मौसम शुष्क रहने की सम्भावना है। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा मौसम विभाग के अनुसार

इस बीच अधिकतम तापमान 34 से 37 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है। वहीं पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 4 से 9 कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की सम्भावना है। 23 मार्च को तेज हवा के साथ पुरवा हवा चलने की सम्भावना है। दूसरी ओर सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 78 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 35 प्रतिशत रहने की संभावना है। किसानों को सलाह दी जाती है कि अगले 24-48 घंटों में हल्की वर्षा की संभावना को देखते हुए कृषि कार्यों में सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। गेहूं अरहर तथा रबी मक्का की कटनी तथा सुखाने का काम सावधानी पूर्वक करें। लीची के पेड़ में फल बेधक कीट के शिशु जो उजले रंग के होते हैं। यह फलों के डंठल के पास से फलों में प्रवेश कर गुद्दे को खाते हैं जिससे प्रभावित फल खाने लायक नहीं रहता। इस कीट से बचाव के लिए लीची के पत्तियों एवं टहनियों पर प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी का 10 मि.ली या कार्बारिल 50 प्रतिशत घुलनशील पॉवडर का 20 ग्राम दवा को 10 लीटर पानी में घोलकर अप्रैल माह में 15 दिनों के अन्तराल पर प्रति पेड़ की दर से दो छिड़काव आसमान साफ रहने पर ही करें।

लीची के पेड़ों पर लगे मंजर।

### खेत की जुताई में प्रति हेक्टेयर 25 से 30 टन गोबर की सड़ी खाद डालें, मिट्टी जनित बीमारियों से बचाव जरूरी

लत्तर वाली सब्जियों जैसे नेनुआ, करैला, लौकी (कद्दू), और खीरा में लाल मूंग कीट से बचाव हेतु डाइक्लोस्वांस 76 इसी/1 मि.ली. प्रति ली. पानी की दर से आसमान साफ रहने पर ही छिड़काव करें। हल्दी एवं अदरक की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में प्रति हेक्टेयर 25 से 30 टन गोबर की सड़ी खाद डाले। 15 मई से किसान भाई हल्दी एवं अदरक की बुआई कर सकते हैं। ओल की रोपाई करें। रोपाई के लिए गजेन्द्र किस्म अनुशंसित है। प्रत्येक 0.5 किलोग्राम के कन्द की रोपनी के लिए दूरी 75x75 से. मी. रखें। 0.5 किलोग्राम से कम वजन की कंद की रोपाई नहीं करे। बीज दर 80 क्विटल प्रति हेक्टेयर की दर से रखें। बुआई से पूर्व प्रति गड्ढा 3 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर, 20 ग्राम अमोनियम सल्फेट या 10 ग्राम युरिया, 37.5 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट एवं 16 ग्राम पोटेशियम सल्फेट का व्यवहार करे। ओल की कटे कन्द को ट्राइकोर्डमा भिरीडी दवा के 5.0 ग्राम प्रति लीटर गोबर के घोल में मिलाकर 20-25 मिनट तक डुबोकर रखने के बाद कन्द को निकालकर छाया में 10-15 मिनट तक सुखने दें उसके बाद उपचारित कन्द को लगायें ताकि मिट्टी जनित बीमारी लगने की संभावना को रोका जा सके तथा अच्छी उपज प्राप्त हो सके।

*अगले 24 48 घंटों में अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है :*
*– डॉ. ए. सत्तार, नोडल पदाधिकारी, मौसम विभाग, पूसा*

भास्कर 22/3/25 पेज 20

कार्यक्रम • विभिन्न राज्यों से पहुंचे वैज्ञानिकों ने एक सौ से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किया

# कांफ्रेंस के दूसरे दिन कृषि में नवाचारी सांख्यिकीय विधियों पर विचार-विमर्श

भास्कर न्यूज़ | पूसा

## सांख्यिकी के विभिन्न अनुप्रयोग के विषय में जानकारी दी गई

शोध पत्र प्रस्तुत करते वैज्ञानिक और शोध के बारे में जानकारी लेते पूसा विवि के कुलपति व अन्य।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पुसा में चल रहे भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी (आईएसएएस) के प्लैटिनम जुबली सम्मेलन के दूसरे दिन विशेषज्ञों के बीच कृषि में नवाचारी सांख्यिकीय विधियों और अनुप्रयोग तथा इससे संबद्ध विषय पर देश के विभिन्न राज्यों से पहुंचे वरीय वैज्ञानिकों ने एक सौ से अधिक शोध पत्र को प्रस्तुत किया। शुक्रवार को अलग अलग विषयों पर विवि के विद्यापति सभागार, पंचतंत्र सभागार आदि सभागारों में वैज्ञानिकों द्वारा तकनीकी सत्र आयोजित किये गए। तीन दिनों तक चलने वाले इस सम्मेलन में कुल तेरह तकनीकी सत्र आयोजित किए जाने हैं। कांफ्रेंस के दूसरे दिन सोसायटी के प्रेसिडेंट तथा पूर्व निदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद डॉ. पद्म सिंह और कांफ्रेंस के सचिव एवं निदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कीनोट स्पीच दिया। इसके अलावे दोनो वैज्ञानिकों ने सांख्यिकी के क्षेत्र में देश और दुनिया भर में हो रहे बदलाव एवं देश के विकास में सांख्यिकी के विभिन्न अनुप्रयोग के विषय में भी विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने अन्य वैज्ञानिकों के साथ तकनीकी सत्र और शोध पत्र प्रस्तुतियों में डिजिटल कृषि, सटीक खेती और डेटा-संचालित निर्णय लेने के विभिन्न आयामों पर भी चर्चा की। कांफ्रेस के दूसरे दिन 20 से अधिक राज्यों के लगभग 250 प्रतिनिधियों ने अपने शोध, अनुभवों और अंतर्दृष्टियों को एक दूसरे वैज्ञानिकों के साथ साझा किया तथा कृषि अनुसंधान और नीति निर्माण में सांख्यिकीय विश्लेषण के महत्व को रेखांकित किया। विश्वविद्यालय के के कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने जटिल कृषि चुनौतियों के समाधान के लिए अंतरविषयक सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि सांख्यिकीविदों, शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं को नवीन समाधान विकसित करने के लिए एक साथ मिलकर काम करना चाहिए। यह सम्मेलन शनिवार को एक पैनल चर्चा के साथ समाप्त होगा। इसमें कृषि सांख्यिकी के भविष्य और नीति निर्णयों को आकार देने में सांख्यिकीविदों की भूमिका पर गहन चर्चा की जाएगी।

मार-काट 22/3/25 पेज 20

# पपीते की खेती पर सेमिनार वैज्ञानिक तरीके बताए गए

सेमिनार में उपस्थित किसान।

मोरवा|मोरवा दक्षिणी पंचायत में राष्ट्रीय बागवानी मिशन योजना के तहत पपीता की खेती पर सेमिनार हुआ। इसमें सहायक निदेशक उद्यान समस्तीपुर प्रशांत कुमार, कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के उद्यान वैज्ञानिक धीरू कुमार तिवारी, सहायक तकनीकी प्रबंधक और प्रखंड उद्यान पदाधिकारी रविंद्र कुमार ने वैज्ञानिक तरीके से पपीता की खेती करने की जानकारी दी। प्रखंड में पपीता की खेती को बढ़ावा देने पर चर्चा हुई। क्लस्टर बागवानी योजना के तहत पपीता की खेती कर रहे किसानों समेत अन्य किसानों ने भाग लिया। अधिकारियों ने खेतों में लगे पपीता के पौधों का निरीक्षण किया। किसानों को पपीता की खेती से होने वाले फायदे समझाए गए। इस मौके पर किसान सलाहकार श्याम कुमार, सच्चिदानंद सहनी, रमेश कुमार राम, प्रगतिशील किसान निगम कुमार, संजीत कुमार राय, दीपक कुमार, सूर्यकांत कुमार समेत किसान मौजूद थे। सेमिनार का आयोजन जिला उद्यान पदाधिकारी और प्रखंड उद्यान पदाधिकारी ने संयुक्त रूप से किया।

# उत्तर बिहार में अगले दो दिनों में हो सकती है हल्की वर्षा

संस, जागरण • पूसा : उत्तर बिहार के जिलों में गरज वाले बादल के साथ हल्की वर्षा होने की संभावना है। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि उत्तर बिहार के जिलों के अधिकांश स्थानों पर गरज वाले बादल छाये रहेंगे। शुक्रवार शाम से अगले 48 घंटों में अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा या बूंदाबांदी हो सकती है। उसके बाद मौसम साफ तथा शुष्क रहेगा। अधिकतम तापमान 34 से 37 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। न्यूनतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है। शुक्रवार को अधिकतम तापमान 29.0 एवं न्यूनतम तापमान 18.0 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में औसतन 4 से 9 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा

**डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा- गरज वाले बादल छाये रहेंगे**

चलने की संभावना है। 23 मार्च को तेज हवा के साथ पुरवा हवा चलने की भी संभावना है। अगले 24-48 घंटों में वर्षा की संभावना को देखते हुए कृषि कार्यों में सतर्कता बरतने की सलाह भी दी गई है।

Dainik Jagran 22-03-025

# विशेषज्ञों ने कृषि में नवाचारी सांख्यिकी विधियों पर की चर्चा

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी (आईएसएएस) के प्लैटिनम जुबली सम्मेलन के दूसरे दिन विशेषज्ञों के बीच कृषि में नवाचारी सांख्यिकीय विधियों और अनुप्रयोग तथा इससे संबद्ध विषय पर सौ से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किये गए। तेरह तकनीकी सत्र आयोजित किए जा रहे हैं। अलग अलग विषय पर तकनीकी सत्र विद्यापति सभागार के अतिरिक्त पंचतंत्र सभागार में भी आयोजित किया गया । दूसरे दिन सोसायटी के प्रेसिडेंट तथा पूर्व निदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद डा

**भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी (आइएसएएस) के सम्मेलन का दूसरा दिन, सौ से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किए गए**

पद्मा सिंह और कांफ्रेंस के सचिव एवं निदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद डा राजेन्द्र प्रसाद ने भी व्याख्यान दिया। सांख्यिकी के क्षेत्र में देश और दुनिया भर में हो रहे बदलाव एवं देश के विकास में सांख्यिकी के विभिन्न अनुप्रयोग के विषय में विस्तार से जानकारी दी।

तकनीकी सत्र और शोध पत्र प्रस्तुतियों में डिजिटल कृषि, सटीक खेती और डेटा-संचालित

संबोधित करते विशेषज्ञ • जागरण

निर्णय लेने के विभिन्न आयामों पर भी चर्चा की गई। 20 से अधिक राज्यों के लगभग 250 प्रतिनिधियों ने अपने शोध ,अनुभवों और अंतर्दृष्टियों को साझा किया, तथा कृषि अनुसंधान और नीति निर्माण में सांख्यिकीय विश्लेषण के महत्व को रेखांकित किया। विश्वविद्यालय के के कुलपति डा. पीएस पांडेय ने जटिल कृषि चुनौतियों का समाधान करने के लिए अंतर विषयक सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया।

कहा कि सांख्यिकीविदों, शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं को नवीन समाधान विकसित करने के लिए साथ में काम करना चाहिए। सम्मेलन शनिवार को एक पैनल चर्चा के साथ समाप्त होगा, जिसमें कृषि सांख्यिकी के भविष्य और नीति निर्णयों को आकार देने में सांख्यिकीविदों की भूमिका पर गहन चर्चा की जाएगी।

Dainik Jagran 22-03-025

# पपीता की खेती विषय पर सेमिनार

मोरवा, निज संवाददाता। प्रखंड क्षेत्र के मोरवा दक्षिणी पंचायत में शुक्रवार को जिला उद्यान पदाधिकारी एवं प्रखंड उद्यान पदाधिकारी के द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीय बागवानी मिशन योजना अंतर्गत पपीता की खेती पर सेमिनार आयोजित किया गया। क्लस्टर में बागवानी योजना अंतर्गत पपीता की खेती कर रहे किसान एवं अन्य किसानों ने भाग लिया।

सेमिनार में सहायक निदेशक उद्यान प्रशांत कुमार, कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के उद्यान वैज्ञानिक धीरू कुमार तिवारी, सहायक तकनीकी प्रबंधक व प्रखंड उद्यान पदाधिकारी रविंद्र कुमार के द्वारा पपीता की खेती को बढ़ावा देने सहित वैज्ञानिक तरीके से खेती करने की जानकारी दी गई।

मोरवा में शुक्रवार को पपीता की खेती के बारे में जानकारी देते पदाधिकारी।

प्रखंड क्षेत्र में पपीता की खेती को बढ़ावा देने पर विशेष रूप से चर्चा किया गया। साथ ही पदाधिकारी ने पपीता के लगे खेती का निरीक्षण भी किया। निरीक्षण के दौरान पपीता की खेती से होने वाले फायदे को किसानों को समझाया गया। मौके पर किसान सलाहकार श्याम कुमार, सच्चिदानंद सहनी, रमेश कुमार राम, प्रगतिशील किसान निगम कुमार, संजीत कुमार राय, दीपक कुमार, सूर्यकांत कुमार सहित सैकड़ो किसान मौजूद थे।

Hindustan 22-03-2025

# सांख्यिकीविदों, शोधकर्ताओं व नीति निर्माताओं को साथ कार्य करने की जरूरत: कुलपति

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी (आईएसएएस) के प्लैटिनम जुबली सम्मेलन शुक्रवार को दूसरे दिन भी जारी रहा। इस दौरान कृषि में नवाचारी सांख्यिकीय विधियों, अनुप्रयोग एवं इससे संबद्ध विषयों पर देश के विभिन्न राज्यों से आए वरीय विशेषज्ञों ने एक सौ से अधिक शोध-पत्र प्रस्तुत किये। इस दौरान वैज्ञानिक विशेषज्ञों की टीम विवि के विद्यापति सभागार एवं पंचतंत्र सभागार में अलग अलग विषयों पर मंथन में जुटे हैं। इस अवसर पर विवि के कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने जटिल कृषि चुनौतियों के समाधान के लिए अंतर विषयक सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि नवीन समाधान विकसित करने के लिए सांख्यिकीविदों, शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं को साथ काम करने की जरूरत है।

शुक्रवार को विवि के पंचतंत्र सभागार में शोध पत्र पर चर्चा करते कुलपति व अन्य।

सोसायटी के अध्यक्ष व पूर्व निदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद डॉ.पद्म सिंह और कांफ्रेंस के सचिव ने विषय वस्तु से अवगत कराते हुए मंथन की शुरूआत कराई। वक्ताओं ने सांख्यिकी के क्षेत्र में देश-दुनिया में हो रहे बदलाव एवं देश के विकास में सांख्यिकी के अनुप्रयोग के विषय में विस्तार से जानकारी दी। तकनीकी सत्र और शोध पत्र प्रस्तुतियों में डिजिटल कृषि, सटीक खेती और डेटा-संचालित निर्णय लेने के विभिन्न आयामों पर भी चर्चा की गई। कांफ्रेस के दूसरे दिन 20 से अधिक राज्यों के प्रतिनिधियों ने अपने शोध, अनुभवों और अंतर्दृष्टियों को साझा करते हुए कृषि अनुसंधान और नीति निर्माण में सांख्यिकीय विश्लेषण के महत्व को रेखांकित किया।

Hindustan 22-03-2025

# कृषि में नवाचारी सांख्यिकीय विधियों पर हुआ विमर्श

**पूसा (एसएनबी)।** सांख्यिकीविदों, शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं को कृषि क्षेत्र में उत्पन्न एवं संभावित जटिलताओं व चुनौतियों का नवीन समाधान विकसित करने पर काम करना चाहिए। इन शब्दो के साथ डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के विद्यापति सभागार में आयोजित तीन दिवसीय भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी ट्ठआईएसएएस) के प्लैटिनम जुबली सम्मेलन के दूसरे दिन विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने जटिल कृषि चुनौतियों का समाधान करने के लिए अंतर विषयक सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया। इस क्रम में उन्होने डिजीटल क्रांति के इस दौर में डाटा की विश्वसनीयता और सुरक्षा के प्रति अगाह करते हुए सतर्क व सजग रहने की आवश्यकता जताई। बताते चलें कि संगोष्ठी के दूसरे दिन कृषि में नवाचारी सांख्यिकीय विधियों और अनुप्रयोग एवं इससे संबद्ध विषयों पर देश के विभिन्न राज्यों से पहुंचे विशेषज्ञों व वरीय वैज्ञानिकों ने एक सौ से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस दौरान विद्यापति सभागार एवं पंचतंत्र सभागार में अलग-अलग विषय पर आधारित तेरह तकनीकी सत्र आयोजित किए गये थे। इस अवसर पर सोसायटी के प्रेसिडेंट तथा पूर्व निदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद डॉ पद्म सिंह एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद निदेशक एवं कांफ्रेंस के सचिव राजेन्द्र प्रसाद ने कीनोट स्पीच देते हुए सांख्यिकी के क्षेत्र में देश एवं विश्व भर में हो रहे बदलाव एवं देश के विकास में सांख्यिकी के विभिन्न अनुप्रयोग के विषय में विस्तार से चर्चा किया। वहीं तकनीकी सत्र और शोध पत्र प्रस्तुतियों में डिजिटल कृषि, सटीक खेती और डेटा-संचालित निर्णय लेने के विभिन्न आयामों पर भी विस्तृत चर्चा की गई। इस क्रम में 20 से अधिक राज्यों के लगभग 250 प्रतिनिधियों ने अपने शोध, अनुभवों और अंतदृष्टियों को साझा किया, तथा कृषि अनुसंधान और नीति निर्माण में सांख्यिकीय विश्लेषण के महत्व को रेखांकित किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आज सम्मेलन के तीसरे दिन समापन के पुर्व कृषि सांख्यिकी के भविष्य एवं नीति निर्णयों को आकार देने में सांख्यिकीविदों की भूमिका पर गहन चर्चा किया जाएगा।

चर्चा के दौरान वीसी व अन्य।

Rashtriya Sahara 22-03-2025

Times of India 21/03/25
P. 2

# Data analysis key to increasing farm yield, says expert

**B K Mishra** | TNN

**Patna:** Altogether, 250 delegates from across the country participated in the three-day platinum jubilee conference of the Indian Society of Agricultural Statistics (ISAS) organised by Rajendra Prasad Central Agricultural University (RPCAU) at Pusa (Samastipur) on Thursday. The conference aimed to apply innovative techniques of agricultural statistics to develop India into an agriculturally advanced nation.

Addressing the conference as the chief guest, Mangala Rai, former director general of the Indian Council of Agricultural Research (ICAR) and presently agricultural advisor to CM Nitish Kumar, emphasized the crucial role of agricultural statistics in developing India by 2047.

"It is important to gather data related to agriculture, water scarcity, soil biota and present them to the policymakers so that they may decide the future course of action," he said, adding that the scientists will deliberate on various aspects of data use and data misuse during the three-day conference.

RPCAU's vice-chancellor P S Pandey stressed the need for cautious and judicious use of statistical data in agriculture so that there may not be any shortcomings in qualitative and quantitative yield of food grains and other crops in the country. Earlier, the president of ISAS Padma Singh highlighted the significance of the society, which was established under guidance of C V Raman.

# 75वें प्लैटिनम जुबली वार्षिक सम्मेलन का समापन

# डिजिटल एग्रीकल्चर प्रेरणादायक : डा मिश्रा

**प्रतिनिधि, पूसा**

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी के 75वें प्लैटिनम जुबली वार्षिक सम्मेलन का समापन समारोह आयोजित किया गया. मुख्य अतिथि के रूप में मराठवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र के कुलपति डॉ. इंद्रमणि मिश्रा, आइएसएएस के अध्यक्ष डॉ. पद्म सिंह और देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पूर्व कुलपति डॉ. एसडी शर्मा ने शिरकत की. तीन दिनों तक हुए सम्मेलन में कृषि अनुसंधान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और डिजिटल प्रौद्योगिकियों के विभिन्न आयामों की महत्वपूर्ण भूमिका पर चर्चा की गई.

बीस राज्यों से आये 250 से अधिक वैज्ञानिकों ने उन्नत विधियों के लिए अनुसंधान सटीकता में सुधार, कृषि प्रणालियों के लिए उत्पादक विश्लेषण और विविध क्षेत्रों में एआई के एकीकरण जैसे विषयों पर गहन चर्चा की. छह विषय और 11 उप-विषय निर्धारित किये गये थे. वीसी डॉ. पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कृषि शिक्षा

दीप जलाकर शुरुआत करते अतिथि .

क्षमता विकास के लिए नीतियों के महत्व पर प्रकाश डाला. अनुसंधान सटीकता में सुधार के लिए नवीन प्रयोगात्मक डिजाइनों की आवश्यकता पर भी जोर दिया. शिक्षा में सुधार के लिए एआई- आधारित टूल्स की क्षमता पर चर्चा की.

डॉ. इंद्रमणि मिश्रा ने एआई और डिजिटल प्रौद्योगिकियों को अपनाने से कृषि प्रथाओं में स्थिरता लायी जा सकती है. निर्णय लेने की प्रक्रिया में सुधार किया जा सकता है. उन्होंने जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के मद्देनजर बेहतर अनुकूलन रणनीतियों को बढ़ावा देने में सांख्यिकी के महत्व पर भी विस्तार से चर्चा की.

भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी के अध्यक्ष डॉ पद्म सिंह ने कहा कि यह सम्मेलन हर मामले में ऐतिहासिक रहा है. उन्होंने कहा कि यह पहली बार है कि सम्मेलन में बीस राज्यों के 250 से अधिक वैज्ञानिकों ने शिरकत की है.

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ एसडी शर्मा ने कहा कि कुलपति डॉ पांडेय स्वयं भी एक विख्यात सांख्यिकी विशेषज्ञ हैं. कार्यक्रम में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर बेस्ट पेपर के लिए डा राकेश मणि शर्मा को पुरस्कृत किया गया. निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, निदेशक प्रसार डॉ मयंक राय, डीन इंजीनियरिंग डॉ राम सुरेश वर्मा, डॉ महेश कुमार, डॉ शिव पूजन सिंह, डॉ कुमार राज्यवर्धन थे.

प्रभात खबर
Sunday, March 23, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67defef9049d50e4843e081c

भास्कर 23/3/25 पेज 15

कार्यक्रम • भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी के वार्षिक सम्मेलन का समापन

# एआई और डिजिटल प्रौद्योगिकियों से कृषि प्रथाओं में ला सकते हैं स्थिरता

## एआई के एकीकरण जैसे तमाम विषयों पर गहन चर्चा

भास्कर न्यूज|पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में चल रहा भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी का तीन दिवसीय 75वां प्लैटिनम जुबली वार्षिक सम्मेलन शनिवार को संपन्न हो गया। विवि के विद्यापति सभागार में एक समापन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में मुख्य व विशिष्ट अतिथि के रूप में मराठवाड़ा कृषि विवि महाराष्ट्र के कुलपति डॉ. इंद्रमणि मिश्रा, आईएसएएस के अध्यक्ष डॉ. पद्म सिंह और देव संस्कृति विवि हरिद्वार के पूर्व कुलपति डॉ. एसडी शर्मा ने शिरकत की। तीन दिनों तक चले इस सम्मेलन में देश के विभिन्न राज्यों से जुड़े कृषि संस्थानों से पहुंचे कृषि वैज्ञानिकों ने कृषि अनुसंधान में एआई और डिजिटल प्रौद्योगिकियों के विभिन्न आयामों एवं कृषि में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका पर विस्तार से चर्चा की। सम्मेलन में बीस राज्यों से आये 250 से अधिक वैज्ञानिकों ने उन्नत तकनीक व विधियों के लिए सही व सटीक अनुसंधान एवं इसमें सुधार की जरूरत, कृषि प्रणालियों के लिए उत्पादक विश्लेषण और विविध क्षेत्रों में एआई के एकीकरण जैसे तमाम विषयों पर गहन चर्चा की। तीनों दिन के कार्यक्रम के दौरान कुल तेरह तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। सम्मेलन में छह विषय और ग्यारह उप-विषय निर्धारित किये गये थे। मुख्य अतिथि मराठवाड़ा कृषि विवि महाराष्ट्र के कुलपति डॉ. इंद्रमणि मिश्रा ने अपने संबोधन के माध्यम से वैज्ञानिकों से कहा कि एआई और डिजिटल प्रौद्योगिकियों को अपनाने से कृषि प्रथाओं में स्थिरता लाई जा सकती है तथा निर्णय लेने की प्रक्रिया में भी सुधार किया जा सकता है। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के मद्देनज़र अनुकूलन रणनीतियों को बढ़ावा देने में सांख्यिकी के महत्व पर भी विस्तार से चर्चा की।

कार्यक्रम को संबोधित करते चीफ गेस्ट कुलपति।

सम्मेलन में जुटे वैज्ञानिक व अन्य।

### सम्मेलन में बीस राज्यों के 250 से अधिक वैज्ञानिकों ने शिरकत की

भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी के अध्यक्ष डॉ. पद्म सिंह ने कहा कि यह सम्मेलन हर मामले में ऐतिहासिक रहा है। उन्होंने कहा कि यह पहली बार है कि सम्मेलन में बीस राज्यों के 250 से अधिक वैज्ञानिकों ने शिरकत की है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार के पूर्व कुलपति डॉ. एस डी शर्मा ने कहा कि पूसा के कुलपति डॉ. पांडेय स्वयं भी एक विख्यात सांख्यिकी विशेषज्ञ हैं। इस सम्मेलन में मिथिला की आवभगत की उन्होंने सराहना की। पूसा विवि के कुलपति डॉ. पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडे ने कृषि शिक्षा एवं इसकी क्षमता विकास के लिए नीतियों के महत्व पर प्रकाश डाला जिसमें समानता, सुगमता, प्रचार, प्रासंगिकता, गुणवत्ता और क्षमता निर्माण जैसे विषय शामिल है। डॉ. पांडे ने अनुसंधान सटीकता में सुधार के लिए नवीन प्रयोगात्मक डिजाइनों की आवश्यकता जैसे कच्चे कॉलम डिजाइन, सुडोकू-आधारित डिजाइन, क्षेत्र परीक्षणों में नैनो-स्केल इनपुट आदि पर अपने व्याख्यान दिए।

### सम्मेलन में अन्य मुख्य बिंदुओं पर भी वैज्ञानिकों ने की चर्चा, जानकारी दी

भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी के तीन दिवसीय 75वें प्लैटिनम जुबली वार्षिक सम्मेलन में देश के कोने कोने से पहुंचे वैज्ञानिकों ने आधुनिक आणविक उपकरणों को अपनाने, फसल और पशु व्यापार में सुधार के लिए मशीन लर्निंग, जीनोमिक्स और अन्य आधुनिक आणविक उपकरणों को अपनाने, एकीकृत दृष्टिकोण यानी प्रयोगात्मक डिजाइन और डेटा प्रबंधन के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता, सटीक वर्षा सिंचित कृषि यानी सटीक वर्षा सिंचित कृषि के माध्यम से शुष्क क्षेत्र के किसानों के आय में वृद्धि करने जैसे कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर भी चिंतन मंथन किया। वैज्ञानिकों की मानें तो इस 75वें वार्षिक. आईएसएएस सम्मेलन ने कृषि अनुसंधान में एआई और डिजिटल प्रौद्योगिकियों की परिवर्तनकारी क्षमता को सफलता पूर्वक उजागर करने का काम किया है। विवि के डॉ. अमरेश चंद्रा डीन कॉलेज ऑफ बेसिक साइंस एंड ह्यूमैनिटीज ने कार्यक्रम के दौरान स्वागत भाषण दिया तथा कांफ्रेंस के सत्रों की विस्तृत जानकारी दी।

# एआई और डिजिटल प्रौद्योगिकी से कृषि में आएगी स्थिरता

- विश्वविद्यालय में 75 में प्लेटिनम जुबली वार्षिक सम्मेलन संपन्न
- तीन दिवसीय सम्मेलन में कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर हुई चर्चा
- कृषि अनुसंधान में एआई और डिजिटल प्रोद्योगिकी पर हुई वार्ता

संस, जागरण, पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी का 75वां प्लैटिनम जुबली वार्षिक सम्मेलन संपन्न हो गया। मराठवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र के कुलपति डा. इंद्रमणि मिश्रा, आईएसएएस के अध्यक्ष डा. पद्म सिंह और देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पूर्व कुलपति डा. एसडी शर्मा ने इसमें भाग लिया।

तीन दिनों तक हुए सम्मेलन में कृषि अनुसंधान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ) और डिजिटल प्रोद्योगिकी के विभिन्न आयामों की महत्वपूर्ण भूमिका पर चर्चा की गई। बीस राज्यों से आए 250 से अधिक विज्ञानियों ने उन्नत विधियों के लिए अनुसंधान सटीकता में सुधार, कृषि प्रणालियों के लिए उत्पादक विश्लेषण और विविध क्षेत्रों में एआई के एकीकरण जैसे विषयों पर गहन चर्चा की। 13 तकनीकी सत्र में छह विषय और ग्यारह उप-विषय निर्धारित थे।

विश्वविद्यालय के कुलपति डा. पीएस पांडे ने कृषि शिक्षा क्षमता विकास के लिए नीतियों के महत्व पर प्रकाश डाला। इसमें समानता, सुगमता, प्रचार, प्रासंगिकता, गुणवत्ता और क्षमता निर्माण शामिल है। डा. पांडे ने अनुसंधान सटीकता में सुधार के लिए नवीन प्रयोगात्मक डिजाइनों की आवश्यकता पर भी बल दिया।

डा. इंद्रमणि मिश्रा ने एआई और डिजिटल प्रौद्योगिकी को अपनाने से कृषि प्रथाओं में स्थिरता लाने की बात कही। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के मद्देनजर बेहतर अनुकूलन रणनीतियों को बढ़ावा देने में सांख्यिकी के महत्व पर भी विस्तार से चर्चा की।

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति एवं बैठे विशेषज्ञ • जागरण

भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी के अध्यक्ष डा. पद्म सिंह ने कहा कि यह सम्मेलन हर मामले में ऐतिहासिक रहा है। यह पहली बार है कि सम्मेलन में बीस राज्यों के 250से अधिक विज्ञानियों ने शिरकत की। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. एसडी शर्मा ने शिक्षा में सुधार के लिए एआई-आधारित टूल्स के उपयोग पर बल दिया। सम्मेलन में आधुनिक आणविक उपकरणों को अपनाने, फसल और पशु व्यापार में सुधार के लिए मशीन लर्निंग, जीनोमिक्स और अन्य आधुनिक आणविक उपकरणों को अपनाने की सिफारिश की गई।

**एकीकृत दृष्टिकोणः** प्रयोगात्मक डिजाइन और डेटा प्रबंधन के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

**सटीक वर्षा सिंचित कृषि :** सटीक वर्षा सिंचित कृषि के माध्यम से शुष्क क्षेत्र के किसानों की आय में वृद्धि पर ध्यान केंद्रित किया गया।

75वें वार्षिक आईएसएएस सम्मेलन ने कृषि अनुसंधान में एआई और डिजिटल प्रौद्योगिकी की परिवर्तनकारी क्षमता को सफलतापूर्वक उजागर किया। डा. अमरेश चंद्र, डीन आफ कालेज आफ बेसिक साइंस एंड ह्यूमैनिटीज ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर सबसे सुंदर पत्र के लिए डा. राकेश मणि शर्मा को पुरस्कृत किया गया।

मौके पर निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, निदेशक प्रसार डा. मयंक राय, डीन इंजीनियरिंग डा. राम सुरेश वर्मा , डा. महेश कुमार, डा. शिवपूजन सिंह, डा. कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

Dainik Jagran 23-03-2025

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 25 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में बादल छाए रह सकते हैं। इस दौरान मौसन साफ और शुष्क रहने की संभावना है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान अधिकतम तापमान 34 से 37 व न्यूनतम 20 से 22 डिग्री सेल्सियस रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| **समस्तीपुर** | | |
| 23 मार्च | 30.0 | 17.2 |
| 24 मार्च | 30.0 | 18.0 |
| **बेतिया** | | |
| 23 मार्च | 30.0 | 18.0 |
| 24 मार्च | 31.0 | 18.5 |
| **पटना** | | |
| 23 मार्च | 32 | 19.0 |
| 24 मार्च | 32 | 19.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 23-03-2025

# कृषि में एआई और डिजिटल प्रौद्योगिकीयों को बढ़ाने पर जोर

**पूसा, निज संवाददाता।** डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी (आईएसएएस) का प्लैटिनम जुबली सम्मेलन शनिवार को संपन्न हो गया। समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप्में मौजूद मराठवाड़ा कृषि विवि(महाराष्ट्र) के कुलपति डॉ.इंद्रमणि मिश्रा ने कहा कि एआई और डिजिटल प्रौद्योगिकियों को अपनाने से कृषि प्रथाओं में स्थिरता एवं निर्णय लेने की प्रक्रिया में सुधार होगा। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए बेहतर व अनुकूल रणनीतियों को बढ़ावा देने में सांख्यिकी के महत्व पर चर्चा की। उन्होंने डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में विवि के प्रयासो की सराहना की। विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कृषि शिक्षा क्षमता विकास के लिए नीतियों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए समानता, सुगमता, प्रचार, प्रासंगिकता, गुणवत्ता और क्षमता निर्माण पर विस्तार से चर्चा की।वीसी ने अनुसंधान सटीकता में सुधार के लिए कच्चे कॉलम डिजाइन, सुडोकू-आधारित डिजाइन और क्षेत्र परीक्षणों

डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के पंचतंत्र सभागार में कार्यक्रम को संबोधित करते वक्ता और देश भर से आये वैज्ञानिक विचार-विमर्श करते।

- **तीन दिवसीय प्लैटिनम जुबली कांफ्रेंस संपन्न**
- **डॉ.राकेश मणि शर्मा को पुरस्कृत किया गया**

में नैनो-स्केल इनपुट जैसे नवीनतम प्रयोगात्मक डिजाइनों की आवश्यकता एवं एआई-आधारित टूल्स को सशक्त करने पर बल दिया। भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी के अध्यक्ष डॉ.पद्म सिंह ने कहा कि यह सम्मेलन ऐतिहासिक रहा है। मौके पर देव संस्कृति विवि के पूर्व कुलपति डॉ.एसडी शर्मा समेत अन्य ने संबोधित किया। स्वागत डीन डॉ.अमरेश चन्द्रा एवं धन्यवाद डॉ.महेश सिंह ने किया। इस दौरान एआई पर बेस्ट पेपर के लिए डॉ.राकेश मणि शर्मा को पुरस्कृत किया गया। आधुनिक आणविक उपकरणों एवं फसल व पशु व्यापार में सुधार के लिए मशीन लर्निंग, जीनोमिक्स को अपनाने की सिफारिश।

एकीकृत दृष्टिकोण प्रयोगात्मक डिजाइन और डेटा प्रबंधन के लिए एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर।सटीक वर्षा, सिंचित कृषि के माध्यम से शुष्क क्षेत्र के किसानों की आय में वृद्धि पर ध्यान केंद्रित करने।

एआई और डिजिटल प्रौद्योगिकियों की परिवर्तनकारी क्षमता को सफलतापूर्वक उजागर कर अधिक स्थायी और लचीला खाद्य प्रणाली का मार्ग प्रशस्त करना का निर्णय लिया गया है।

Hindustan 24-03-2025

# अनुसंधान के सटीकता में सुधार के लिए नवीन प्रयोगात्मक डिजाइन जरूरी : डॉ पीएस पांडेय

**पूसा (एसएनबी)।** डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय .षि विश्वविद्यालय पूसा के पंचतंत्र सभागार में भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी के 75वें वार्षिक सम्मेलन का शनिवार को समारोह पूर्वक समापन किया गया। जिसक शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं आगत अतिथि सहित विवि के कुलपति ने दीप प्रज्वलित कर किया।

स्वागत सम्मान व कुलगीत प्रसारण के उपरांत मुख्य अतिथि मराठवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र के कुलपति डॉ. इंद्रमणि मिश्रा ने कहा कि एआई और डिजिटल प्रौद्योगिकियों को अपनाने से कृषि प्रथाओं में स्थिरता लाई जा सकती है और निर्णय लेने की प्रक्रिया में सुधार किया जा सकता है। इस दौरान उन्होंने अप्रत्याशित व अनिश्चित जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के मद्देनजर बेहतर अनुकूलन रणनीतियों को बढ़ावा देने में सांख्यिकी के महत्व पर भी विस्तार से चर्चा किया। इस अवसर पर डॉ इंद्रमणि ने कहा कि ज्ञान, विज्ञान व अनुसंधान की धरती पूसा की पावन धरा पर आकर वे स्वयं को धन्य महसूस कर रहे है। उन्होंने कहा कि कुलपति डॉ पांडेय ने डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में जो कामयाबी हासिल की है वो देश भर के विश्वविद्यालयों के लिए प्रेरणा दायक है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने अपने संबोधन में कहा कि .षि शिक्षा में क्षमता विकास से जुड़े नीतियों के महत्व पर प्रकाश डाला, जिसमें समानता, सुगमता, प्रचार, प्रासंगिकता, गुणवत्ता और क्षमता निर्माण शामिल हैं। डॉ. पांडेय ने की आवश्यकता पर बल दिया जैसे कच्चे कॉलम डिजाइन, सुडोकू-आधारित डिजाइन और क्षेत्र परीक्षणों में नैनो-स्केल इनपुट को शामिल करना। उन्होंने ने एआई-आधारित टूल्स उदली, गोरिएक्ट और चैट जीपीटी, की क्षमता पर चर्चा किया। उन्होंने विश्वविद्यालय के नए प्रौद्योगिकियों के विकास से जुड़े प्रयासों का भी उल्लेख किया। कार्यक्रम को भारतीय कृषि सांख्यिकी सोसायटी के अध्यक्ष डॉ पद्म सिंह एवं देव संस्.ति विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ एसडी शर्मा ने भी संबोधित किया। इस सबसे पहले अधिष्ठाता डॉ. अमरेश चंद्रा ने स्वागत संबोधन में कांफ्रेंस के सत्रो की विस्तृत जानकारी दी। जिसमें तीन दिवसीय कान्फ्रेंस के दौरान आधुनिक आणविक उपकरणों को अपनाना, प्रयोगात्मक डिजाइन और डेटा प्रबंधन के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता, सहित सटीक वर्षा सिंचित कृषि के माध्यम से शुष्क क्षेत्र के किसानों की आय में वृद्धि पर ध्यान केंन्द्रन विषय पर चर्चा किया गया। कार्यक्रम में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर बेस्ट पेपर के लिए डॉ राकेश मणि शर्मा को पुरस्.त किया गया। कार्यक्रम के दौरान निदेशक शिक्षा डॉ उमाकांत बेहरा निदेशक प्रसार डॉ मयंक राय ,डीन इंजीनियरिंग डॉक्टर राम सुरेश वर्मा, डॉ महेश कुमार, डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ कुमार राज्यवर्धन सहित शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

समापन सत्र का उद्घाटन करते वीसी व अतिथि।

Rashtriya Sahara 23-03-2025

# सजावटी व रंगीन मछली का व्यवसाय वरदान

**पूसा.** मछलीपालन या सजावटी रंगीन मछलीपालन में मछली का व्यावसायिक प्रजनन शामिल हैं. यह व्यवसाय ग्रामीण महिलाओं के लिए वरदान साबित होगा. इससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा. रोजगार के अवसर भी उत्पन्न होंगे. डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ मात्स्यिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा पीपी श्रीवास्तव ने बताया कि सजावटी मछली एवं रंगीन मछली का व्यवसायिक खेती के लिए लोगों में जागरूकता लाने की जरूरत है. जलवायु परिवर्तन की दौर में ग्रामीण महिला छोटे स्तर पर भी एक्वेरियम निर्माण कर व्यवसाय कर सकते हैं. खासकर ग्रामीण महिलाओं के लिए एक्वेरियम निर्माण व्यवसाय वरदान साबित हो रहा है. रंगीन मछली के बीज निर्माण भी आमदनी का बेहतर विकल्प है. ग्रामीण महिलाओं को इसे व्यवसाय के रूप में अपना कर अपनी दशा व दिशा सुधारनी चाहिए.

प्रभात खबर
Monday, March 24, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67e05c691503564eb5a0b86

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 25 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में बादल छाए रह सकते है। इस दौरान मौसन साफ और शुष्क रहने की संभावना है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान अधिकतम तापमान 34 से 37 व न्यूनतम 20 से 22 डिग्री सेल्सियस रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 24 मार्च | 30.0 | 17.2 |
| 25 मार्च | 30.0 | 18.0 |
| दरभंगा | | |
| 24 मार्च | 30.0 | 18.0 |
| 25 मार्च | 31.0 | 18.0 |
| पटना | | |
| 24 मार्च | 32 | 19.0 |
| 25 मार्च | 32 | 19.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 24-03-2025

# जलवायु अनुकूल कृषि बदलते मौसम का सबसे अच्छा विकल्प : डॉ. रत्नेश

प्रतिनिधि, पूसा

किसानों को संबोधित करते डॉ. रत्नेश कुमार झा.

जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम के अंतर्गत सोमवार को कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के तत्वावधान में एक दिवसीय कृषक गोष्ठी सह कार्यशाला आयोजित किया गया. मुख्य अतिथि शस्य विज्ञान विभाग के प्राध्यापक सह जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ. रत्नेश कुमार झा ने कहा कि जलवायु अनुकूल कृषि ही बदलते मौसम का विकल्प के रूप में देखा जा रहा है. जलवायु अनुकूल कृषि से संबंधित जानकारी किसानों को उपलब्ध कराई व साथ ही साथ गर्म मौसम में लगने वाले मूंग की खेती की विस्तृत जानकारी किसानों को दी गयी. साथ ही डॉ झा बिहार सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजना को चलाने से संबंधित जो तकनीकी है, जो विविधता है. केंद्र प्रभारी डॉक्टर तिवारी ने किसानों से कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के द्वारा उपलब्ध कराए जा रहे तकनीकी जानकारी को अपने खेतों में उतरने की सलाह दी. इंजीनियर विनिता कश्यप विषय वस्तु विशेषज्ञ कृषि अभियंत्रण कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के द्वारा खेतों में विभिन्न प्रकार के मशीनों का प्रयोग व उसके रखरखाव एवं मुख्य रूप से आने वाले समय में खेत का लेजर लैंड लेबर से लेवलिंग करने की सलाह दी गयी. उद्यान वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली डॉक्टर धीरू कुमार तिवारी के द्वारा फसलों के पोषक तत्व प्रबंधन तथा उद्यानिक फसलों के प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी उपलब्ध करायी. शुभम कुमार भगत एवं सत्येंद्र कुमार ने भी किसानों के बीच में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई तथा इस कार्यक्रम में लगभग 200 से ज्यादा किसानों ने भाग लिया.


प्रभात खबर
Tuesday, March 25, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67e1aa083dc07297ae3c8eff

## समेकित मत्स्यपालन विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ

# भूमिहीन किसानों के लिए मत्स्य पालन उत्तम व्यवसाय : डॉ त्रिवेदी

**कार्यक्रम**

**प्रतिनिधि, पूसा**

प्रशिक्षण सत्र में मौजूद प्रतिभागी.

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में बेहतर उत्पादन के लिए समेकित मत्स्यपालन विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए छात्र कल्याण निदेशक डा रमण त्रिवेदी ने कहा कि भूमिहीन किसानों के लिए मत्स्यपालन व्यवसाय सर्वोत्तम है. इस व्यवसाय को जीविकोपार्जन का साधन बना कर कम भूमि में भी वैज्ञानिकी विधि से तालाब का निर्माण कर समेकित कृषि प्रणाली के अनुसार दर्जनों स्वरोजगार किया जा सकता है. भूमिहीन किसान लीज पर भी जमीन लेकर मत्स्यपालन व्यवसाय कर सकते हैं. फिश क्रेडिट कार्ड की भी सुविधा प्राप्त कर सकते हैं. मत्स्यपालन व्यवसाय से जुड़ कर अन्य संसाधनों का भी अलग से रोजगार संभव है. तालाबों में जीरा एवं फिंगरलिंग छोड़ने पर मोटिलिटी ज्यादा होती है. जबकि इयरलिंग छोड़ने पर बेहतर उत्पादन संभव हो पाता है. छोटी मछलियों को खाने से बच्चों में कुपोषण से लड़ने के लिए क्षमता बढ़ती है. जमुई जिला के एफडीओ कृष्ण कुमार पाठक ने कहा कि प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रतिभागी उसे धरातल पर उतारने का कार्य करें. केविके शिवहर के मत्स्य वैज्ञानिक डा श्याम कुमार ने कहा कि ऑर्नमिंटल फिश की व्यवसाय में अपार संभावनाएं हैं. जरूरत है तकनीकी ज्ञानवर्धन कर व्यवसाय को संचालित करने की. संचालन करते हुए प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डा विनिता सतपथी ने कहा कि एक्वा क्वेश परियोजना के माध्यम से देश एवं राज्यों के मत्स्यपालकों सभी तरह का तकनीकी जानकारी मुहैया कराया जाता है. इस प्रशिक्षण सत्र में जमुई जिला के 25 किसान हिस्सा ले रहे हैं. मौके पर टीम के सुरेश कुमार, सूरज कुमार, रितेश कुमार, विक्की आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Tuesday, March 25, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67e1aa083dc07297ae3c8eff

भास्कर 25/3/25 पेज 13

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड ने दी बचाव की जानकारी

# आम में निकलने वाले नए पत्तों व टिकोले पर थ्रिप्स कीट का प्रकोप : कृषि वैज्ञानिक

भास्कर न्यूज | पूसा

मार्च व अप्रैल के महीने में आम में निकलने वाले नए पत्तों और टिकोलो पर थ्रिप्स कीट (स्किरटोथ्रिप्स डौरसैलिस) का आक्रमण काफी अधिक होता हैं। बिहार के किसान मौजूदा समय में अपने अपने आम के बागों की निगरानी करते रहे तथा इस कीट का प्रकोप बागों में दिखाई देते ही इसका वैज्ञानिक विधि से तत्काल प्रबंधन करें। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. एस.के. सिंह ने दी है। उन्होंने बताया कि ऐसे तो थ्रिप्स कीट की लगभग 20 प्रजातियाँ आम की फसल को क्षति पहुंचाती है। लेकिन इन कीटों में से खासकर सिरटोथ्रिप्स डौरसैलिस कीट उत्तर प्रदेश जैसे राज्य में काफी अधिक मात्रा में आम के बागों में देखने को मिल रहा हैं। इस कीट का प्रकोप मार्च-अप्रैल माह में आरंभ होता है तथा जुलाई में नई पत्तियों के निकलने तक जारी रहता है। इसके प्रकोप से आम के फल को काफी क्षति पहुंचती है। फल के अलावे आम की पत्तियां, नई कलियां और फूल को भी यह कीट प्रभावित करता हैं। उन्होंने बताया कि यह कीट आम की पत्तियां, फूल,. फल, कलियां आदि के सतहों को खरोंचकर उस जगह से रस को चूसता हैं। रस चूस लिए जाने के कारण आम के छोटे फल जहां झड़कर गिर जाते हैं। वही बड़े फलों पर भूरा खुरदरा धब्बा बन जाता है। बाद में जैसे-जैसे फल परिपक्व होते हैं फल के प्रभावित भाग में छोटी-छोटी दरारें दिखाई देने लगती हैं। उन्होंने बताया कि आम की पत्तियों का मुड़ना और बौर का सूखना भी इसी कीट के प्रकोप का हिस्सा हैं। नई पत्तियों पर इस कीट का प्रकोप अधिक और पहले दिखने लगता हैं।

## किसान वैज्ञानिक तकनीक से करें इस कीट का प्रबंधन

थ्रिप्स कीट से संक्रमित आम की नई पत्तियां।

### दवा का छिड़काव करें किसान

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि इस कीट का प्रकोप प्रत्येक वर्ष आम के बागों में न हो इसके लिए किसान प्रत्येक वर्ष के नवम्बर और दिसम्बर माह में बाग की गहरी जुताई करें जिससे इस कीट का प्यूपा जमीन से बाहर निकल जाएगा और तेज धूप व गर्मी में सूखकर मर जाएगा। इसके अलावे इसके प्यूपा को अन्य कीट व पक्षी भी खाकर समाप्त कर देते हैं। उन्होंने बताया कि किसानो को अगर बागों में इस कीट का प्रकोप दिखाई दे तो वे आवश्यकतानुसार स्पाइनोसैड दवाई 44.2 एस.सी का 1 एमएल मात्रा प्रति 5 लीटर पानी के साथ घोलकर तथा उसमें स्टीकर मिलाकर बागों मार्च व अप्रैल माह में छिड़काव करें।

### थ्रिप्स कीट की लगभग बीस प्रजातियां

कृषि वैज्ञानिक के अनुसार थ्रिप्स कीट की लगभग 20 प्रजातियां आम की फसल को क्षति पहुंचाती हैं। इन थ्रिप्स कीटों में से सिरटोथ्रिप्स डौरसैलिस खासकर बिहार व उत्तर प्रदेश में अधिकता से पाया जाता है। इस कीट का प्रकोप खासकर अप्रैल माह के आरंभ में शुरू होकर आम में नई पत्तियों के निकलने यानी जुलाई तक जारी रहता है।

# पशु व मत्स्यपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार

## मत्स्य प्रसार योजना के तहत जिले के किसानों को उन्नत तकनीक से मछली पालन का दिया गया प्रशिक्षण

जागरण संवाददाता, समस्तीपुर : जिला मत्स्य विभाग द्वारा सोमवार को शहर के एक निजी सभागार में मत्स्य प्रसार योजना अंतर्गत प्रशिक्षण-सह-प्रत्यक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उद्घाटन दरभंगा परिक्षेत्र, दरभंगा के उप-मत्स्य निदेशक कुमार विमल प्रसाद ने किया। उन्होंने कहा कि मछली पालकों को उन्नत तकनीकों को अपनाने की आवश्यकता है, जिससे उनकी आय में वृद्धि हो सके। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला सूचना एवं जनसंपर्क पदाधिकारी रजनीश कुमार राय ने कहा कि कृषि के बाद पशुपालन और मत्स्य पालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार है। उन्होंने कहा कि जिले में मत्स्यपालन लगातार प्रगति कर रहा है और सरकार की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से इसे और बढ़ावा दिया जा रहा है। इस अवसर पर जिला उद्योग केंद्र द्वारा प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना एवं अन्य संचालित योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी गई। वहीं सहायक निदेशक रसायन अमित कुमार ने मत्स्य पालन में रसायनों के उपयोग से होने वाले लाभ और हानि के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में जिला सांख्यिकी पदाधिकारी अशोक कुमार, सहायक अभियंता मत्स्य विभाग विनोद कुमार सहित मत्स्य विभाग के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यक्रम में लगभग 175 मत्स्य पालक शामिल हुए। कार्यक्रम के अंत में जिला मत्स्य पदाधिकारी-सह-मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी मो. नियाजउद्दीन ने सभी उपस्थित लोगों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

दीप जला कर कार्यक्रम की शुरुआत करते पदाधिकारी • जागरण

- तकनीक के बेहतर उपयोग से किसानों की आय में होगी वृद्धि
- पीएम विश्वकर्मा व अन्य योजनाओं की भी गोष्ठी में दी गई जानकारी

किसान गोष्ठी मौजूद किसान एवं संगोष्ठी को संबोधित करते मुख्य अतिथि डॉक्टर झा।

# गोष्ठी में मूंग की खेती की मिली जानकारी

संवाद सहयोगी, जागरण • पूसा : कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के तत्वावधान में एक दिवसीय कृषक गोष्ठी सह कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डा. रत्नेश कुमार झा ने कहा कि जलवायु अनुकूल कृषि से संबंधित तकनीकी जानकारी किसानों को उपलब्ध कराई गई तथा गरमा मौसम में लगने वाली मूंग की खेती की विस्तृत जानकारी किसानों को दी गई। डा. झा ने राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजना को चलाने से संबंधित तकनीकी की जानकारी भी किसानों को दी। केंद्र प्रभारी डा. तिवारी ने किसानों से कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली द्वारा उपलब्ध कराए जा रहे तकनीकी जानकारी को अपने खेतों में उतारने की सलाह दी। इंजीनियर विनीता कश्यप, विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि अभियंत्रण, कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली द्वारा खेतों में विभिन्न प्रकार की मशीनों का प्रयोग तथा उसके रखरखाव एवं मुख्य रूप से आने वाले समय में खेत का लेबल लैंड लेबर से करने की सलाह दी गई। उद्यान विज्ञानी डा. धीरू कुमार तिवारी ने फसलों के पोषक तत्व प्रबंधन तथा उद्यानिक फसलों के प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई। शुभम कुमार भगत एवं सत्येंद्र कुमार ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

Dainik Jagran 25-03-2025

# फलों के आकार में विकृति से प्रभावित होती पपीते की खेती

संस, जागरण • पूसा : मौसम में उतार-चढ़ाव की वजह से पपीता भी अछूता नहीं है। इसका प्रभाव फलों के आकार में विकृति के रूप में देखने को मिलती है। कुबड़ापन किसानों के लिए समस्या बनती जा रही है। इसका मुख्य कारण बोरोन की कमी है। बोरोन एक सूक्ष्म पोषक तत्व है जो पपीते की वृद्धि, विकास, परागण और फल निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इससे पौधों की वृद्धि रुक जाती है, पत्तियां विकृत हो जाती हैं, और फलों पर कार्क जैसे धब्बे या विकृतियां दिखाई देती हैं। कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के कृषि विज्ञानी डा. धीरू

## कृषि विज्ञानी डा. धीरू तिवारी ने कहा- मिट्टी की जांच कराकर ही करें पपीते की खेती, मौसम में उतार-चढ़ाव का पड़ रहा असर

कुमार तिवारी ने बताया कि किसान मिट्टी जांच कराकर ही इसकी रोपनी करें। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ समय से मौसम में उतार-चढ़ाव की वजह से ऐसा लक्षण अधिक दिखाई दे रहा है। फलों का आकार विकृत होकर टेढ़ा मेढ़ा हो जाता है। इससे फलों की उपज के साथ साथ गुणवत्ता एवं बाजार मूल्य में काफी कमी हो जाती है। मिट्टी जांच के बाद पोषक

विकृति युक्त पपीते का फल • जागरण

तत्वों की उपलब्धता के आधार पर खाद एवं उर्वरकों का एकीकृत प्रबंधन करना चाहिए।

## वेहतर उत्पादन के लिए खेत की करें ऐसे तैयारी

बोरान की पूर्ति के लिए बोरेक्स प्रति हेक्टेयर 1-2 किलोग्राम की मात्रा का उपयोग खेत की तैयारी के समय करना चाहिए। पत्तियों पर भी इसका उपयोग किया जा सकता है। इसके लिए 2-3 ग्राम बोरेक्स/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव एक माह के अंतराल पर नियमित रूप से करना चाहिए। फूल एवं फल के समय इसका विशेष ध्यान देना चाहिए। इस बात का भी जरूर ध्यान देना चाहिए कि बोरान की मात्रा अधिक नहीं हो।

Dainik Jagran 25-03-2025

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 25 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में बादल छाए रह सकते हैं। इस दौरान मौसन साफ और शुष्क रहने की संभावना है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान अधिकतम तापमान 34 से 37 व न्यूनतम 20 से 22 डिग्री सेल्सियस रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 25 मार्च | 30.0 | 17.2 |
| 26 मार्च | 30.0 | 18.0 |
| दरभंगा | | |
| 25 मार्च | 30.0 | 18.0 |
| 26 मार्च | 31.0 | 18.5 |
| पटना | | |
| 25 मार्च | 32 | 19.0 |
| 26 मार्च | 32 | 19.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 25-03-2025

# मत्स्य पालन को बढ़ावा समय की मांग: निदेशक

सोमवार को कृषि विवि में किसानों को संबोधित करते निदेशक व अन्य।

**कृषि विवि**

- किसानों का छह दिवसीय प्रशिक्षण हुआ शुरू
- मछली पालन से संबंधित जानकारियां दी गई

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के निदेशक (छात्र कल्याण) डॉ.रमण त्रिवेदी ने कहा कि किसानो की आमदनी दूनी करने के लिए परंपरागत खेती के साथ मशरूम, मत्स्यकी, पशुपालन, मधु उत्पादन जैसे विकल्पो को बढ़ावा देने की जरूरत है। इसमें मत्स्यकी पालन व इससे जुड़ा रोजगार को बढ़ावा समय की मांग है। इसके विकास को लेकर सरकार व विवि लगातार प्रयासरत है। इसमें यह प्रशिक्षण किसानों को एक नई दिशा देगा।

वे सोमवार को विवि के पंचतंत्र सभागार में जमुई के किसान प्रशिक्षुओं को संबोधित कर रहे थे। मौका था बेहतर उत्पादन के लिए समेकित मत्स्य पालन विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का। उन्होंने समेकित मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के साथ भूमिहीनो को लीज पर खेत लेकर मछली पालन करने, फीश क्रेडिट कार्ड बनवाकर लाभ लेने, मछली का सेवन करने, मछली से जुड़े अन्य कार्यो को भी व्यवसाय के रूप्लेकर आर्थिक रूप से समृद्ध होने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि एक साल मछली का बीज पानी में छोड़ने (ईयर लिंग) मछली की विकास गति छह गुणा तक तेज हो जाती है। जमुई के मत्स्य विकास पदाधिकारी कृष्ण कुमार पाठक ने कहा कि प्रशिक्षण की सार्थकता उसे कार्यरूप देने पर निर्भर करता है। कृषि विज्ञान केन्द्र, शिवहर के मत्स्य वैज्ञानिक डॉ.श्याम कुमार ने ऑरनामेंटल मछली के क्षेत्र में लगातार बढ़ रहे व्यवसाय की जानकारी देते हुए अपनाने की अपील की। प्रशिक्षण आयोजक डॉ.विनिता क्षत्रपति ने स्वागत करते हुए अल्ट्रा क्योशक पर चर्चा की। साथ ही इसके सहयोग से किसान केन्द्र व राज्य से जुड़ी नवीनतम जानकारियों से अवगत हो सकते हैं। समारोह की शुरूआत दीप प्रज्जवलित कर की गई। मौके पर सुरेश कुमार, सूरज कुमार, विक्की कुमार,रीतेश कुमार आदि मौजूद थे।

Hindustan 25-03-2025

# जलवायु अनुकूल खेती के लिए कार्यशाला

पूसा। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के वैज्ञानिक डॉ रत्नेश कुमार झा ने कहा कि मौसम के बदलते परिवेश में जलवायु अनुकूल कृषि को बढ़ावा समय की मांग है। इसके लिए वैज्ञानिक से अनुसंशित प्रभेदो का चयन के साथ कृषि यांत्रीकरण को बढ़ावा देने की जरूरत है। वे सोमवार को कृषि विज्ञान केंद्र, बिरौली के तत्वाधान में तारा धमोंन (पटोरी) में आयोजित एक दिवसीय कृषक गोष्ठी सह कार्यशाला के मौके पर बोल रहे थे। इस दौरान उन्होंने गर्म मौसम में लगने वाले मूंग की खेती की विस्तृत जानकारी किसानों को दी। केंद्र के प्रमुख डॉ आरके तिवारी ने केंद्र से उपलब्ध तकनीकी जानकारी को खेतों

Hindustan 25-03-2025

# केविके बिरौली ने किया एकदिवसीय कृषक गोष्ठी सह कार्यशाला का आयोजन

**समस्तीपुर/पटोरी (एसएनबी)।** जिले के पटोरी स्थित तारा धमौन में सोमवार को कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के तत्वावधान में जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम के अंतर्गत एकदिवसीय कृषक गोष्ठी सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वागत व उद्‌घाटन की औपचारिकता के बाद कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्राध्यापक निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ रत्नेश कुमार झा ने अपने संबोधन में किसानों को जलवायु अनुकूल कृषि से संबंधित तकनीकी जानकारी दी। साथ ही गर्म मौसम में लगने वाले मूंग की खेती की विस्तृत जानकारी किसानों को दी। वहीं केंद्र प्रभारी डॉक्टर तिवारी ने किसानों से कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के द्वारा उपलब्ध कराए जा रहे तकनीकी जानकारी को अपने खेतों में उतरने की सलाह दी। जबकि विषय वस्तु विशेषज्ञ कृषि अभियंत्रण कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली इंजीनियर विनीता कश्यप ने खेतों में विभिन्न प्रकार के मशीनों का प्रयोग, उसके रखरखाव एवं मुख्य रूप से आने वाले समय में खेत का लेजर लैंड लेबर से लेबलिंग करने की सलाह दी गई। उद्यान वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली डॉक्टर धीरू कुमार तिवारी ने फसलों के पोषक तत्व प्रबंधन तथा उद्यानिक फसलों के प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी दी। मौके पर इस कार्यक्रम से जुड़े शुभम कुमार भगत एवं सत्येंद्र कुमार ने भी किसानों के बीच में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम में लगभग 200 से ज्यादा किसान शामिल थे।

कार्यशाला में मौजूद वैज्ञानिक व अन्य।

Rashtriya Sahara 25-03-2025

# गन्ना फसल में विविधिकरण लाने की जरूरत : डॉ देवेंद्र सिंह

उद्घाटन करते अतिथि.

**प्रतिनिधि, पूसा**

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में गन्ना आधारित उत्पादन प्रणाली में प्राथमिक एवं द्वितीयक कृषि की चुनौतियां एवं अवसर विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गयी. अध्यक्षता करते हुए ईख अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ देवेंद्र सिंह ने कहा कि गन्ना की फसल में विविधिकरण लाने की जरूरत है. सिर्फ चकबंदी कार्य पूर्ण कर दिया जाये, तो गन्ना का उत्पादन एवं उत्पादकता दर में स्वतः वृद्धि हो जायेगी. बेहतर विकल्प के रूप में जैविक खाद के साथ प्राकृतिक खेती की मुड़ने की जरूरत बतायी. शश्य विज्ञान विभाग के प्राध्यापक सह जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा ने कहा कि बिहार के किसानों के लिए गन्ना नगदी फसल है. जलवायु परिवर्तन की दौर में फसलों को बचाकर बेहतर उत्पादन लेना किसानों के लिए बहुत बड़ा चैलेंज बना हुआ है.

इससे निबटने के लिए वैज्ञानिक जलवायु अनुकूल कृषि परियोजना के तहत किसानों के खेत पर नवीनतम तकनीक एवं उन्नतशील बीजों का प्रभेद के साथ अनुसंधान में जुट गये हैं. धन्यवाद ज्ञापन करते हुए वैज्ञानिक सह प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण कॉर्डिनेटर डा विनिता सतपथी ने किया. मौके पर टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, सूरज कुमार एवं विक्की कुमार आदि थे.

प्रभात खबर
Wednesday, March 26, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67e3022cbd9b6f04b2217135

# 26 से 30 मार्च तक अधिकतम तापमान में 4 से 5 डिग्री सेल्सियस वृद्धि के आसार

**समस्तीपुर.** डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केंद्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 26 से 30 मार्च 2025 तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ तथा मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है. इस अवधि में अधिकतम तापमान में 4-5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है. जिसके चलते अगले 31 मार्च तक 36-38 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकता है तथा न्यूनतम तापमान 20 से 23 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है. पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 8 से 12 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है. सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 70 से 80 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है. मंगलवार का अधिकतम तापमान 33.8 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 0.8 डिग्री अधिक रहा. वहीं न्यूनतम तापमान 15.0 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 2.8 डिग्री कम रहा.

प्रभात खबर
Wednesday, March 26,
Samstipur
https://epaper.prabha...c

दैनिक भास्कर 26/03/25 P-15

मौसम • 8 से 12 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से पछिया हवा चलेगी, रबी फसलों की कटाई तेज करें किसान

# इस सप्ताह 4-5 डिग्री सेल्सियस तक अधिकतम तापमान में हो सकती है वृद्धि, वर्षा की संभावना नहीं, शुष्क रहेगा मौसम

भास्कर न्यूज़ | समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ रहेगा। मौसम शुष्क बना रहेगा। अधिकतम तापमान में 4 से 5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है। 31 मार्च तक तापमान 36 से 38 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकता है। न्यूनतम तापमान 20 से 23 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के मौसम विभाग के अनुसार, इस दौरान 8 से 12 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से पछिया हवा चलेगी। सुबह सापेक्ष आर्द्रता 70 से 80 प्रतिशत और दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है। रबी फसल की कटाई के बाद खेतों की गहरी जुताई करें। इससे मिट्टी में छिपे कीड़ों के अंडे, प्यूपा और घास के बीज नष्ट हो जाएंगे। नेनुआ, करैला, लौकी और खीरा की फसल

खेत में लगी खीरा की फसल।

में लाल भृंग कीट का खतरा बढ़ सकता है। यह कीट पौधों की प्रारंभिक अवस्था में नुकसान पहुंचाता है। गाय के गोबर की राख में थोड़ा किरासन मिलाकर सुबह पौधों पर छिड़काव करें। अधिक प्रकोप होने पर क्लोरोपायरीफास 2 प्रतिशत धूल दवा का 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पौधों की जड़ों के पास मिट्टी में मिलाएं। पत्तियों पर डाइक्लोरवॉस 76 ईसी का 1 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

## गरमा मूंग और उरद की बुआई का सही समय, होगी अच्छी उपज

गरमा मूंग और उरद की बुआई के लिए यह उपयुक्त समय है। किसान प्राथमिकता देकर बुआई करें। खेत की जुताई में 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 45 किलोग्राम स्फूर, 20 किलोग्राम पोटाश और 20 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से डालें। मूंग के लिए पूसा विशाल, सम्राट, एसएमएल-668, एचयूएम-16 और सोना किस्में उपयुक्त हैं। उरद के लिए पंत उरद-19, पंत उरद-31, नवीन और उत्तरा किस्में अनुशंसित हैं। बुआई से दो दिन पहले बीज को 2.5 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति किलोग्राम की दर से शोधित करें। बुआई से ठीक पहले बीज को उचित राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें। छोटे दानों के लिए बीज दर 20-25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर और बड़े दानों के लिए 30-35 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई की दूरी 30X10 सेमी रखें।

दैनिक भास्कर - 26/02/25 P.N-17

# एकता, प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ावा देने के लिए प्रतियोगिता जरूरी : कुलपति

## कृषि विवि पूसा के तिरहुत कृषि महाविद्यालय ढोली के परिसर में कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | पूसा

कार्यक्रम में मौजूद खिलाड़ी।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पुसा के अधीनस्थ तिरहुत कृषि महाविद्यालय ढोली के परिसर में छात्र-छात्राओं के लिए सातवें अंतर महाविद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता 2025 का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का उद्घाटन मुख्य अतिथि पुसा विवि के कुलपति डॉ. पी.एस. पांडेय एवं विशिष्ट अतिथि सिटी एसपी मुजफ्फरपुर के विश्वजीत दयाल एवं विवि के निदेशक छात्र कल्याण डॉ. रमन त्रिवेदी ने संयुक्त रूप से मशाल जलाकर किया।कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने मार्च पास्ट भी किया। इस मौके पर छात्रों को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ. पी.एस पांडेय ने कहा कि यह प्रतियोगिता हमारे छात्र-छात्राओं को खेल के माध्यम से एकता, स्पोर्ट्समैन शिप और प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ावा देने के लिए आयोजित किया गया है। उन्होंने कहा कि पिछले दो वर्षों में विवि के छात्रों ने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पर सफलता अर्जित की है। विवि के छात्र देश भर में गेट, नेट सहित कई प्रतिष्ठित प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान को प्राप्त किये हैं। उन्होंने कहा कि आज के अतिथि भी इस विश्वविद्यालय के छात्र रहे हैं। उन्होंने छात्रों से कहा कि 2047 तक देश को विकसित बनाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका हैं। इस लिए वे अभी से ही प्रयास शुरू कर दें। विशिष्ट अतिथि विश्वजीत दयाल सिटी एसपी मुजफ्फरपुर आदि थे।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 30 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्राय: साफ तथा मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान में 4 से 5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 26 मार्च | 33.0 | 15.0 |
| 27 मार्च | 33.8 | 15.0 |
| दरभंगा | | |
| 26 मार्च | 33.8 | 15.0 |
| 27 मार्च | 33.8 | 16.0 |
| पटना | | |
| 26 मार्च | 34.5 | 16.6 |
| 27 मार्च | 34.5 | 16.6 |

डिग्री सेल्सियस में

**Dainik Jagran 23-3-2025**

# खेल से छात्रों में बढ़ती एकता व प्रतिस्पर्धा की भावना

## डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में कुलपति ने किया अंतर महाविद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के तिरहुत कृषि महाविद्यालय कैंपस ढोली में मंगलवार को सातवां अंतर महाविद्यालय खेल प्रतियोगिता का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन कुलपति डा. पीएस पांडेय, विशिष्ट अतिथि के रूप में मुजफ्फरपुर सिटी एसपी विश्वजीत दयाल एवं छात्र कल्याण निदेशक डा. रमन त्रिवेदी ने मशाल जलाकर किया। कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने मार्च पास्ट भी किया। छात्रों को संबोधित करते हुए कुलपति ने कहा कि यह प्रतियोगिता हमारे छात्र-छात्राओं को खेलों के माध्यम से एकता, स्पोर्ट्समैनशिप और प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ावा देने के लिए आयोजित की जा रही है। देश भर में गेट, नेट सहित कई प्रतिष्ठित प्रतियोगिताओं में विश्वविद्यालय के छात्र प्रथम आए हैं। आज के अतिथि भी इस विश्वविद्यालय के छात्र रहे हैं। उन्होंने कहा कि वर्ष 2047 तक देश को विकसित बनाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है इसके लिए वे अभी से प्रयास शुरू कर दें। मंच संचालन तिरहुत कृषि महाविद्यालय के प्राध्यापक डा. राजेश कुमार ने किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के आठ कालेज से 700 से अधिक छात्र-छात्राएं विभिन्न प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं। खेल प्रतियोगिता 25 से 27 मार्च तीन दिनों तक चलेगी। मौके पर डीन टीसीए डा. पीपी सिंह, निदेशक अनुसंधान डा. एके सिंह, निदेशक प्रसार डा. मयंक राय, निदेशक बीज डा. डीके राय, डा. महेश कुमार, डा. नवनीत कुमार, डा. एके मिश्रा, डा. कुमार राज्यवर्धन आदि उपस्थित रहे ।

प्रतियोगिता की मशाल जलाकर उद्घाटन करते कुलपति व उपस्थित अन्य। • जागरण

डिजिटल एग्रीकल्चर में विश्वविद्यालय ने स्थापित किया कीर्तिमान : विशिष्ट अतिथि मुजफ्फरपुर सिटी एसपी ने कहा कि उनके लिए यह गौरव का क्षण है कि वे अपने कालेज में विशिष्ट अतिथि बनकर आए हैं। उन्होंने कालेज में बिताए अपने चार साल को याद किया। कहा कि पिछले दो वर्षों में विश्वविद्यालय में काफी तेजी से प्रगति हुई है। डिजिटल एग्रीकल्चर में विश्वविद्यालय ने कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं और यह हर जगह चर्चा का विषय है। खेल हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह हमें अनुशासन, संघर्ष और जीत की भावना सिखाते हैं।

छात्रों को प्रेरणा लेने की जरूरत : छात्र कल्याण निदेशक डा. रमन त्रिवेदी ने स्वागत भाषण में कहा कि विश्वविद्यालय के कई छात्र देश और विदेश में अच्छे पदों पर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि छात्रों को उन सबसे प्रेरणा लेकर और बेहतर करने का प्रयास करना चाहिए।

**Dainik Jagran 23-3-2025**

## गन्ना उत्पादन व इससे जुड़े रोजगार की हैं अपार संभावनाएं: निदेशक

# गन्ना उत्पादन की दी जानकारी

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के ईख अनुसंधान संस्थान, पूसा के निदेशक डॉ.देवेन्द्र सिंह ने कहा कि गन्ना उत्पादन व इससे जुड़े व्यवसाय की राज्य में अपार संभावनाएं हैं। जरूरत है इसके तकनीकी पहलुओं का ज्ञान लेकर स्वरोजगार के बेहतर विकल्प के रूप में बढ़ावा देने की।

वे मंगलवार को समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, वैशाली, बेगूसराय, पश्चिम चंपारण, सारण आदि से आये प्रसार कार्यकर्ताओं व किसानो को तीन दिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में चुनौतियों के बाबजूद बेहतर संभावनायें हैं। उन्होंने कहा कि उत्पादन के लिए कृषि यांत्रिकरण, अनुसंशित प्रभेदो का चयन, सिंचाई की नवीनतम तकनीक के साथ आलू, मटर, राजमा,स्ट्रॉबेरी, धनिया, मंगरैला जैसी फसलो गन्ना के साथ ईख का उत्पादन लाभदायक है। वहीं इसका मूल्य संवर्धन कर आमदनी को और बढ़ाया जा सकता है। जलवायु अनुकूल खेती परियोजना के अन्वेषक डॉ.रत्नेश कुमार झा ने कहा कि मौसम के बदलते परिवेश में गन्ना जैसी फसलो पर इसका असर काफी कम होता है। जिसका लाभ किसानो को लेना चाहिए। इसमें प्रसार कार्यकर्ताओं की भूमिका अहम है। वे किसानो को जागरूक कर सकते हैं।

सोवार को विश्वविद्यालय के पंचतंत्र सभागार में संबोधित करते निदेशक व अन्य।

**Hindustan 26-03-2025**

# हार और जीत दोनों ही परिस्थितियों में आत्मचिंतन व मंथन करना जरूरी : वीसी

**समस्तीपुर (एसएनबी)।** डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के तिरहुत कृषि महाविद्यालय ढोली परिसर में सातवें अंतर महाविद्यालय खेल प्रतियोगिता 2025 का समारोहपूर्वक शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर अतिथियों के स्वागत सम्मान की औपचारिकता के बाद सबसे पहले विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पी.एस. पांडेय, विशिष्ट अतिथि विश्वजीत दयाल, सिटी एसपी, मुजफ्फरपुर एवं निदेशक छात्र कल्याण डॉ रमन त्रिवेदी ने मशाल जलाकर और गुब्बारे उडा कर प्रतियोगिता का उद्घाटन किया। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ. पांडेय कहा, कि यह प्रतियोगिता छात्र-छात्राओं को खेल-खेल में नेतृत्व कौशल, सामुहिक एकता, खेल भावना और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को प्रोत्साहित करने के लिए आयोजित किया गया है। हमें विश्वास है कि सभी खिलाडी अपनी बेहतरतम प्रतिभा व क्षमता का प्रदर्शन करेंगे। उन्होंने कहा कि संपूर्ण जीवन ही खेल का मैदान है। हार और जीत इसके अभिन्न अंग है। एक दिन की हार-जीत से आपके क्षमता का

मशाल जला कर उद्घाटन करते अतिथि व अन्य।

मुल्यांकन नही किया जा सकता। हार और जीत दोनों ही परिस्थितियों में आत्मचिंतन व मंथन करना चाहिए। डॉ पाण्डेय ने बताया कि विश्वविद्यालय में पिछले दो वर्षों में छात्रों ने देश भर में गेट, नेट सहित कई प्रतिष्ठित प्रतियोगिताओं में सफलता अर्जित किये है। 2047 तक देश को विकसित बनाने में आप छात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके लिए अभी से प्रयास शुरू कर दें। वहीं अपने संबोधन में विशिष्ट अतिथि सिटी एसपी मुजफ्फरपुर विश्वजीत दयाल ने कहा कि उनके लिए यह गौरव का क्षण है कि वे अपने ही कॉलेज में विशिष्ट अतिथि बनकर आये हैं। कॉलेज में बिताए अपने चार साल को याद करते हुए अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा कि पिछले दो वर्षों में विश्वविद्यालय में काफी तेजी से प्रगति हुई है। डिजिटल एग्रीकल्चर में विश्वविद्यालय ने कई कीर्तिमान स्थापित किये है जो पूरे देश में हॉट स्टोरी की तरह चर्चा का विषय है। श्री दयाल ने कहा कि खेल हमें संघर्ष से जीत हासिल करने का हुनर के साथ-साथ अनुशासन, नेतृत्व कौशल, सामुहिक प्रयास आदि भी सिखाते है। इसके पुर्व निदेशक छात्र कल्याण डॉ रमन त्रिवेदी ने स्वागत संबोधन में कहा कि विश्वविद्यालय के कई छात्र देश और विदेश में अच्छे पदों पर कार्यरत है, छात्रों को उन सबसे प्रेरणा लेकर और बेहतर करने का प्रयास करना चाहिए। तिरहुत कृषि महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ राजेश कुमार ने मंच संचालन और धन्यवाद ज्ञापन किया। बताते चलें कि 25 से 27 मार्च तक चलने वाले इस तीन दिवसीय प्रतियोगिता में 19 वैयक्तिक एवं सात टीम इवेंट प्रतिस्पर्धाएं आयोजित किए जायेंगे। जिसमें विश्वविद्यालय के आठ महाविद्यालयों के सात सौ से अधिक छात्र छात्राएं अपने दमखम का प्रदर्शन करेंगे। मौके पर डीन टीसीए डॉ पीपी सिंह, निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह, निदेशक प्रसार डॉ मयंक राय, निदेशक बीज डॉ डीके राय, डॉ महेश कुमार, डॉ नवनीत कुमार, डॉ एके मिश्रा, डॉ कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न प्राध्यापक, वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

**Rashtriya Sahara 26-03-2025**

भेजा गया है।

भास्कर 27/3/25 पेज 18

# अंजीर की खेती पर रस्ट रोग का खतरा बढ़ा किसान वैज्ञानिक तकनीक से करें प्रबंधन

## बाजार में बढ़ती मांग और अनुकूल जलवायु के कारण किसान व्यावसायिक रूप से कर रहे खेती

भास्कर न्यूज | पूसा

उत्तर भारत में अंजीर की खेती तेजी से लोकप्रिय हो रही है। बाजार में अंजीर की बढ़ती मांग और अनुकूल जलवायु के कारण किसान इसे व्यावसायिक रूप से अपना रहे हैं। लेकिन हाल के वर्षों में अंजीर पर रस्ट रोग का खतरा बढ़ गया है। यह रोग समय पर नियंत्रित न किया जाए तो उत्पादन बुरी तरह प्रभावित होता है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के पादप रोग विभाग के प्रमुख और वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने बताया कि अंजीर का रस्ट रोग सेरोटेलियम फिक्की नामक फफूंद के कारण होता है। इस रोग के संक्रमण से अंजीर की पत्तियों पर

रस्ट रोग से संक्रमित अंजीर।

गहरे चॉकलेट रंग के छोटे-छोटे धब्बे बनने लगते हैं। यह रोग अंजीर के फल को भी प्रभावित करता है। पत्ते और फल समय से पहले झड़ जाते हैं। उन्होंने बताया कि बिहार और उत्तर भारत के किसान वैज्ञानिक तकनीक अपनाकर इस रोग को नियंत्रित कर सकते हैं। आज अधिकांश नर्सरियों में अंजीर के पौधे उपलब्ध हैं, जहां से किसान इन्हें खरीदकर अपने खेतों में लगा सकते हैं। उत्तर भारत की जलवायु अंजीर की खेती के लिए उपयुक्त है। बिहार के कई जिलों में किसानों ने इसकी खेती शुरू की है और उनके पौधे अच्छी तरह बढ़ रहे हैं। डॉ. सिंह ने बताया कि रस्ट रोग के कारक पहले अंजीर की छोटी पत्तियों पर हमला करते हैं। इससे पत्तियों पर पीले धब्बे बनने लगते हैं।

### रस्ट का प्रकोप दिखने पर ऐसे प्रबंधित करें

इस बीमारी को नियंत्रित करने के लिए छिड़काव करने से थोड़ी समस्या होती है क्योंकि अंजीर के लिए वर्तमान में कोई कवकनाशी की सस्तुति नहीं की गई है। रोग की उग्रता की अवस्था में प्रोपीकोनाजोल नामक फफुंदनाशक की 2 एमएल दवा प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर अंजीर के पौधों पर छिड़काव करने से रोग की उग्रता में कमी आती है। इस रोग के नियंत्रण का सर्वोत्तम तरीका अंजीर के बाग में स्वच्छता बनाएं रखना और पेड़ के आक्रांत हिस्से की कटाई व छंटाई करते रहना हैं। अंजीर उत्पादक किसान बाग में संक्रमित पुराने गिरे हुए पत्तों को एकत्र कर इसे जला दें। अधिक वायु प्रवाह के लिए पेड़ की छंटाई कर सकते हैं क्योंकि नम क्षेत्रों में रोगग्रस्त होने की संभावना अधिक होती है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि अंजीर के पौधों को नियमित रूप से पानी देते रहे। पत्तियों पर पानी छिड़कने से बचने की कोशिश करें। पौधों पर छिड़का जाने वाला पानी अंजीर के रस्ट की उपस्थिति में एक बड़ा कारक निभाता है।

भास्कर 27/3/25 पेज 17

# गन्ना अनुसंधान में वैज्ञानिकों की कमी व शोध से सचिव को कराया अवगत

## विभाग के सचिव ने पूसा के गन्ना अनुसंधान संस्थान का लिया जायजा

भास्कर न्यूज | पूसा

बैठक में मौजूद वैज्ञानिक।

बिहार सरकार के गन्ना उद्योग विभाग के सचिव बी कार्तिकेय घनजी ने बुधवार को डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा स्थित ईख अनुसंधान संस्थान में गन्ना बीज उत्पादन परियोजना के तहत चल रहे कार्यक्रम में शिरकत की। बाद में श्री धनजी ने पुसा विवि के कृषि वैज्ञानिक खासकर गन्ना वैज्ञानिकों के साथ एक समीक्षात्मक बैठक भी की। समीक्षात्मक बैठक के दौरान मुख्य रूप से विवि के वैज्ञानिक डा. रत्नेश कुमार झा ने गन्ना उद्योग विभाग के सचिव श्री धनजी से आग्रह करते हुए कहा कि वे पुसा विवि के ऐसे कृषि विज्ञान केंद्र जो खासकर चीनी मिल वाले क्षेत्रों में अवस्थित हैं। वैसे सभी कृषि विज्ञान केंद्रों में कम से कम 10 से 12 एकड़ भूमि में बीज के लिए गन्ना का उत्पादन करवाएं। ऐसा करने से बिहार में अधिकाधिक गन्ना का उत्पादन संभव हो पायेगा। समीक्षात्मक बैठक की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक डा. देवेंद्र सिंह ने कहा कि इस संस्थान में पहले 82 वैज्ञानिक कार्यरत थे। जबकि आज 31 पद सेंक्शन होने के बावजूद महज 10 वैज्ञानिक के बदौलत ही संपूर्ण संस्थान संचालित हो रहा है। विवि और इसका गन्ना अनुसंधान केंद्र बिहार सरकार एवं चीनी मिल के साथ समन्वय स्थापित कर किसान हित में नया नया अनुसंधान कर रहा है। इससे गन्ना के क्षेत्र में क्रांति आएगी। मौके पर डॉ. एसएन सिंह, डा. मो. मिनितुल्लाह, डा. डीएन कामत, डा. बलवंत कुमार, डॉ. नवनीत कुमार, डॉ. सीके झा, वैज्ञानिक ई. अनुपम अमिताभ थे।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 30 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्राय: साफ तथा मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान में 4 से 5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 27 मार्च | 33.0 | 15.0 |
| 28 मार्च | 33.8 | 15.0 |
| दरभंगा | | |
| 27 मार्च | 33.8 | 15.0 |
| 28 मार्च | 33.8 | 16.0 |
| पटना | | |
| 27 मार्च | 34.5 | 16.6 |
| 28 मार्च | 34.5 | 16.6 |

डिग्री सेल्सियस में

**Dainik Jagran 27-03-2025**

# 700 से अधिक छात्र-छात्राओं ने खेलकूद में दिखाई प्रतिभा

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के ढोली परिसर में चल रहे तीन दिवसीय अंतर महाविद्यालय खेल प्रतियोगिता के दूसरे दिन विभिन्न खेलों में छात्र-छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के आठ कालेजों के 700 से अधिक छात्र-छात्राओं ने अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन किया। छात्र कल्याण निदेशक डा. रमन त्रिवेदी ने कहा कि यह प्रतियोगिता विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं के लिए एक अच्छा अवसर है। वहां वे अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकते हैं और अपने कालेज का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। प्रतियोगिता का आयोजन विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण विभाग द्वारा किया जा रहा है। इसका उद्देश्य छात्र-छात्राओं को खेलों के प्रति प्रेरित करना और उनकी खेल प्रतिभा को विकसित करना है। प्रतियोगिता गुरुवार तक आयोजित की जा रही है। प्रतियोगिता का समापन समारोह में विभिन्न खेलों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जाएगा।

अंतर महाविद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता में मैच खेलते खिलाड़ी • जागरण

विश्वविद्यालय के स्पोर्ट्स इंचार्ज डा. राजेश कुमार ने बताया कि प्रतियोगिता के दूसरे दिन, 200 मीटर दौड़ में पुरुष वर्ग में पोस्ट ग्रेजुएट कालेज आफ एग्रीकल्चर के एडला वेणु ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। जबकि, महिला वर्ग में कालेज आफ बेसिक साइंस एंड ह्यूमैनिटीज की हरप्रिया ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार, 300 मीटर दौड़ में पुरुष वर्ग में तिरहुत कालेज आफ एग्रीकल्चर के संदीप बेनीवाल और महिला वर्ग में कालेज आफ बेसिक साइंस एंड ह्यूमैनिटीज की मुस्कान राज ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। आठ सौ मीटर दौड़ में पुरुष वर्ग में पंडित दीनदयाल उपाध्याय उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, पिपरकोठी के रोहिताश्व मीणा एवं महिला वर्ग में उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय के प्रियांशी ने प्रथम स्थान हासिल किया। इसके अलावा, ऊंची कूद में पुरुष वर्ग में तिरहुत कालेज आफ एग्रीकल्चर के बिमल कुमार एवं महिला वर्ग में तिरहुत कालेज आफ एग्रीकल्चर की अंजलि यादव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। जेवलिन थ्रो में पुरुष वर्ग में तिरहुत कालेज आफ एग्रीकल्चर के आदर्श द्विवेदी एवं महिला वर्ग में कालेज आफ कम्युनिटी साइंस की नीति कुमारी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। डिस्क थ्रो में पुरुष वर्ग में कालेज आफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग के रंजीत कुमार एवं महिला वर्ग में पोस्ट ग्रेजुएट कालेज आफ एग्रीकल्चर की शीतल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

**Dainik Jagran 27-03-2025**

# सेंटर खाद्य प्रसंस्करण को देगी नई दिशा : कुलपति

प्रतिनिधि, पूसा

हस्ताक्षरयुक्त समझौता पत्र आदान-प्रदान करते कर्मी.

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में जल्द ही अत्याधुनिक कॉमन इनक्यूबेशन सेंटर की स्थापना की जायेगी. उद्योग विभाग के खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय के तत्वाधान में प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना के तहत विवि स्थित कांफ्रेंस हॉल में केंद्रीय कृषि विवि और खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय उद्योग विभाग बिहार सरकार के बीच द्विपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किया गया. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित एवं खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय उद्योग विभाग बिहार सरकार की देखरेख में विवि में स्थापित होने वाला यह बिहार का पहला कॉमन अत्याधुनिक इन्क्यूबेशन सेंटर होगा. इस परियोजना की कुल लागत 2.58 करोड़ होगी. द्विपक्षीय समझौता हस्ताक्षर कार्यक्रम के दौरान बिहार सरकार के उद्योग मंत्री नीतीश मिश्रा, खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय बिहार के निदेशक निखिल धनराज निप्पाणीकर, सह प्राध्यापक डॉ. रामदत्त, प्रगति प्रियदर्शी आदि थे.

इस सेंटर में 400 मीट्रिक टन हर वर्ष की क्षमता से फलों और सब्जियों का प्राथमिक प्रसंस्करण, 150 मीट्रिक टन वर्ष की क्षमता से शहद का प्रसंस्करण और मशरूम एवं केला आधारित कुकीज का भी प्रसंस्करण किया जायेगा. कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने कहा कि यह अत्याधुनिक कॉमन इन्क्यूबेशन सेंटर न केवल एक बेहतर प्रशिक्षण और विकास का अवसर प्रदान करेगा बल्कि बिहार के खाद्य प्रसंस्करण व उद्योग को वैश्विक मानकों तक पहुंचाने में भी सहायक सिद्ध होगा. यह परियोजना बिहार में खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में एक नई दिशा और अवसर प्रदान करेगा. इससे राज्य में उद्योग की वृद्धि और रोजगार के नये अवसर उत्पन्न होंगे.

प्रभात खबर
Friday, March 28, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67e59efd6df28dee0af4e512

भास्कर 28/3/25 पेज 17

**कार्यक्रम** • पूसा विवि और खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय उद्योग विभाग के बीच द्विपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर

# कृषि विवि पूसा में 2.58 करोड़ की लागत से अत्याधुनिक कॉमन इनक्यूबेशन सेंटर बनेगा

भास्कर न्यूज़ | पूसा

## पहल : शहद का प्रसंस्करण, मशरूम व केला आधारित कुकीज का भी प्रसंस्करण होगा

उद्योग विभाग बिहार सरकार के खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय के तत्वाधान में प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना के तहत डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में जल्द ही अत्याधुनिक कॉमन इनक्यूबेशन सेंटर की स्थापना की जाएगी। इसको लेकर विवि के मेन बिल्डिंग स्थित कांफ्रेंस हॉल में पूसा विवि और खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय उद्योग विभाग बिहार सरकार के बीच द्विपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किया गया। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित एवं खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय उद्योग विभाग बिहार सरकार की देख-रेख में पूसा विवि में स्थापित होने वाला यह बिहार राज्य का पहला कॉमन अत्याधुनिक इनक्यूबेशन सेंटर होगा। इस परियोजना की कुल लागत 2.58 करोड़ होगी। द्विपक्षीय समझौता हस्ताक्षर कार्यक्रम के दौरान बिहार सरकार के उद्योग मंत्री नीतीश मिश्रा, खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय बिहार के निदेशक निखिल धनराज निप्पाणीकर, पूसा विवि के सह प्राध्यापक डॉ. राम दत्त, प्रगति प्रियदर्शी आदि गणमान्य लोग मौजूद थे। इस कॉमन इन्क्यूबेशन सेंटर को विभिन्न खाद्य प्रसंस्करण और गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पूसा विवि के परिसर में स्थापित किया जा रहा हैं। इस सेंटर में 400 मीट्रिक टन वर्ष की क्षमता से फलों और सब्जियों का प्राथमिक प्रसंस्करण,150 मीट्रिक टन वर्ष की क्षमता से शहद का प्रसंस्करण और मशरूम एवं केला आधारित कुकीज का भी प्रसंस्करण किया जाएगा। फल, सब्जी, शहद, मशरूम आदि का प्रसंस्करण करने के अलावे इस कॉमन इन्क्यूबेशन सेंटर के माध्यम से छात्रों को प्रशिक्षण भी दी जाएगी।

समझौते पत्र के साथ उद्योग मंत्री, अधिकारी व वैज्ञानिक।

### पूसा केंद्रीय विश्वविद्यालय के छात्रों के प्रशिक्षण की क्षमता में होगी वृद्धि

विवि के वैज्ञानिकों के अनुसार कॉमन इन्क्यूबेशन सेंटर को स्थापित करने की यह पहल बिहार राज्य में खाद्य प्रसंस्करण पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने, उद्यमता को बढ़ावा देने तथा सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों को समर्थन देने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इतना ही नहीं पूसा विवि में इस सेंटर के स्थापित होने से खासकर पूसा विवि को अतिरिक्त बुनियादी ढांचा मिलेगा जिससे विश्वविद्यालय के छात्रों के प्रशिक्षण क्षमता में वृद्धि होगी। इसके अलावे बिहार सरकार के उद्योग विभाग द्वारा इस सेंटर का उपयोग खाद्य प्रसंस्करण, स्टार्टअप और योजना के लाभार्थियों को प्रशिक्षित करने के लिए किया जा सकेगा। द्विपक्षीय समझौता हस्ताक्षर होने के बाद हर्ष व्यक्त करते हुए डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि यह अत्याधुनिक कॉमन इन्क्यूबेशन सेंटर न केवल एक बेहतर प्रशिक्षण और विकास का अवसर प्रदान करेगा बल्कि बिहार के खाद्य प्रसंस्करण व उद्योग को वैश्विक मानकों तक पहुंचाने में भी यह सेंटर काफी सहायक सिद्ध होगा। उन्होंने बताया कि यह परियोजना बिहार में खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में एक नई दिशा और अवसर प्रदान करेगी जिससे राज्य में उद्योग की वृद्धि और रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होंगे।

भास्कर 28/3/25 पेज 17

खेलकूद • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के तिरहुत कृषि महाविद्यालय ढोली में कार्यक्रम

# अंतर महाविद्यालय खेल प्रतियोगिताओं में छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है यह सराहनीय : कुलपति

भास्कर न्यूज़ | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीनस्थ तिरहुत कृषि महाविद्यालय ढोली के परिसर में चल रहा तीन दिवसीय अंतर महाविद्यालय खेल प्रतियोगिता गुरुवार शाम संपन्न हो गया। इस अवसर पर एक समापन समारोह कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। समापन समारोह में विश्वविद्यालय में पढ़ाई कर रहे 2000 से अधिक छात्रों ने जहाँ शिरकत की। वही 700 से अधिक छात्र-छात्राओं ने तीन दिनों तक चलने वाले विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में भाग लिया। इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने कहा कि इस खेल प्रतियोगिता में खासकर छात्राओं ने बढ चढकर

विजेता खिलाड़ियों को मेडल पहनाते कुलपति।

हिस्सा लिया है यह काफी सराहनीय है। उन्होंने कहा कि खेल हमें जीवन में अनुशासन और टीम भावना के साथ मिलकर काम करने की सीख देता है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के हित में लगातार निर्णय ले रहा है जिसके परिणाम भी अब स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने कहा की वैसे खिलाडी जिन्हें इस खेल प्रतियोगिता में मेडल नहीं मिल सका है उन्हें निराश नहीं होना चाहिए। वैसे खिलाड़ी अपनी कमियों को दूर करने के लिए निरंतर प्रयास करें ताकि वे अगली बार सफल हो सकें। निदेशक छात्र कल्याण डॉ. रमन त्रिवेदी ने कहा कि कुलपति डॉ. पांडेय विश्वविद्यालय के छात्रों के सम्यक विकास लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं।

## 1500 मीटर दौड़ में पुरुष वर्ग में रोहिताश्व व महिला में करीना ने प्रथम स्थान किया प्राप्त

तिरहुत कृषि महाविद्यालय ढोली में संपन्न हर खेल प्रतियोगिता के बारे में जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के स्पोर्ट्स इंचार्ज डॉ. राजेश कुमार ने बताया कि प्रतियोगिता के अंतिम दिन 1500 मीटर दौड़ में पुरुष वर्ग में उद्यानिकी महाविद्यालय पिपराकोठी के रोहिताश्व ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जबकि महिला वर्ग में टीसीए ढोली की करीना ने प्रथम स्थान को प्राप्त किया। इसी तरह टेबल टेनिस में पुरुष वर्ग में बेसिक साइंस के दिव्यांशु प्रजापति और महिला वर्ग में पीजीसीए की शीतल ने प्रथम स्थान को प्राप्त किया। बैडमिंटन प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग में पिपराकोठी के नितिन सिंह गहरवार एवं महिला वर्ग में बेसिक साइंस की मनीषा भारती ने प्रथम स्थान को प्राप्त किया। शॉटपुट पुरुष वर्ग में टीसीए ढोली के पंकज कुमार एवं महिला वर्ग में टीसीए ढोली की संध्या कुमारी ने प्रथम स्थान को प्राप्त किया हैं। वॉलीबॉल प्रतियोगिता में टीसीए ढोली की टीम ने बाजी मारी जबकि उद्यानिकी महाविद्यालय पिपराकोठी की टीम ने दूसरे स्थान को प्राप्त किया।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 30 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्राय: साफ तथा मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान में 4 से 5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 28 मार्च | 33.0 | 15.0 |
| 29 मार्च | 33.8 | 15.0 |
| दरभंगा | | |
| 28 मार्च | 33.8 | 15.0 |
| 29 मार्च | 33.8 | 16.0 |
| पटना | | |
| 28 मार्च | 34.5 | 16.6 |
| 29 मार्च | 34.5 | 16.6 |

डिग्री सेल्सियस में

**Dainik Jagran 28-03-2025**

# विश्वविद्यालय में 2.58 करोड़ की लागत से खुलेगा इनक्यूबेशन सेंटर

## उद्योग विभाग और केंद्रीय विश्वविद्यालय पूसा में हुआ करार

- गतिविधियों को बढ़ावा देने को विवि परिसर में स्थापित किया जा रहा
- मशरूम एवं केला आधारित कुकीज का भी प्रसंस्करण किया जाएगा

समझौते पर हस्ताक्षर करते विश्वविद्यालय एवं निदेशालय के पदाधिकारी • जागरण

जासं, समस्तीपुर : प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना एवं उद्योग विभाग बिहार सरकार के खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय के तत्वावधान में डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में अत्याधुनिक कामन इनक्यूबेशन सेंटर की स्थापना होगी। विवि और खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय उद्योग विभाग के बीच द्विपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किया गया। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित एवं खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय उद्योग विभाग बिहार सरकार की देख-रेख में पूसा विवि में स्थापित होने वाला यह बिहार का पहला कामन अत्याधुनिक इनक्यूबेशन सेंटर होगा। इस परियोजना पर 2.58 करोड़ की लागत आएगी। द्विपक्षीय समझौता हस्ताक्षर कार्यक्रम के दौरान उद्योग मंत्री नीतीश मिश्रा, खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय बिहार के निदेशक निखिल धनराज निप्पाणीकर, पूसा विवि के सह प्राध्यापक डा. रामदत्त, प्रगति प्रियदर्शी समेत काफी संख्या में लोग मौजूद रहे। इनक्यूबेशन सेंटर को विभिन्न खाद्य प्रसंस्करण और गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विवि परिसर में स्थापित किया जा रहा हैं। इस सेंटर में 400 मीट्रिक टन वर्ष की क्षमता से फलों और सब्जियों का प्राथमिक प्रसंस्करण, 150 मीट्रिक टन वर्ष की क्षमता से शहद का प्रसंस्करण और मशरूम एवं केला आधारित कुकीज का भी प्रसंस्करण किया जाएगा। फल, सब्जी, शहद, मशरूम आदि का प्रसंस्करण करने के अलावे इस सेंटर में छात्रों को प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। विवि के वैज्ञानिकों के अनुसार सेंटर को स्थापित करने की यह पहल बिहार राज्य में खाद्य प्रसंस्करण परिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने, उद्यम को बढ़ावा देने तथा सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों को समर्थन देने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इस सेंटर के स्थापित होने से विवि को अतिरिक्त बुनियादी ढांचा मिलेगा। इससे विश्वविद्यालय के छात्रों के प्रशिक्षण क्षमता में वृद्धि होगी। उद्योग विभाग द्वारा इस सेंटर का उपयोग खाद्य प्रसंस्करण, स्टार्टअप और योजना के लाभार्थियों को प्रशिक्षित करने के लिए किया जा सकेगा। कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि यह अत्याधुनिक सेंटर न केवल बेहतर प्रशिक्षण और विकास का अवसर प्रदान करेगा, बल्कि बिहार के खाद्य प्रसंस्करण व उद्योग को वैश्विक मानकों तक पहुंचाने में भी सहायक सिद्ध होगा। यह परियोजना बिहार में खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में एक नई दिशा और अवसर प्रदान करेगी।

**Dainik Jagran 28-03-2025**

# कृषि विवि में खुलेगा सूबे का पहला इनक्यूबेशन सेंटर

पूसा,निसं। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में राज्य का पहला अति आधुनिक इनक्यूबेशन सेंटर खुलेगा। इसके खुलने से खाद्य प्रसंस्करण गतिविधियों को बल मिलेगा। करीब 2.58 करोड़ की लागत से इस परियोजना को जमीनी स्वरूप दिया जायेगा। इसको लेकर बुधवार को राज्य सरकार के खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय( उद्योग विभाग ) एवं कृषि विवि के अधिकारी के बीच द्विपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किया गया।

जिसमें सरकार के उद्योग मंत्री नीतीश मिश्रा, खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय के निदेशक निखिल धनराज निप्पाणीकर एवं विवि के सह प्राध्यापक डॉ.रामदत्त एवं सुश्री प्रगति प्रियदर्शी ने हिस्सा लिया। डॉ.रामदत्त ने बताया कि बिहार सरकार के उद्योग विभाग के खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय के तत्वावधान एवं प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना के तहत विवि में केन्द्र खुलने की सहमति बनी है। इस सेंटर में 400 मीट्रिक टन प्रति वर्ष की क्षमता से फलों और सब्जियों का प्राथमिक प्रसंस्करण, 150 मीट्रिक टन प्रति वर्ष की क्षमता से शहद प्रसंस्करण, मशरूम एवं केला आधारित कूकीज प्रसंस्करण का कार्य होने की संभावना है।

**Hindustan 28-03-2025**

# पिपराकोठी कृषि कॉलेज की टीम बनी ओवरऑल चैंपियन

गुरुवार को तिरहुत कृषि महाविद्यालय ढोली में विजेता खिलाड़ियों के साथ अधिकारी।

**मुरौल।** तिरहुत कृषि महाविद्यालय (टीसीए) ढोली परिसर में चल रहे तीन दिवसीय इंटर कॉलेज खेल प्रतियोगिता गुरुवार को संपन्न हो गई। इसमें बेहतर प्रदर्शन करते हुए पंडित दीनदयाल उपाध्याय कृषि कॉलेज पिपराकोठी की टीम ओवरऑल चैंपियन रही।

टीसीए ढोली को बेस्ट टीम का अवॉर्ड दिया गया। महिला वर्ग में बेस्ट खिलाड़ी हरिप्रिया बेसिक साइंस कॉलेज ढोली और पुरुष वर्ग में बेस्ट खिलाड़ी एडला वेणु पीजीसीए पूसा रहे।

अंत में डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने विजेता प्रतिभागियों को ट्रॉफी और मेडल देकर पुरस्कृत किया।

**Hindustan 28-03-2025**

# तीन दिवसीय सातवां अंतर्महाविद्यालय खेल-कूद प्रतियोगिता संपन्न, टीसीए ढोली का रहा जलवा

**समस्तीपुर/पूसा (एसएनबी)।** डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय .कृषि विश्वविद्यालय के टीसीए ढोली परिसर में आयोजित तीन दिवसीय 7वें अंतर्महाविद्यालय खेल प्रतियोगिता का समारोहपूर्वक समापन हो गया। इस अवसर अपने संबोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि इस खेल प्रतियोगिता में छात्राओं ने बढ चढकर हिस्सा लिया और एक दूसरे को कडी प्रतिस्पर्धा दी है, यह सराहनीय है। उन्होंने कहा कि खेल कूद हमें जीवन में जहां नेतृत्व कौशल के साथ-साथ अनुशासन और टीम भावना के साथ मिलकर काम करने की सीख देते है। वहीं विकट परिस्थितियों में उचित निर्णय लेने की सलाहियत देते है। डॉ पाण्डेय ने कहा कि विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के हित में लगातार निर्णय ले रहा है, जिसके परिणाम अब स्पष्ट दिखाई देने लगे है। उन्होंने कहा कि छात्रों ने विश्वविद्यालय का नाम देश व विदेश में रौशन किया है। उनकी इच्छा है कि वे और बेहतर करें। इस अवसर पर उपस्थित निदेशक छात्र कल्याण डॉ रमण त्रिवेदी ने कहा कि कुलपति डॉ पांडेय विश्वविद्यालय के छात्रों के सम्यक विकास लिए लगातार प्रयासरत है। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि हमारे कुलपति ने जो

प्रतिभागियों को सम्मानित करते वीसी व अन्य।

दीक्षारंभ कोर्स शुरू किया था वो अब पूरे देश में लागू कर दिया गया है। दीक्षारंभ के दौरान छात्रों के सम्यक विकास के लिए विभिन्न क्षेत्र के विशेषज्ञों को बुलाया जाता है जो अपने आप में अनूठी पहल है।

विश्वविद्यालय के स्पोर्ट्स इंचार्ज डॉ राजेश कुमार ने बताया कि प्रतियोगिता के अंतिम दिन, 1500 मीटर दौड़ में पुरुष वर्ग में उद्यानिकी महाविद्यालय पिपरा कोठी के रोहिताश्व ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जबकि महिला वर्ग में टीसीए ढोली की करीना ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी तरह टेबल टेनिस में पुरुष वर्ग में बेसिक साइंस के दिव्यांशु प्रजापति जबकि महिला वर्ग में पीजीसीए की शीतल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। बैडमिंटन प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग में पिपरा कोठी के नितिन सिंह गहरवार ने जबकि महिला वर्ग में बेसिक साइंस की मनीषा भारती ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। शाट पुट के पुरुष वर्ग में टीसीए ढोली के पंकज कुमार ने जबकि महिला वर्ग में टीसीए ढोली के संध्या कुमारी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। वालीबॉल प्रतियोगिता में टीसीए ढोली की टीम ने बाजी मारी और उद्यानिकी महाविद्यालय पिपरा कोठी की टीम ने दूसरा स्थान प्राप्त किया।

**Rashtriya Sahara 28-3-2025**

# आसमान साफ और शुष्क रहेगा मौसम का मिजाज

**समस्तीपुर** . अगले तीन दिनों तक आसमान साफ रहेगा. मौसम का मिजाज भी शुष्क बना रहेगा. यह संभावना मौसम विभाग की ओर से जतायी गयी है. डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्र विश्वविद्यालय परिसर स्थित मौसम विभाग की ओर से जारी पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 36 से 38 डिग्री सेल्सियस के बीच बना रहेगा. जबकि न्यूनतम तापमान 21 से 24 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा. अगले दो दिनों तक तेज पछुआ हवा चलेगी. इसकी औसत रफ्तार 15 से 20 किलो मीटर प्रतिघंटे तक हो सकती है. इसके बाद हवा की रफ्तार में थोड़ी कमी दर्ज की जायेगी. बताते चलें कि शुक्रवार को अधिकतम तापमान 36.6 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया है. यह इस अवधि में रहने वाले सामान्य तापमान से 3.3 डिग्री सेल्सियस अधिक है. इसी तरह न्यूनतम तापमान 17. 6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है. यह सामान्य से 0.9 डिग्री सेल्सियस नीचे है.

प्रभात खबर
Saturday, March 29, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67e6f3d0c388d79c67ea56bb

# कृषि तकनीक का ज्ञानवर्धन कर रहे दर्जनों किसान

कृषि तकनीक का ज्ञान लेते किसान.

---

**पूसा** . डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय से कृषि ज्ञान वाहन दलसिंहसराय के किसानों को कृषि से संबंधित तकनीकी ज्ञान दिया. बेहतर उत्पादन के लिए कृषि विभाग द्वारा किसानों को विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से आधुनिक तकनीक के बारे में जानकारी दी जा रही है. ताकि कम लागत में किसान अधिक उत्पादन कर सकें. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा को चतुर्थ कृषि रोड मैप के तहत प्राप्त कृषि ज्ञान वाहन के जरिये किसानों को कृषि से जुड़ी आधुनिक तकनीकों की जानकारी दी जा रही है. वीडियो फिल्म की सहायता से फसल अवशेष प्रबंधन, पशुपालन, मुर्गीपालन, बकरीपालन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खीपालन, जैविक खेती आदि के बारे में जानकारी दी गई.

प्रभात खबर
Saturday, March 29, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67e6f3d0c388d79c67ea56a6

भास्कर 29/3/25 पेज 19

**मौसम पूर्वानुमान** • अगले दो दिनों तक 15-20 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से पछिया हवा की संभावना

# 15 वर्षों में 27 मार्च सबसे गर्म दिन, रात-दिन के तापमान में 20 डिग्री के अंतर से स्वास्थ्य पर असर

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के मौसम विभाग के अनुसार 27 मार्च 2025 का दिन पिछले 15 सालों में सबसे ज्यादा गर्म रहा। इस दिन अधिकतम तापमान सबसे अधिक 36.8 डिग्री सेल्सियस रेकार्ड किया गया। वहीं शुक्रवार को अधिकतम तापमान 36.6 डिग्री व न्यूनतम तापमान 17.6 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। मौसम वैज्ञानिक डॉ. अब्दुस सत्तार ने बताया कि फिलहाल दो दिनों तक तापमान में और बढ़ोतरी दर्ज की जाएगी। उसके बाद उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में होने वाली बारिश की संभावना को देखते हुए तापमान में कमी आएगी। उन्होंने बताया कि आने वाले दिनों में तापमान में उतार-चढ़ाव फिलहाल जारी रहेगा। बीच-बीच में लोगों को कभी-कभी हल्की ठंड का एहसास भी होगा। उन्होंने बताया कि औसतन इस साल सामान्य से कुछ ज्यादा गर्मी पड़ेगी। उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ तथा मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 36 से 38 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान 21 से 24 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है। अगले दो दिनों तक तेज रफ्तार (15-20 किलोमीटर प्रति घंटा) से पछिया हवा चल सकती है। उसके बाद हवा की रफ्तार धीमी रह सकती है। वहीं सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 70 से 80 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है।

## आगे क्या : फिलहाल दो दिनों तक तापमान में और बढ़ोतरी, उसके बाद राहत

गर्मी में गोबी लगाने के लिए खेतों में बेड बनाता किसान

*फिलहाल दो दिनों तक तापमान में और बढ़ोतरी दर्ज की जाएगी। उसके बाद उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में होने वाली बारिश की संभावना को देखते हुए तापमान में कमी आएगी। - डॉ. अब्दुस सत्तार, नोडल पदाधिकारी, मौसम विभाग, पूसा*

### पिछले 15 सालों में तापमान की स्थिति

| वर्ष- | अधि. | न्यू. |
|---|---|---|
| 2025 | 36.8 | 16.5 |
| 2024 | 32.0 | 18.8 |
| 2023 | 33.1 | 17.3 |
| 2022 | 35.0 | 16.8 |
| 2021 | 32.6 | 15.0 |
| 2020 | 34.0 | 18.5 |
| 2019 | 31.0 | 14.5 |
| 2018 | 34.2 | 15.6 |
| 2017 | 30.3 | 20.2 |
| 2016 | 35.5 | 20.9 |
| 2015 | 35.5 | 22.1 |
| 2014 | 35.1 | 17.9 |
| 2013 | 32.5 | 15.5 |
| 2012 | 35.5 | 17.4 |
| 2011 | 34.6 | 16.9 |

### किसानों के लिए वैज्ञानिक समसामयिक सुझाव

पूर्वानुमानित अवधि में मौसम की शुष्क रहने की संभावना को देखते हुए गेहूं की कटनी के कार्य को उच्च प्राथमिकता देकर संपन्न करे तथा सरसों, मसूर, चना फसलों का दौनी एवं दानो को सूखाने का कार्य करके भंडारित करें। आम में मटर के दाने के बराबर की अवस्था हो गयी है। मटर के दाने के बराबर फल हो जाने के बाद इमिडाक्लोरप्रीड (17.8 एसएल)/1 मिली दवा प्रति दो लीटर पानी में और हैक्साकोनाजोल 1 ग्राम/दो लीटर पानी या डाइनोकैप (46 ईसी) 1 मिली दवा प्रति 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़कने से मधुवा एवं चूर्णिल आसिता की उग्रता में कमी आती है। प्लेनोफिक्स नामक दवा/1 मिली प्रति 3 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से फल के गिरने में कमी आती है। ओल की बुआई करें। बुआई के लिए गजेन्द्र किस्म अनुशंसित है।

भास्कर 29/3/25 पेज 21

**कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के प्रमुख ने दी जानकारी**

# रेड बैंडेड बोरर से आम की फसल पर खतरा बढ़ा, उत्पादन कम होने की आशंका से किसान चिंतित, वैज्ञानिकों ने दी है सलाह

भास्कर न्यूज़ | पूसा

आम के छोटे टिकोले पर रेड बैंडेड बोरर कीट का हमला [illegible] भी हो सकता है। यह कीट [illegible] की फसल को भारी नु[illegible] पहुंचा सकता है।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय [illegible] विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के प्रमुख और वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने किसानों को सतर्क रहने की सलाह दी है। उन्होंने बताया कि पिछले साल समस्तीपुर, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, पश्चिम चंपारण और किशनगंज जिलों में इस कीट ने आम के बागों में भारी तबाही मचाई थी। डॉ. सिंह [illegible] कहा कि यह कीट आम के [illegible]टे फलों पर काले धब्बे बनाता [illegible] बाद में फल को अंदर से सड़ा देता है। फल पेड़ से गिर जाते हैं। यह कीट बहुत तेजी से फैलता है। समय पर प्रबंधन नहीं किया गया तो उत्पादन पूरी तरह खत्म हो सकता है। इस कीट पर सामान्य कीटनाशकों का असर नहीं होता। यह कीट पहली बार [illegible]014-15 में देखा गया था। कुछ सालों तक इसकी संख्या कम रही। लेकिन पिछले 3-4 वर्षों से इसकी संख्या काफी बढ़ गई है। अत्यधिक बारिश और नमी वाले मौसम में इसका प्रकोप और बढ़ जाता है। डॉ. सिंह ने बताया कि इस कीट की वजह से देशभर में आम उत्पादकों को 10 से 50 प्रतिशत तक नुकसान हुआ है। इंडोनेशिया, पापुआ, फिलीपींस, म्यांमार और दक्षिण-पूर्व एशिया के कई देशों में भी किसान इससे परेशान हैं।

रेड बैंडेड बोरर कीट से संक्रमित आम के टिकोले।

## उचित मात्रा में करें दवा का छिड़काव

प्रबंधन के लिए क्लोरीनट्रानिलिप्रोएल (कोरिजन) की 0.4 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। इमामेक्टिन बेंजेट की 0.4 ग्राम या डेल्टामेथ्रिन 28 ईसी की 1 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर भी छिड़काव किया जा सकता है।

इसके अलावा क्वीनलफास या क्लोरपैरिफोस की 2 एमएल मात्रा या लैम्डा साइहलोथ्रिन 5 ईसी की 1 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। यह कीट सुबह ज्यादा सक्रिय रहता है, इसलिए छिड़काव सुबह में करना बेहतर होता है।

## कीट दो सटे हुए फलों पर अधिक हमला करता है

इस कीट का लार्वा दो सटे हुए फलों पर सबसे पहले हमला करता है। शुरुआत में काले धब्बे बनते हैं। फिर फल को छेदकर अंदर से सड़ा देता है। किसान इसे रेड बैंडेड मैंगो कैटरपिलर भी कहते हैं। कुछ राज्यों में इसे आम का फल छेदक, लाल पट्टी वाला छेदक या गुठली छेदक भी कहा जाता है। यह कीट सिर्फ फलों को नुकसान पहुंचाता है। इसके प्यूपा अगले साल तक जीवित रह सकते हैं। डॉ. सिंह ने बताया कि इस कीट से बचाव के लिए सड़े और गिरे हुए फलों को बाग से बाहर निकालकर नष्ट करना जरूरी है। संभव हो तो फलों की बैगिंग करें। यह कीट टिकोले की अवस्था से लेकर पकने तक हमला करता है।

भास्कर 29/3/25 पेज 19

अच्छी खबर • कृषि विज्ञान केंद्र लादा के वैज्ञानिकों ने मैनुअल मेज सोईंग मशीन समथू एफपीओ को दी

# मेज सोईंग मशीन से मक्का-मटर की बुवाई होगी आसान 20 रुपए प्रति कट्ठा आएगी लागत, समूह को मिली मशीन

भास्कर न्यूज | समस्तीपुर

अब किसानों को कम मेहनत में मक्का, मटर और भिंडी की अधिक पैदावार मिलेगी। न ज्यादा मजदूर लगेंगे, न ही लागत बढ़ेगी। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र लादा के वैज्ञानिकों ने मैनुअल मेज सोईंग मशीन उजियारपुर प्रखंड के समथू एफपीओ को दी है। यह मशीन कस्टम हायरिंग के क्षेत्र में बदलाव लाएगी। इस मशीन को सेंट्रल इंस्टिट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग, भोपाल ने बनाया है। इसका व्यवसायीकरण वैल्युवन एग्रो मशीनरीज, थेनी तमिलनाडु ने किया है। मक्का बोने की यह मशीन पूरे खेत में बीज और उर्वरक की एक समान मात्रा छोड़ती है। बीज का उपचार भी साथ में होता है। बीज-ड्रिल मशीन के उलट, यह पौधों के बीच तय दूरी बनाए रखती है। इससे उपज बढ़ती है और महंगे बीजों की बचत होती है। इससे मात्र 20 रुपए प्रति कट्ठा में बुवाई संभव है। एक दिन में तीन एकड़ जमीन में बुवाई हो सकती है। मशीन से बुवाई करने पर पौधों की दूरी एक जैसी रहती है। इससे उत्पादन अधिक होता है। इस मशीन से दर्जनों गांवों के सैकड़ों किसान लाभ में रहेंगे।

मेज सोईंग मशीन ।

## मशीन के इस्तेमाल से किसानों को फायदा

मशीन से बुवाई करने पर बीजों की गहराई और दूरी एक जैसी रहती है।मशीन से बुवाई करने पर लाइन से लाइन और पौधों से पौधों की दूरी एक जैसी रहती है और उपज में वृद्धि होती है।समय और बीज की बचत होती है।यह मशीन बुआई के समय खुदाई, खाद डालने और मिट्टी ढकने का काम पूरा कर सकते हैं। गियरबॉक्स को चिकना किया जाना चाहिए, और इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि चेन ड्राइव और बेल्ट ड्राइव टेंशनर उपयुक्त हैं या नहीं।बन्धन बोल्ट, स्क्रू, कोटर पिन और अन्य फिक्सिंग भागों की विश्वसनीयता के लिए जाँच कर ढीले या क्षतिग्रस्त हैं, तो किसान को उन्हें समय पर बदल देना चाहिए।

## मक्का की बुवाई के लिए वर्तमान समय उपयुक्त

देर से पकने वाली मक्का की बुवाई मध्य मई से मध्य जून के बीच करनी चाहिए।शीघ्र पकने वाली मक्का की बुवाई जून के अंत तक करनी चाहिए। हाल के वर्षों में, ग्रामीण अर्थव्यवस्था स्थिर और उच्च गुणवत्ता वाले तरीके से विकसित हुई है। कृषि मशीनरी के लिए जागरूकता जरूरी है।

# उत्तर बिहार में दो दिनों तक तेज रहेगी पछिया हवा, बढ़ेगी गर्मी

संस, जागरण • पूसा : पछुआ हवा के कारण उत्तर बिहार में मौसम शुष्क बना रहेगा। दो से तीन दिनों के दौरान अधिकतम तापमान में दो से तीन डिग्री और न्यूनतम तापमान में एक से तीन डिग्री वृद्धि का पूर्वानुमान है। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का बताना है कि अगले 4 दिनों में जहां मौसम साफ रहेंगे वहीं 15 से 20 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलेगी।

38 डिग्री तक पहुंचेगा तापमान : पछुआ के कारण मौसम शुष्क बने होने के साथ यहां का अधिकतम तापमान 36 डिग्री सेल्सियस के पार चला गया है। शुक्रवार को अधिकतम तापमान 36.6 एवं न्यूनतम तापमान 17.5 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। अधिकतम तापमान 3 डिग्री सामान्य से अधिक है वहीं न्यूनतम तापमान सामान्य से एक डिग्री कम है। दो दिनों बाद हवा की रफ्तार धीमी हो सकती है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 36 से 38 डिग्री के बीच एवं न्यूनतम तापमान 21 से 24 डिग्री के बीच रहने का अनुमान है।

करें गेहूं कटनी : मौसम विभाग के द्वारा शुक्रवार को विज्ञानियों ने किसानों को मौसम शुष्क करने की संभावना को देखते हुए गेहूं की कटनी के कार्य को उच्च प्राथमिकता देकर संपन्न करने, ओल की रोपाई एवं मूंग उड़द की बुआई जल्द समाप्त करने की सलाह दी है। विगत माह बोई गई सब्जियों की फसल में आवश्यकतानुसार निकाय एवं कुड़ाई सहित सिंचाई करने को कहा गया है।

**Dainik Jagran 29-03-2025**

# गन्ना की गुणवत्तायुक्त बीज को लेकर परियोजना तैयार

पूसा,निसं। राज्य सरकार के गन्ना उद्योग विभाग के सचिव बी.कार्तिकिय धनजी एवं संयुक्त ईख आयुक्त जय प्रकाश नारायण सिंह ने डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के ईख अनुसंधान संस्थान,पूसा का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने संस्थान के गुड़ प्रसंस्करण ईकाई, प्रयोगशाला, म्यूजियम समेत अन्य स्थलो का भ्रमण कर वहां की गतिविधियों के संबंध में विस्तार से जानकारी ली।

बाद में संस्थान के निदेशक डॉ.देवेन्द्र सिंह की अध्यक्षता में अधिकारियों एवं वैज्ञानिको के बीच बैठक हुई। जिसमें राज्य के गन्ना क्षेत्र विकास के लिए आगामी योजनाओं व परियोजनाओं पर चर्चा हुई। इस दौरान वैज्ञानिको की टीम ने राज्य में गन्ना क्षेत्र के चहुंमुखी विकास पर विस्तार से चर्चा की। मौके पर गन्ना वैज्ञानिक डॉ.अनिल कुमार ने राज्य में गन्ना की उत्पादकता बढ़ोतरी के लिए गुणवत्तायुक्त बीज एवं वैज्ञानिक अनुसंशित प्रभेदो के चयन के महत्व पर विस्तार से चर्चा की। इस दौरान उन्होंने राज्य के किसानो के लिए गन्ना बीज की जरूरतो एवं उसको उपलब्ध कराने को लेकर एक 5 वर्षीय परियोजना प्रस्तुत की।

**Hindustan 29-03-2025**

# पारा 38 डिग्री तक पहुंचने की संभावना

पूसा। उत्तर बिहार के जिलों में अगले चार दिनों तक आसमान साफ व मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। इस दौरान अगले दो दिनों तक तेज रफ्तार (15-20 किमी प्रति घंटा) से पछुआ हवा चल सकती है। उसके बाद हवा की रफ्तार धीमी रह सकती है। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम विभाग ने शुक्रवार को 2 अप्रैल तक का मौसम पूर्वानुमान जारी किया है। जिसके अनुसार इस अवधि में सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 70 से 80 एवं दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है। इस दौरान अधिकतम तापमान 36 से 38 डिग्री एवं न्यूनतम 21 से 24 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है।

**Hindustan _29-03-2025**

# आसमान साफ और मौसम रहेगा शुष्क

**समस्तीपुर।** जिले के डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 29 मार्च से 02 अप्रैल, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ तथा मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 36 से 38 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान 21 से 24 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है। अगले दो दिनों तक 15-20 किलोमीटर प्रतिघंटा की तेज रफ्तार से पछिया हवा चल सकती है। उसके बाद हवा की रफ्तार धीमी रह सकती है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 70 से 80 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है।

**Rashtriya Sahara**
**29-03-2025**

भास्कर 30/3/25 पेज 22

कृषि • वैज्ञानिक तकनीक से सूरजमुखी की खेती कर प्राप्त कर सकते हैं बेहतर उपज

# सरसों की कटाई के बाद खेतों में सूरजमुखी की बुआई लाभकारी

भास्कर न्यूज़ | पूसा

बिहार के किसान सरसों की कटाई के बाद अपने खाली पड़े खेतों अविलंब सूरजमुखी के फसल की बुआई करें। सूरजमुखी की वैज्ञानिक तकनीक से खेती कर किसान अच्छा से अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। सूरजमुखी एक नगदी फसल होने के साथ-साथ तिलहनी फसल भी है। सूरजमुखी के बीज से निकलने वाला तेल स्वास्थ्य के लिए भी काफी फायदेमंद होता है। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. रवींद्र कुमार तिवारी ने दी है। उन्होंने कहा कि सूरजमुखी के फसल पर अधिक तापमान का भी कोई खास असर नहीं पड़ता है। इसकी खेती किसान खरीफ, रबी और जायद तीनों सीजन में कर सकते हैं। सूरजमुखी के दानों में लगभग 45 से 50 फीसदी तक तेल पाया जाता है। उन्होंने कहा कि हाल के वर्षों पर गौर करें तो सूरजमुखी की खेती किसानों के बीच काफी लोकप्रिय हो रही है। बाजार में तेल की बढ़ती कीमत सूरजमुखी उत्पादक किसानों को अधिक फायदा दिला सकती हैं। उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, उत्तरप्रदेश, आंधप्रदेश, हरियाणा आदि राज्यों के किसान प्रमुख रुप से सूरजमुखी की खेती बड़े पैमाने पर करते हैं।

## स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए सूरजमुखी का तेल फायदेमंद

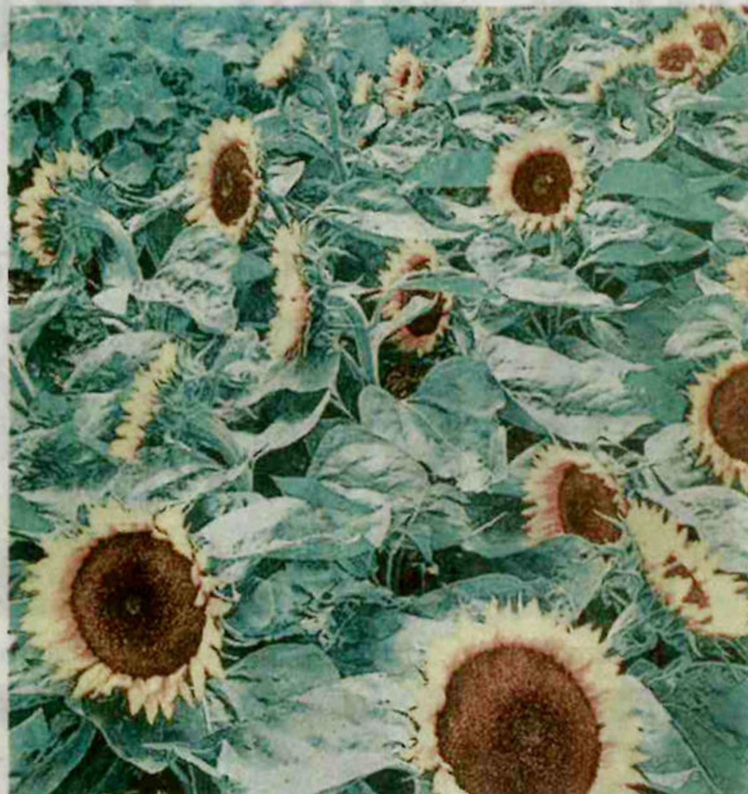

खेत लगी सूरजमुखी की फसल। फाइल फोटो

### कम खर्च में अधिक आमदनी वाली फसल

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि सूरजमुखी का बीज और इससे निकलने वाले तेल में ढ़ेर सारे औषधीय गुण पायें जाते हैं। इसमें कैल्शियम, प्रोटीन, विटामिन और कई अन्य तरह के पौष्टिक तत्व पायें जाते है। जो हमारे शरीर विभिन्न तरह के बीमारियों से बचाने का काम करता हैं। उन्होंने बताया कि इसके तेल का सेवन दिल को स्वस्थ रखने के साथ-साथ कैंसर जैसी खतरनाक बीमारियों से बचाता है। इतना ही नही इसका सेवन लीवर को ठीक रखने, हड्डियों की बीमारी से बचाने, कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित रखने आदि का भी काम करता है।

### खेतों में इतनी मात्रा में डालें उर्वरक

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि सूरजमुखी लगाने से पहले तथा खेतों को तैयार करने के दौरान किसान खेत में 7 से 8 टन प्रति हेक्टेयर की दर से सड़ी हुई गोबर की खाद एवं रासायनिक खाद जैसे 130 से 160 किलोग्राम यूरिया, 375 किलोग्राम एसएसपी व 66 किलोग्राम पोटाश के अलावे बोरॉन 10 किलो हेक्टेयर की दर से खेत में डालकर खेतों की जुताई कराकर खेत को सूरजमुखी की रोपाई के लिए तैयार कर लें। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि बोरॉन के प्रयोग से सूरजमुखी के फल में बीज सेटिंग दर की बढ़ोतरी होती है।

## सूरजमुखी लगाने के लिए किसान ऐसे करें खेत की तैयारी, होगी अधिक उपज

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि ऐसे तो सूरजमुखी की खेती किसी भी प्रकार की भूमि में की जा सकती है। जल निकास वाला खेत खासकर इसकी खेती के लिए उपयुक्त होता हैं। उन्होंने बताया कि इसकी खेती से पूर्व किसान खेतों के मिट्टी की जांच जरूर कराएं ताकि मिट्टी में जरूरत के अनुसार ही खाद व उर्वरक डाला जा सके। उन्होंने कहा कि किसान सबसे पहले विभिन्न कृषि उपकरणों की मदद से खेत की 2 से 3 बार गहरी जुताई कराएं। इसके बाद खेत को सीधी धूप लगने के लिए कुछ दिनों के लिए ऐसे ही छोड़ दें। धूप लगने के बाद एक बार पुनः रोटावेटर की मदद से खेत की जुताई करें तथा खेत में पाटा लगाकर उसे समतल कर दे। सूरजमुखी की बुआई कतार विधि से ही करना काफी अच्छा होता हैं। इसके लिए किसान एक रस्सी के सहारे खेत में लाइन पर बुवाई करें।

दैनिक जागरण 30/3/25 पेज 5

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 30 मार्च तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्राय: साफ तथा मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान में 4 से 5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 30 मार्च | 36.0 | 20.0 |
| 31 मार्च | 36.8 | 20.0 |
| | दरभंगा | |
| 30 मार्च | 36.8 | 20.0 |
| 31 मार्च | 36.8 | 20.5 |
| | पटना | |
| 30 मार्च | 37.5 | 21.6 |
| 31 मार्च | 37.5 | 21.6 |

डिग्री सेल्सियस में

भास्कर 31/3/25 पेज 16

कृषि • वैज्ञानिक तकनीक से की गई तिल की खेती किसानों के लिए लाभकारी, दी गई जानकारी

# तिल की बुवाई का समय उपयुक्त, कम लागत में होगी अधिक उपज व आमदनी

## पूसा विवि के कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों के लिए जारी किया सुझाव

भास्कर न्यूज | पूसा

बिहार के किसान अपने खाली पड़ें खेतों में तिल की बुआई अविलंब करें। वैज्ञानिक तकनीक से की गई तिल की खेती किसानों को अधिक उत्पादन और मुनाफा दोनों दिलाती है। ये जानकारी कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली की विषय वस्तु विशेषज्ञ (फसल उत्पादन) भारती उपाध्याय ने दी है। उन्होंने कहा कि तिल को तिलहन की रानी के नाम से भी जाना जाता है। तिल में प्रचुर मात्रा में तेल और प्रोटीन दोनों पाया जाता है। उन्होंने बताया कि तिल के कई प्रभेद ऐसे हैं जिसमें 40 से 50 प्रतिशत तेल की मात्रा और 18 से 25 प्रतिशत तक प्रोटीन पाया जाता है। इसके अलावे तिल में विटामिन, कैल्शियम और फास्फोरस भी काफी अच्छे मात्रा में पाए जाते हैं। उन्होंने बताया कि कई किसान तिल की खेती केवल बीज उत्पादन के लिए भी करते हैं। तिल के खल्ली का प्रयोग किसान पशुओं को खिलाने में भी करते हैं। कृषि विशेषज्ञ के अनुसार की तिल की खेती सभी प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है। खासकर वैसी भूमि जिसमें जल निकासी की उचित व्यवस्था हो तिल की खेती के लिए काफी बेहतर होती हैं। तिल के फसल की वृद्धि एवं विकास के लिए 27 से 33 डिग्री तक का तापमान काफी अच्छा माना जाता हैं। उन्होंने बताया कि तिल की अच्छी अंकुरण के लिए किसान खेत को दो से तीन बार जुताई कराकर उसे समतल कर दें। तिल की बुआई से पूर्व किसान तिल को बीज जनित रोगों से बचाने के लिए तिल के बीज को किसी भी अच्छे कवकनाशी दवा से हर हाल में उपचारित करके ही उसकी बुआई करें।

पूसा विवि में खेत में लगी तिल की फसल।

## कृष्णा, कांके, सफेद व प्रगति जैसे तिल के प्रभेद देगा अधिक उत्पादन

कृषि विशेषज्ञ ने बताया कि बिहार के किसान कृष्णा, कांके, सफेद, प्रगति आदि जैसे तिल के प्रभेद की खेती कर काफी अच्छी पैदावार प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि तिल के इन सभी प्रभेदों की परिपक्वता लगभग 90 से 100 दिन के बीच होती है। उन्होंने बताया कि ऐसे तो तिल की बुआई का उपयुक्त समय 15 फरवरी से 15 मार्च तक ही है लेकिन वैसे किसान जिनका खेत अभी खाली हुआ हैं वे अविलंब तिल की बुआई कर लें। उन्होंने बताया की एक हेक्टेयर में चार से पांच किलो तिल के बीज की जरूरत होती है। किसान एक हेक्टेयर खेत में तिल की बुआई करने से पूर्व पर्याप्त मात्रा में सड़ा हुआ गोबर और 50 किलो यूरिया, 90 किलो डाई अमोनियम फास्फेट एवं 33 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश जैसे उर्वरक खेतों में जरूर डाले। इसके अलावे तिल की बुआई से पूर्व किसान खासकर खेत तैयार करने के दौरान 20 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से गंधक का प्रयोग जरूर करें। गंधक तिल में तेल की मात्रा को बढ़ाता है। उन्होंने बताया कि तिल की खेती में औसतन 2 से 3 सिंचाई की जरूरत होती है।

दैनिक जागरण 31/3/25 पेज 3

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 2 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ तथा मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान में अभी और भी बढ़ोतरी हो सकती है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 31 मार्च | 38.0 | 22.0 |
| 01 अप्रैल | 38.2 | 22.0 |
| | दरभंगा | |
| 31 मार्च | 38.2 | 22.0 |
| 01 अप्रैल | 38.2 | 22.3 |
| | पटना | |
| 31 मार्च | 39.0 | 23.0 |
| 01 अप्रैल | 39.0 | 23.0 |

डिग्री सेल्सियस में